हरिभूमि

छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, हरियाणा व दिल्ली से एक साथ

समाचार ही नहीं, विचार भी

शोधकर्ता और लेखक अल्बर्ट काफुई वुआकू ने अपनी पुस्तक 'हिंदू गॉड्स इन वेस्ट अफ्रीका: घानियन डिवोटीज ऑफ शिवा एंड कृष्णा' में घाना के स्थानीय हिंदू श्रद्धालुओं की धार्मिक मान्यताओं और मां लक्ष्मी के प्रति उनकी आस्था का उल्लेख किया है।

They said they needed wisdom and blessings from Saraswati. Some people too said they aspired to be as rich-often stressing "rich"-as Lakshmi. Ganesh, the elephant god, and Shiva, his father, were the more common choices of adult males.



अल्बर्ट काफुई वुआकू ने लिखा है कि धन और समृद्धि की देवी लक्ष्मी युवा श्रद्धालुओं के बीच विशेष रूप से लोकप्रिय हैं। कुछ युवाओं ने तो अपनी आकांक्षा व्यक्त करते हुए कहा कि वे 'मां लक्ष्मी जितने धनी' बनना चाहते हैं। यह उल्लेख केवल एक देवी के प्रति श्रद्धा का परिचय नहीं देता, बल्कि भारतीय धार्मिक परंपराओं और देवी-देवताओं के प्रति अफ्रीका के कुछ स्थानीय समुदायों में विकसित होते सांस्कृतिक आकर्षण की झलक भी दिखाता है। इसी शोध को आधार बनाकर हरिभूमि ने अफ्रीका के सात देशों के स्थानीय मूल के लोगों से बातचीत की और वहां दीपावली के उत्सव की जमीनी तस्वीर तलाशने की कोशिश की। **इस पड़ताल में घाना, दक्षिण अफ्रीका, युगांडा, तंजानिया, केन्या, लाइबेरिया और नाइजीरिया** से ऐसी तस्वीरें उभरकर सामने आईं, जिनमें भारत का दीपोत्सव स्थानीय संस्कृति के रंगों में घुलकर एक नया रूप लेता दिखाई देता है।

रिसर्च में दर्ज हुई अफ्रीका की मां लक्ष्मी की भक्ति
हरिभूमि ने 7 देशों में तलाशी दीपोत्सव की रोशनी





घाना के हिंदू मॉनेस्ट्री ऑफ अफ्रीका से दक्षिण अफ्रीका के आश्रमों तक, अफ्रीकी मूल के पुजारी कराते हैं महालक्ष्मी पूजा

अफ्रीकी पुजारी कराते हैं महालक्ष्मी पूजन

भारत से हजारों किलोमीटर दूर अफ्रीका की धरती पर जब संस्कृत मंत्रों की गूंज के बीच हवन की अग्नि प्रज्वलित होती है, तो दृश्य किसी भारतीय मंदिर या आश्रम जैसा ही नजर आता है। फर्क बस इतना है कि यहां पूजा कराने वाले पुजारी अफ्रीकी मूल के हैं।

संस्कृत मंत्रों से गूंजते हैं आश्रम

मधुरिमा राजपाल की रिपोर्ट



उनके मुख से निकलते संस्कृत मंत्र, वैदिक विधि से संपन्न होता हवन और मां लक्ष्मी की आराधना। घाना के हिंदू मॉनेस्ट्री ऑफ अफ्रीका और दक्षिण अफ्रीका के विभिन्न आश्रमों में स्थानीय अफ्रीकी पुजारी स्वयं संस्कृत मंत्रोच्चार के साथ हवन और महालक्ष्मी पूजन कराते हैं। यहां दीपावली केवल भारतीय समुदाय का त्योहार नहीं रह गई है, बल्कि स्थानीय अफ्रीकी मूल के लोग भी इसे पूरे उत्साह और श्रद्धा के साथ मनाते हैं। घाना, दक्षिण अफ्रीका, केन्या और टोगो जैसे देशों में हिंदू धर्म और भारतीय धार्मिक परंपराओं के प्रति स्थानीय लोगों का आकर्षण दिखाई देता है। कई लोग वैदिक रीति-रिवाजों के साथ दीपोत्सव मनाते हैं और मां लक्ष्मी की आराधना करते हैं। पूजा के अवसर पर कोई साड़ी और धोती-कुर्ता जैसे भारतीय परिधानों में नजर आता है, तो कोई अपने पारंपरिक अफ्रीकी पहनावे में। लेकिन सभी के भाव एक ही सूत्र में बंधे होते हैं...मां लक्ष्मी के स्वागत, सुख-समृद्धि की कामना और दीपावली के उल्लास के सूत्र में। दक्षिण अफ्रीका के 53 वर्षीय वरिष्ठ शिक्षक थॉम्बा बताते हैं कि डरबन और जोहान्सबर्ग जैसे शहरों में, जहां भारतीय मूल के लोगों की बड़ी आबादी है, दीपावली के आयोजन में स्थानीय अफ्रीकी समुदाय भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लेता है। उनके लिए यह पर्व सामाजिक मेलजोल और एकजुटता का भी अवसर है। टेलीकॉम सेक्टर से जुड़ी युवतियां थंडी, जोला और बोंगीवे बताती हैं कि लक्ष्मी पूजा की शाम वे मिट्टी के दीये जलाती हैं, रंगोली बनाती हैं और मिठाइयां बांटती हैं।



दीपावली के ये दृश्य बताते हैं कि जब कोई परंपरा दूसरे समाज के जीवन में जगह बनाती है, तो वह केवल अपनाई नहीं जाती, बल्कि वहां की संस्कृति के रंगों से और समृद्ध भी होती है। अफ्रीका की धरती पर लक्ष्मी पूजा और दीपोत्सव इसी सांस्कृतिक मेल-मिलाप की एक खूबसूरत तस्वीर पेश कर रहे हैं।

तुलसी ममता राम सों, समता सब संसार। राग न रोष न दोष दुख, दास भए भव पार

तुलसी कहते हैं कि जिनकी श्री राम में ममता और सब संसार में समता है, जिनका किसी के प्रति राग, द्वेष, दोष और दुःख का भाव नहीं है, श्री राम के ऐसे भक्त भव सागर से पार हो चुके हैं।

कंपाला के आसमान में जगमगाती आतिशबाजी

युगांडा में भव्य दीपावली

कंपाला की शाम जब दीपों की रोशनी से सजती है और आसमान रंग-बिरंगी आतिशबाजी से जगमगा उठता है, तो यह नजारा केवल भारतीय समुदाय के लिए नहीं, बल्कि युगांडा के स्थानीय लोगों के लिए भी उत्सव का अवसर बन जाता है। यहां दीपावली भारतीय परंपराओं और अफ्रीकी लोक संस्कृति के मिलन का ऐसा रंगीन उत्सव बन चुकी है, जिसमें स्वाद, संगीत, नृत्य और दोस्ती के कई रंग एक साथ दिखाई देते हैं।

स्पेक रिसॉर्ट मुन्योन्यो में हर साल जुटते हैं हजारों स्थानीय लोग, भारतीय व्यंजनों के साथ लेते स्वाद



युगांडा की राजधानी कंपाला के प्रसिद्ध स्पेक रिसॉर्ट मुन्योन्यो में हर साल आयोजित होने वाला दीपावली फूड फेस्टिवल इस सांस्कृतिक मेल-मिलाप का बड़ा आकर्षण है। हजारों की संख्या में स्थानीय लोग इस आयोजन में पहुंचते हैं और भारतीय खानपान से लेकर सांस्कृतिक कार्यक्रमों तक, हर रंग का आनंद लेते हैं।

कंपाला में रहने वाली और वहां वोकल ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट चलाने वाली 36 वर्षीय कैटूमी बताती हैं कि स्पेक रिसॉर्ट मुन्योन्यो में आयोजित होने वाला यह फूड फेस्टिवल युगांडा में दीपावली का प्रमुख आकर्षण है। यहां समोसा, भजिया, डोसा और करी जैसे भारतीय व्यंजनों के स्टॉल सजते हैं। कुछ स्टॉलों पर स्थानीय अफ्रीकी पकवानों में भारतीय मसालों का तड़का लगाकर नया फ्यूजन स्वाद परोसा जाता है। स्थानीय लोग इन व्यंजनों का बड़े चाव से स्वाद लेते हैं। इस तरह दीपावली का उत्सव केवल भारतीय खानपान से परिचय नहीं कराता, बल्कि दो अलग-अलग पाक संस्कृतियों को एक ही थाली में मिला देता है। उत्सव का रंग केवल जायके तक सीमित नहीं रहता। आईटी प्रोफेशनल मुकासा बताते हैं कि दीपावली के अवसर पर आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रमों में युगांडा के स्थानीय कलाकार और बच्चे भारतीय गीतों तथा पारंपरिक धुनों पर नृत्य करते हैं। वे भारतीय परिधान पहनते हैं और अपने पारंपरिक अफ्रीकी लोकनृत्यों की लय को भारतीय संगीत के साथ मिलाकर एक अनूठी प्रस्तुति देते हैं। इन कार्यक्रमों में भारत और युगांडा की दोस्ती तथा सांस्कृतिक सद्भाव के रंग साफ दिखाई देते हैं। दीपावली का यह उल्लास आधिकारिक आयोजनों तक भी पहुंचता है।

युगांडा में दीपावली की यह तस्वीर बताती है कि त्योहार जब अपनी जन्मभूमि से दूर किसी दूसरे देश में पहुंचता है, तो वहां की संस्कृति से संवाद करते हुए नए रंग ग्रहण कर लेता है। कंपाला में भारतीय पकवानों का स्वाद, अफ्रीकी लोकनृत्यों की थाप और आसमान में बिखरती आतिशबाजी मिलकर एक ऐसा उत्सव रचते हैं, जिसमें सरहदें पीछे छूट जाती हैं और दोस्ती की रोशनी आगे बढ़ती है।

तंजानिया की धरती पर जब बॉलीवुड के गीतों की धुन गूंजती है और उन पर स्थानीय कलाकार अपने पारंपरिक अंदाज में थिरकने लगते हैं, तो भारतीय और अफ्रीकी संस्कृतियों का एक अनूठा संगम दिखाई देता है। दीपावली के अवसर पर यहां का दृश्य कुछ ऐसा ही होता है।

दार अस सलाम से जांजीबार तक

दीपावली की धूम

भारतीय भजनों और बॉलीवुड गीतों में रंगा तंजानिया





तंजानिया के स्थानीय लोग भारतीय त्योहारों की परंपराओं को अपने उत्सव का हिस्सा बनाते नजर आते हैं। यहां दीपावली मुख्य रूप से भारतीय मूल के समुदाय द्वारा मनाई जाती है, लेकिन इसकी रोशनी और उल्लास स्थानीय अफ्रीकी समाज को भी अपनी ओर आकर्षित करते हैं। 28 वर्षीय जिम ट्रेनर जुमा बताते हैं कि तंजानिया में स्थानीय तंजानियाई नागरिक भारतीय मूल के स्थानीय लोगों के साथ धूम धाम से दीपावली मनाते हैं। दीपावली के विशेष सांस्कृतिक आयोजनों में स्थानीय डांसर और कलाकार बॉलीवुड तथा भारतीय फ्यूजन गीतों पर नृत्य करते हैं। कई युवा हिंदी भजन और गीत भी गाते हैं। उनकी सुरीली आवाज और संगीत की लय उत्सव में एक अलग ही रंग भर देती है। दार अस सलाम और जांजीबार जैसे क्षेत्रों में स्थित हिंदू मंदिरों के आसपास दीपावली का उल्लास विशेष रूप से दिखाई देता है। कई स्थानीय अफ्रीकी मूल के लोग और बच्चे माथे पर तिलक लगाते हैं, पारंपरिक परिधान पहनते हैं और भजन-कीर्तन में शामिल होते हैं। हाथों में मंजीरे लेकर 'जय लक्ष्मी मां' का जाप करते हुए वे इस पर्व की धार्मिक और सांस्कृतिक परंपराओं से जुड़ते हैं। पर्यटन और आतिथ्य सत्कार क्षेत्र से जुड़ीं 30 वर्षीय रेहेमा बताती हैं कि दीपावली की शाम दार अस सलाम और स्टोन टाउन की टेंपल स्ट्रीट पर स्थित घरों को दीयों, मोमबत्तियों और रंग-बिरंगी लाइटों से सजाया जाता है। इन जगमगाते घरों को देखने के लिए स्थानीय लोग भी पहुंचते हैं और उत्सव का हिस्सा बनते हैं।



तंजानिया में दीपावली की यह तस्वीर बताती है कि भारतीय त्योहारों की खुशियां किस तरह स्थानीय संस्कृति के साथ घुल-मिलकर नए रंग रच रही हैं। कहीं हिंदी भजन की स्वर-लहरियां हैं, कहीं बॉलीवुड की धुनों पर थिरकते कदम और कहीं दीयों की रोशनी में जगमगाती गलियां। सात समंदर पार दीपावली अब केवल एक समुदाय का पर्व नहीं, बल्कि अलग-अलग संस्कृतियों को करीब लाने वाला उत्सव बनती दिखाई देती है।

दैहिक, दैविक भौतिक तापा। राम राज नहिं काहुहि ब्यापा।।
सब नर करहिं परस्पर प्रीती। चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीती।।

राम-राज यानी आदर्श शासन। त्रेता युग में श्रीराम का शासन इसकी मिसाल रहा। प्रेम, करुणा, सद्भाव के साथ न्याय का राज चला। युग बदले और राजकाज का तौर तरीका भी बदलते गया। कालखंड के चौथे भाग कलयुग में राम राज की कल्पना मुश्किल लगती है, लेकिन देश में ऐसे दर्जनों गांव हैं, जहां आज भी राम-राज जैसे हालात हैं। छग में एक गांव तो ऐसा है, जहां 100 बरस से कोई अपराध नहीं हुआ, यह महज बानगी है। मदिरा सेवन से परहेज, रोजाना रामधुन, अपराध से विमुख ऐसे गांवों को हरिभूमि ने इस बार टटोला। ग्रामीणों से बात की और सिस्टम को समझा।

दीपावली का अर्थ है अंधकार से उजाले की ओर बढ़ना। भारत में घर-आंगन में दीप जलाकर मनाया जाने वाला यह पर्व घाना में एक अलग ही अर्थ के साथ दिखाई देता है। यहां दीपावली के अवसर पर भारतीय समुदाय के लोग उन दूरदराज के गांवों तक रोशनी पहुंचाने की पहल करते हैं, जहां अब तक बिजली नहीं पहुंची है। सोलर स्ट्रीट लाइटों के जरिए गांवों की गलियों को रोशन करने की यह कोशिश दीपोत्सव के मूल भाव को सामाजिक सरोकार से जोड़ती है। दूसरी ओर, राजधानी अकरा में भारतीय उच्चायोग के दीपावली उत्सव और मेले में स्थानीय घाना के लोग बड़ी संख्या में पहुंचते हैं। वे भारतीय व्यंजनों का स्वाद लेते हैं, सांस्कृतिक प्रस्तुतियों का आनंद उठाते हैं और भारतीय परंपराओं को करीब से जानने का अवसर पाते हैं।

घाना और केन्या

घाना में दीपावली पर सोलर लाइटों से रोशन होते हैं अंधेरे गांव, अकरा के उत्सवों में जुटते हैं लोग

दीपावली उत्सव और मेले में घाना के कलाकारों की प्रस्तुति, केन्या में घरों की सफाई और सजावट कर मां लक्ष्मी का स्वागत करते हैं श्रद्धालु

पेट्रोलियम इंजीनियर 43 वर्षीय कोफी बताते हैं कि अकरा में भारतीय उच्चायोग द्वारा आयोजित दीपावली उत्सवों और मेले में स्थानीय लोगों की अच्छी भागीदारी रहती है। घाना के प्रसिद्ध स्थानीय डांस ग्रुप बॉलीवुड गीतों और भारतीय थीम पर अपनी पारंपरिक अफ्रीकी ऊर्जा के साथ शानदार प्रस्तुतियां देते हैं। भारतीय संगीत और अफ्रीकी नृत्य की यह जुगलबंदी उत्सव को एक अलग पहचान देती है। घाना के बड़े होटलों और क्लबों में भी दीपावली नाइट्स आयोजित होती हैं, जहां भारतीय समोसे के साथ घाना का प्रसिद्ध व्यंजन 'जोलोफ राइस' परोसा जाता है। एक ही आयोजन में दो देशों के स्वाद और संस्कृतियां घुल-मिल जाते हैं।

कोको किसान और प्रबंधक अदजोआ बताती हैं कि हाल के वर्षों में घाना के भारतीय समुदाय ने स्थानीय लोगों और समाजसेवियों के साथ मिलकर दीपावली पर एक अनूठी पहल शुरू की है। इसके तहत उन दूरदराज के गांवों में सोलर स्ट्रीट लाइटें लगवाई जाती हैं, जहां बिजली की सुविधा नहीं है। इस पहल से गांवों की गलियों में रोशनी पहुंचती है और दीपावली का संदेश जरूरतमंद लोगों तक भी पहुंचता है। यह मानो मिट्टी के दीयों से निकलकर उजाले का किसी गांव की पूरी बस्ती तक पहुंच जाना है। घाना की तरह केन्या में भी दीपावली पर मां लक्ष्मी के स्वागत की परंपरा दिखाई देती है। सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र में काम करने वाले 32 वर्षीय जॉमो बताते हैं कि दीपावली से पहले लोग अपने घरों की अच्छी तरह साफ-सफाई करते हैं, ताकि मां लक्ष्मी का स्वागत किया जा सके। घरों को रंग-बिरंगी रंगोली, दीयों और मोमबत्तियों से सजाया जाता है। स्थानीय मंदिरों में विशेष प्रार्थनाएं, भजन और महालक्ष्मी पूजन होते हैं। मंदिरों में प्रसाद, चाय और भोजन वितरित किया जाता है। लोग नए और चमकीले पारंपरिक कपड़े पहनते हैं, एक-दूसरे को मिठाइयां और उपहार देते हैं तथा सामूहिक भोज में शामिल होते हैं। स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र से जुड़ीं किप्रोटिच बताती हैं कि केन्या में दीपावली सीमित या वैकल्पिक अवकाश की श्रेणी में आती है। इसलिए अधिकांश कार्यालय और व्यवसाय सामान्य दिनों की तरह खुले रहते हैं। इसके बावजूद भारतीय समुदाय के लोग छुट्टी लेकर या कामकाज के बाद एकत्रित होकर दीपावली मनाते हैं।





घाना और केन्या की ये तस्वीरें दीपावली के दो अलग-अलग लेकिन खूबसूरत रूप सामने लाती हैं। कहीं भारतीय और अफ्रीकी संस्कृति संगीत, नृत्य और खानपान के जरिए करीब आती हैं, तो कहीं एक दीपोत्सव किसी अंधेरे गांव की गलियों तक रोशनी पहुंचाने का माध्यम बनता है। यही दीपावली का वह उजास है, जो सीमाओं से परे जाकर उत्सव को अपनत्व और मानवीय संवेदना से जोड़ देता है।

लागोस और अबुजा के दीपावली मेलों में नाइजीरियाई बच्चों और कलाकारों की भागीदारी; भारतीय मिठाइयों, स्नैक्स और व्यंजनों का भी लेते हैं स्वाद

भारतीय गानों में अफ्रीकी बीट्स का तड़का नाइजीरिया में दीपावली पर थिरकते हैं स्थानीय

जब बॉलीवुड के गीतों पर अफ्रीकी बीट्स का तड़का लगता है और भारतीय धुनों के साथ नाइजीरियाई संगीत की लय घुलती है, तो एक ऐसा रंगीन संगम बनता है, जिसमें दो देशों की संस्कृतियां एक-दूसरे के करीब आ जाती हैं। नाइजीरिया में दीपावली के उत्सव कुछ इसी अंदाज में मनाए जाते हैं। यहां भारतीय प्रवासी समुदाय के साथ स्थानीय नाइजीरियाई नागरिक भी इस पर्व की खुशियों में शामिल होते हैं। लागोस और अबुजा जैसे शहरों में आयोजित होने वाले दीपावली मेलों और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में संगीत, नृत्य और भारतीय खानपान के जरिए दोनों संस्कृतियों का सुंदर मेल देखने को मिलता है।

27 वर्षीय डेटा साइंटिस्ट अबाबायोमी बताते हैं कि नाइजीरिया में भारतीय प्रवासियों की बड़ी आबादी रहती है, विशेषकर लागोस और अबुजा जैसे शहरों में। भारतीय समुदाय के साथ लंबे समय से बने सांस्कृतिक जुड़ाव के कारण स्थानीय नाइजीरियाई लोग भी दीपावली के आयोजनों में उत्साह से हिस्सा लेते हैं। लागोस में हर साल आयोजित होने वाला दीपावली मेला इसका प्रमुख उदाहरण है। इंडियन कल्चरल एसोसिएशन की ओर से आयोजित इन बड़े मेलों और पार्टियों में स्थानीय नागरिकों के साथ राजनेता और राजनयिक भी मेहमान के रूप में शामिल होते हैं।

इन आयोजनों में नाइजीरियाई बच्चे और स्थानीय कलाकार भारतीय बच्चों के साथ बॉलीवुड गीतों पर नृत्य करते हैं। खास बात यह है कि भारतीय गानों में अफ्रीकी बीट्स का ऐसा मेल किया जाता है कि संगीत की धुनें दोनों संस्कृतियों की पहचान बन जाती हैं। बॉलीवुड की लोकप्रिय धुनों पर अफ्रीकी लय का यह संगम उत्सव को एक अलग ही रंग देता है। यहां नृत्य केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि सांस्कृतिक मेल-मिलाप की भाषा बन जाता है। दीपावली के इन आयोजनों में खानपान भी आकर्षण का केंद्र रहता है। भारतीय संस्कृति को पसंद करने वाले स्थानीय नाइजीरियाई लोग भारतीय मिठाइयों, स्नैक्स और पारंपरिक व्यंजनों का स्वाद लेते हैं। इस तरह दीपावली उनके लिए भारत की परंपराओं, स्वाद और उत्सवधर्मिता को करीब से जानने का अवसर बन जाती है।



जा पर कृपा राम की होई। ता पर कृपा करहिं सब कोई॥
जिनके कपट, दम्भ नहिं माया। तिनके हृदय बसहु रघुराया॥

जिन पर राम की कृपा होती है, उन्हें कोई सांसारिक दुःख छू तक नहीं सकता। परमात्मा जिस पर कृपा करते है उस पर तो सभी की कृपा अपने आप होने लगती है । और जिनके अंदर कपट, दम्भ (पाखंड) और माया नहीं होती, उन्हीं के हृदय में रघुपति बसते हैं अर्थात उन्हीं पर प्रभु की कृपा होती है।

नाइजीरिया



नाइजीरिया में दीपावली की यह तस्वीर बताती है कि संस्कृति का संवाद कई बार संगीत की एक धुन, नृत्य के एक कदम और मिठाई के एक स्वाद से शुरू होता है। भारतीय गीतों में घुलती अफ्रीकी बीट्स इस बात का सुंदर उदाहरण हैं कि अलग-अलग देशों की परंपराएं जब मिलती हैं, तो उत्सव के नए रंग जन्म लेते हैं।

सोइ जानइ जेहि देहु जनाई। जानत तुम्हहि तुम्हइ होइ जाई॥
तुम्हरिहि कृपाँ तुम्हहि रघुनंदन। जानहिं भगत भगत उर चंदन॥

हे प्रभु! आपको वही जान पाता है जिसे आप जाना देते हैं, और जो आपको जान लेता है, वह आपका ही स्वरूप बन जाता है, अतः हे रघुनंदन! भक्तों के हृदय को शीतल करने वाले चंदन! आपकी कृपा से ही भक्त आपको जान पाते हैं।

विदेशों में बसे भारतीय उत्साह के साथ मनाते हैं दिवाली, भाई-दूज, छठ पूजा आदि का त्योहार

विदेशों में भारतीय त्योहारों की गूंज सुनाई देती है तो लगता है मानो 'दूरी बस नक्शे पर है, दिल तो अब भी भारत में धड़कता है









विकास चौबे ⏭ बिलासपुर

भारत अपनी विविध संस्कृति, परंपराओं और त्योहारों के लिए विश्वभर में प्रसिद्ध है। चाहे व्यक्ति कहीं भी चला जाए, भारतीयता और अपने त्योहारों की खुशबू हमेशा उसके दिल में रहती है। यही कारण है कि विदेशों में बसे भारतीय हर साल दिवाली, भाई-दूज, होली या छठ पूजा जैसे त्योहारों को उतने ही धूमधाम से मनाते हैं जितना भारत में। अमेरिका, यूके के साथ ही भारत से बाहर सबसे अधिक भारतीय मूल के लोग संयुक्त अरब अमीरात , कनाडा, ऑस्ट्रेलिया, सिंगापुर, मलेशिया, फिजी, मॉरिशस, दक्षिण अफ्रीका और त्रिनिदाद एंड टोबैगो में रहते हैं और दिवाली मनाते हैं। यहां के भारतीय बताते हैं कि यह पर्व न केवल धार्मिक महत्व रखते हैं बल्कि परिवार और समुदाय को जोड़ने का माध्यम भी बनते हैं। दिवाली विदेशों में स्थानीय संस्कृति का भी हिस्सा बनती जा रही है। भारतीय कहते हैं कि विदेशों की गलियों में जब भारतीय त्योहारों की गूंज सुनाई देती है तो लगता है मानो 'दूरी बस नक्शे पर है, दिल तो अब भी भारत में धड़कता है।

कनाडा में लक्ष्मी पूजा, प्रार्थना और सांस्कृतिक प्रस्तुतियां

बिलासपुर निवासी विकास ठाकुर कनाडा के कैलगरी शहर में रहते हैं। वे टीसीएस कंपनी में मैनेजमेंट हेड हैं। विकास बताते हैं कि त्योहारों की बात हो और भारतीय उसमें शामिल न हों, ऐसा कैसे हो सकता है। चाहे सात समंदर पार ही क्यों न हो, भारतीय हर त्योहार को पूरे दिल से मनाते हैं। टोरंटो, वैंकूवर, कैलगरी और मॉन्ट्रियल जैसे बड़े शहरों में मंदिर, सांस्कृतिक संस्थाएँ और स्थानीय समुदाय मिलकर इस पर्व को मनाते हैं। वे बताते हैं कि कनाडा के प्रमुख शहरों की सड़कों पर विशेष दिवाली मेलों का आयोजन होता है, जहाँ लोग पारंपरिक भारतीय परिधान पहनते हैं, दीये जलाते हैं, आतिशबाजी करते हैं और मिठाइयों का आनंद लेते हैं। कनाडाई संसद (पार्लियामेंट हिल) सहित विभिन्न सरकारी और सामाजिक मंचों पर भारतीय मूल के सांसदों और समुदाय के लोगों द्वारा दिवाली मिलन समारोह और पार्टियाँ आयोजित की जाती हैं।

यूके और आस्ट्रेलिया में भी दिवाली की मचती है धूम

यूनाइटेड किंगडम में तो भारतीय मूल के लोग बड़ी संख्या में रहते हैं। विशेषकर लंदन, लीसेस्टर, मैनचेस्टर और बर्मिंघम जैसे शहरों में। यहाँ दिवाली का उत्सव बड़े पैमाने पर सार्वजनिक रूप से मनाया जाता है। लीसेस्टर सिटी की दिवाली लाइटिंग दुनिया में भारत के बाहर सबसे बड़ी दिवाली सेलिब्रेशन मानी जाती है। सड़कें रंग-बिरंगी लाइटों से जगमगाती हैं, भारतीय संगीत गूंजता है, और हजारों स्थानीय ब्रिटिश नागरिक भी इस उत्सव में शामिल होते हैं। लंदन में रहने वाले बिलासपुर के जयप्रकाश बताते हैं कि यहां के ट्राफलगर स्क्वायर में आयोजित " दिवाली आन द स्केवयर " इवेंट में भारतीय नृत्य, भोजन, योग और आयुर्वेद संस्कृति को प्रदर्शित किया जाता है। आस्ट्रेलिया निवासी तान्या सिंह बताती हैं कि भारतीय मूल के लोग ब्रिटेन के बाद ऑस्ट्रेलिया का दूसरा सबसे बड़ा प्रवासी समुदाय हैं। सिडनी, मेलबर्न, ब्रिसबेन, पर्थ और कैनबरा जैसे प्रमुख शहरों में इसे व्यापक स्तर पर मनाया जाता है। विभिन्न भारतीय संगठन, सांस्कृतिक क्लब और स्थानीय परिषदें मिलकर बड़े पैमाने पर मेलों, संगीत, नृत्य और आतिशबाजी का आयोजन करती हैं।

बिनु पद चलइ सुनइ बिनु काना। कर बिनु करम करइ बिधि नाना॥
आनन रहित सकल रस भोगी। बिनु बानी बकता बड़ जोगी॥

जो (परमात्मा) बिना पैरों के चलता है, बिना कानों के सुनता है बिना हाथों के नाना प्रकार के कर्म करता है मुख के बिना ही जगत के सारे रसों का आनंद लेता है, और बिना वाणी के सबसे सर्वश्रेष्ठ वक्ता है। हे पार्वती जिनका नाम लेकर मरते हुए प्राणी भी मोक्ष प्राप्त कर लेते हैं, वह प्रभु रघुश्रेष्ठ और चराचर जगत के स्वामी श्री राम सभी के हृदय की बात जानने वाले हैं।

अफ्रीका के देश लाइबेरिया में दीपावली का उत्सव भारतीय संस्कृति के रंगों और मानवीय संवेदना के मेल से खास बन जाता है। राजधानी मोनरोविया में भारतीय दूतावास की ओर से आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रमों में जब रामायण के प्रसंगों का मंचन होता है, गरबा की थाप गूंजती है और भारत-लाइबेरिया फ्यूजन संगीत की स्वर-लहरियां बिखरती हैं, तो स्थानीय मेहमान भी इस उत्सव के रंग में रंग जाते हैं। यहां दीपावली केवल भारतीय समुदाय तक सीमित नहीं रहती।

घाना और केन्या

दीपावली समारोह में भारत-लाइबेरिया फ्यूजन संगीत की प्रस्तुति; अनाथालयों, कैदियों और जरूरतमंदों तक पहुंचाते हैं भोजन और मिठाइयां

मोनरोविया में रामायण का मंचन, गरबा की थाप पर झूमते हैं लाइबेरियाई मेहमान

लाइबेरिया के स्थानीय नागरिक, सरकारी अधिकारी और राजनयिक भारत के मित्रों के रूप में आमंत्रित किए जाते हैं। वे भारतीय संस्कृति, परंपराओं और खान-पान से रूबरू होते हैं और इस उत्सव का हिस्सा बनते हैं।

खनन और रबर उत्पादन से जुड़े 42 वर्षीय इमैनुएल बताते हैं कि मोनरोविया में भारतीय दूतावास दीपावली के अवसर पर विशेष सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित करता है। इनमें रामायण नाटक का मंचन, गरबा नृत्य और भारत-लाइबेरिया फ्यूजन संगीत की प्रस्तुतियां प्रमुख आकर्षण होती हैं। इन आयोजनों में लाइबेरिया के स्थानीय नागरिकों, सरकारी अधिकारियों और राजनयिकों को आमंत्रित किया जाता है। भारतीय परंपराओं की झलक, रंग-बिरंगे परिधान, संगीत और खान-पान के बीच स्थानीय मेहमान भी पूरे उत्साह से दीपावली की खुशियों में सहभागी बनते हैं। इस उत्सव का एक मानवीय पक्ष भी है। लाइबेरिया के प्रमुख भारतीय व्यवसायी और संगठन दीपावली के अवसर पर स्थानीय अनाथालयों, कैदियों और जरूरतमंदों को भोजन तथा मिठाइयां वितरित करते हैं। इस पहल के जरिए त्योहार की खुशियां उन लोगों तक पहुंचाने की कोशिश की जाती है, जिन्हें अक्सर ऐसे उत्सवों की रौनक से दूर रहना पड़ता है। दीपावली की मिठास इस तरह केवल घरों और आयोजनों तक नहीं, बल्कि जरूरतमंदों के जीवन तक पहुंचती है। लाइबेरिया का अपना राष्ट्रीय त्योहार थैंक्सगिविंग डे भी कई बार दीपावली के आसपास पड़ता है। ऐसे अवसरों पर दोनों समुदायों के बीच उत्सव और मेल-मिलाप का माहौल और गहरा हो जाता है। अलग-अलग परंपराओं के बावजूद खुशियां बांटने का भाव दोनों को एक सूत्र में जोड़ता है।



लाइबेरिया में दीपावली की यह तस्वीर बताती है कि त्योहारों की असली रोशनी केवल दीप जलाने में नहीं, बल्कि दूसरों के जीवन में खुशियां बांटने में भी है। मोनरोविया में रामायण, गरबा और संगीत के सुरों के साथ जब सेवा और सद्भाव का भाव जुड़ता है, तो दीपोत्सव सरहदों से परे मानवीय रिश्तों का उत्सव बन जाता है।

अब कछु नाथ न चाहिअ मोरें। दीन दयाल अनुग्रह तोरें॥
फिरती बार मोहि जो देबा। सो प्रसादु मैं सिर धरि लेबा॥

जब प्रभु श्री राम केवट को उतराई देते हैं तब केवट हाथ जोड़कर प्रभु से कहता है: हे नाथ, आज मैंने क्या नहीं पाया, आपकी कृपा से मेरे सारे दोष, दुख समाप्त हो गये। हे दीनदयाल, अब मुझे कुछ नहीं चाहिए, लौटते समय आप जो कुछ भी देंगे मैं उसे प्रसाद समझ सिर चढ़ा लूंगा।

अमेरिका में कड़ाके की ठंड और बर्फबारी के बीच भारतीय परिवार में मनाते हैं दीपावली

भारत में दीपावली का त्योहार रोशनी, खुशियों और उल्लास के साथ मनाया जाता है, लेकिन जब यही त्योहार सात समंदर पार अमेरिका के मिनेसोटा राज्य में बर्फीली ठंड के बीच मनाया जाता है, तो इसका नजारा और भी खास हो जाता है। नवंबर के महीने में जहां मिनेसोटा में तापमान तेजी से गिरने लगता है और बर्फबारी की संभावना बनी रहती है तब भारतीय समुदाय दीपों की रोशनी और पारंपरिक उत्साह से ठंड के इस माहौल को खुशियों की गर्माहट से भर देता है।

अमेरिका/मिनेसोटा

बर्फीली वादियों में दीपों की जगमगाहट, भारतीय संस्कृति के रंगों से रोशन हुआ मिनेसोटा

सचिन अग्रहरि ⏭ राजनांदगांव

मिनेसोटा में रह रही मुंबई की लक्ष्मी वैश्य का कहना है कि यहां भारतीय परिवारों के लिए दीपावली केवल धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि अपनी जड़ों, संस्कृति और परंपराओं से जुड़े रहने का अवसर भी है। भारत से हजारों मील दूर होने के बावजूद यहां दीपावली की तैयारियां किसी भारतीय शहर या कस्बे से कम नहीं होतीं। कई दिन पहले से घरों की साफ-सफाई, रंग-बिरंगी रोशनी, फूलों की मालाओं और पारंपरिक सजावट का सिलसिला शुरू हो जाता है। घरों में आकर्षक पूजा स्थल तैयार किए जाते हैं, जहां विधि-विधान से भगवान गणेश और माता लक्ष्मी की पूजा-अर्चना की जाती है।



साड़ी के ऊपर जैकेट, कुर्ते के साथ विंटर जैकेट

लक्ष्मी कहती हैं कि मिनेसोटा की दीपावली की सबसे दिलचस्प तस्वीर भारतीय पारंपरिक परिधानों और वहां के मौसम के मेल में दिखाई देती है। महिलाएं साड़ी और पारंपरिक परिधानों में सजती हैं, तो पुरुष कुर्ता-पायजामा पहनकर उत्सव में शामिल होते हैं। लेकिन घर से बाहर निकलते ही कड़ाके की ठंड से बचने के लिए इन परिधानों के ऊपर गर्म जैकेट पहनना भी जरूरी हो जाता है। साड़ी के ऊपर विंटर जैकेट और कुर्ता-पायजामा के साथ गर्म कपड़ों का यह मेल भारतीय परंपरा और अमेरिकी मौसम की अनूठी तस्वीर पेश करता है।





सामूहिक दीपावली पूजा

पिछले दो वर्षों में भी भारतीय परिवारों ने यहां सामूहिक रूप से भव्य दीपावली पूजा का आयोजन किया। पूजा के बाद भजन-कीर्तन और सामूहिक प्रार्थना से वातावरण भक्तिमय हो उठता है। एक ओर बाहर ठंडी हवाएं और बर्फीला मौसम रहता है, तो दूसरी ओर घरों के भीतर दीपों की रोशनी, भजनों की गूंज और परिवारों का मिलन भारतीय त्योहारों की आत्मीयता का अहसास कराता है।

आतिशबाजी से रोशन होता आसमान

लक्ष्मी वैश्य का कहना है कि दीपावली की खुशियां केवल घरों तक सीमित नहीं रहतीं। निर्धारित स्थानों पर आतिशबाजी का आनंद लेने के साथ भारतीय परिवार स्थानीय स्तर पर आयोजित आधिकारिक फायरवर्क्स शो में भी शामिल होते हैं। रात के अंधेरे में आसमान रंग-बिरंगी रोशनी से जगमगा उठता है। बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक हर कोई इस नजारे का आनंद लेता है। भारतीय दीपावली की परंपरा और अमेरिका की आयोजन संस्कृति का यह मेल उत्सव को अलग पहचान देता है।

रोशनी, रंगोली, मिठाइयों और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ मनाया जाता है दीपावली का पर्व



ऑस्ट्रेलिया में दिवाली की धूम, सात समंदर पार भी जगमगाती भारतीय संस्कृति



भारत के कोने-कोने में दीपावली पर्व की खुशियां मनाई ही जाती है। बात यदि सात समुंदर पार 7809 किमी दूर ऑस्ट्रेलिया की करें तो वहां भी दिवाली का त्यौहार पूरे उत्साह, उमंग और पारंपरिक रीति-रिवाजों के साथ मनाया जाता है। रोशनी का यह पर्व न केवल भारतीय समुदाय को अपनी संस्कृति और परंपराओं से जोड़े रखता है, बल्कि ऑस्ट्रेलिया की बहुसांस्कृतिक पहचान को भी एक नई चमक प्रदान करता है। दिवाली के अवसर पर यहां रहने वाले भारतीय परिवार अपने घरों को रंग-बिरंगी झालरों, दीयों, फूलों और सुंदर रंगोलियों से सजाते हैं।

उत्कर्ष शर्मा ⏭ राजिम

पारंपरिक भारतीय परिधान पहनकर परिवार के सदस्य भगवान श्री गणेश और माता लक्ष्मी की पूजा-अर्चना कर सुख, समृद्धि और खुशहाली की कामना करते हैं। घरों में मिठाइयां और स्वादिष्ट भारतीय व्यंजन बनाए जाते हैं। मित्रों और रिश्तेदारों के साथ मिलकर खुशियां बांटने की परंपरा यहां भी उसी आत्मीयता के साथ निभाई जाती है। राजिम की योषिता शर्मा की ननंद ऋचा शर्मा 12 वर्षों से सिडनी में हैं। हरिभूमि से चर्चा करते हुए उन्होंने बताया कि यहां के ओपेरा हाउस में दीपावली का पर्व मनाते हैं। हालांकि भारत जैसे यहां दीपावली में बाजार नहीं सजता, मिटटी का दीया नहीं मिलता लेकिन जितने भी भारतीय वहां निवास करते हैं, वे



दीप जलाकर मां लक्ष्मी की धूमधाम से विधिविधान से पूजा करते हैं। ऑस्ट्रेलिया के प्रमुख शहर सिडनी, मेलबर्न, ब्रिस्बेन, पर्थ और एडिलेड में दिवाली के अवसर पर भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम और मेले का आयोजन किया जाता है। विशेष रूप से सिडनी के परामट्टा और आसपास के क्षेत्रों में दिवाली उत्सव की अलग ही रौनक देखने को मिलती है।

नई पीढ़ी को अपनी जड़ों से जोड़ने का अवसर

विदेश में रहने वाले भारतीय परिवारों के लिए दिवाली केवल एक त्योहार नहीं, बल्कि अपनी सांस्कृतिक विरासत को अगली पीढ़ी तक पहुंचाने का महत्वपूर्ण अवसर भी है। ऑस्ट्रेलिया में जन्मे और पले-बढ़े भारतीय मूल के बच्चे दिवाली के माध्यम से भारतीय परंपराओं, धार्मिक मान्यताओं और पारिवारिक मूल्यों को समझते हैं।कई परिवार बच्चों के साथ मिलकर रंगोली बनाते हैं, घर सजाते हैं और उन्हें भगवान राम के अयोध्या लौटने तथा बुराई पर अच्छाई की विजय से जुड़ी कथाएं सुनाते हैं।



ऑस्ट्रेलिया

परंपराएं वही, बस देश बदल गया: भारत की तरह ऑस्ट्रेलिया में दिवाली पर हर जगह सार्वजनिक अवकाश नहीं होता। इसलिए कई परिवार अपने कामकाज और बच्चों की पढ़ाई के बीच समय निकालकर शाम को पूजा और पारिवारिक समारोह आयोजित करते हैं। सप्ताहांत पर सामूहिक दिवाली मिलन और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन भी किया जाता है। भले ही भारत जैसी गलियों की चहल-पहल और हर ओर पटाखों की गूंज यहां देखने को न मिले, लेकिन दिवाली की खुशियाँ और अपनापन बिल्कुल वैसा ही महसूस होता है। दिवाली का वास्तविक संदेश अंधकार पर प्रकाश, बुराई पर अच्छाई और निराशा पर आशा की विजय है। ऑस्ट्रेलिया में मनाया जाने वाला यह पर्व इस बात का सुंदर उदाहरण है कि भौगोलिक दूरियाँ चाहे कितनी भी हों, संस्कृति, परंपराएँ और त्योहार लोगों को अपनी जड़ों से हमेशा जोड़े रखते हैं।

बिनु सत्संग विवेक न होई। राम कृपा बिनु सुलभ न सोई॥
सठ सुधरहिं सत्संगति पाई। पारस परस कुघात सुहाई॥

सत्संग के बिना विवेक नहीं होता और राम जी की कृपा के बिना वह सत्संग नहीं मिलता, सत्संगति आनंद और कल्याण की जड़ है। दुष्ट भी सत्संगति पाकर सुधर जाते हैं जैसे पारस के स्पर्श से लोहा सुंदर सोना बन जाता है।

डोंगरगांव के मटिया वार्ड में जन्मीं और सरस्वती शिशु मंदिर की छात्रा रहीं सोनम साहू की कहानी

दुबई की ज़मीं पर राम की धरा सा एहसास सात समंदर पार भी धड़कता है भारतीय दिल



धन्यकुमार जैन ⏭ राजनांदगांव

संस्कृति, कला और परंपराओं के बिल्कुल अलग होने के बावजूद जब दिल अपनी जड़ों से जुड़ा हो, तो सात समंदर पार भी पराएपन का एहसास नहीं होता। संयुक्त अरब अमीरात के दुबई शहर में जब दीवाली की जगमगाहट बिखरती है तो ऐसा लगता है मानो राम की पवित्र धरा का उजाला सीधा अरब के मरुस्थल तक पहुंच गया हो।

डोंगरगांव के मटिया वार्ड में जन्मीं और सरस्वती शिशु मंदिर से प्राथमिक शिक्षा पूरी करने वाली सोनम साहू की कहानी कुछ ऐसी ही है। शिक्षक ढाल सिंह साहू की बेटी सोनम का विवाह 2016 में रायपुर निवासी दिलीप साहू के साथ हुआ, जो दुबई में सॉफ्टवेयर इंजीनियर के पद पर कार्यरत हैं। शादी के बाद से ही सोनम दुबई के अल नाहदा इलाके में रह रही हैं। अल नाहदा एक ऐसा इलाका है जहां विभिन्न धर्मों, संप्रदायों और देशों के नागरिक रहते हैं। सोनम बताती हैं कि भले ही भाषा और संस्कृति अलग है, लेकिन वहां रहते हुए कभी यह महसूस ही नहीं हुआ कि वह जन्मभूमि से दूर है।

बाजार में भारत सी रौनक

दुबई के सुपर मार्केट्स और मॉल में त्योहारों के दौरान ठीक वही पूजा सामग्री, दीपक, सजावटी सामान और मिठाइयां मिलती हैं जो भारत के बाजारों में उपलब्ध होती हैं। सोनम का कहना है कि दीवाली पूजा के लिए फल, फूल, आम के पत्ते से लेकर मिट्टी के दीये तक आसानी से मिल जाते हैं। वह बताती है कि भारत की तुलना में वहां चीजें थोड़ी महंगी जरूर होती हैं, लेकिन उनकी क्वालिटी और स्वच्छता पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

बर दुबई की सामूहिक दीवाली

हाल ही में मायके आईं सोनम साहू ने दुबई की दीवाली का अनुभव साझा करते हुए बताया कि बर दुबई में दिवाली पर बड़ा सामूहिक आयोजन होता है। इस आयोजन में अलग-अलग देशों और पृष्ठभूमियों के लोग एक जगह एकत्रित होते हैं। वहां न कोई ऊँच-नीच का भेद होता है और न ही किसी प्रकार की परायेपन की भावना। माहौल इतना आत्मीय होता है कि लगता ही नहीं कि लोग विदेश में हैं और ऐसा लगता है कि अपने ही घर-आँगन में अपनों के बीच त्यौहार मना रहे हैं।

जड़ों से जुड़ने की मिसाल

मटिया की गलियों से निकलकर दुबई जैसे आधुनिक वैश्विक शहर में बसी सोनम साहू की यह कहानी साबित करती है कि इंसान चाहे दुनिया के किसी भी कोने में चला जाए, भारत के संस्कार, परंपरा और त्योहारों की मिठास हमेशा उसके साथ रहती है। दुबई का बहु सांस्कृतिक माहौल और भारतीय समुदाय की एकजुटता मिलकर सात समंदर पार भी घर जैसा एहसास कायम रखती है।



हरि अनंत हरि कथा अनंता। कहहि सुनहि बहुबिधि सब संता॥
रामचंद्र के चरित सुहाए। कलप कोटि लगि जाहि न गाए॥

हरि अनंत हैं (उनका कोई पार नहीं पा सकता) और उनकी कथा भी अनंत है। सब संत लोग उसे बहुत प्रकार से कहते-सुनते हैं। रामचंद्र के सुंदर चरित्र करोड़ों कल्पों में भी गाए नहीं जा सकते।

अमेरिका के नॉर्थ कैरोलाइना के सबसे बड़े शहर शार्लेट में रह रहे धमतरी के प्रवासी छत्तीसगढ़ियों ने अपनी माटी की खुशबू और सांस्कृतिक परंपराओं को जीवंत रखते हुए दीपावली मिलन समारोह - 2026 धूमधाम से मनाया। उत्तर अमेरिका छत्तीसगढ़ संघ (नाचा) के नॉर्थ कैरोलाइना अध्याय द्वारा आयोजित इस समारोह में छत्तीसगढ़ी गीत-संगीत, रंगारंग नृत्य और पारिवारिक आत्मीयता की मनमोहक छटा देखने को मिली। हजारों किलोमीटर दूर रहने के बावजूद प्रवासी परिवारों का अपनी भाषा और संस्कृति के प्रति प्रेम आयोजन में स्पष्ट दिखाई दिया।

गीत-संगीत और लोकनृत्य से सजी शाम, नई पीढ़ी ने भी अपनी माटी की संस्कृति से जुड़ाव का दिया संदेश

अमेरिका के शार्लेट में छत्तीसगढ़ी संस्कृति की धूम दीपावली मिलन समारोह में झूमे प्रवासी परिवार

यशवंत साहू ⏭ धमतरी

समारोह की शुरुआत धमतरी निवासी आशुतोष सोनी ने अनुज शर्मा द्वारा गाए गए गीत की आकर्षक प्रस्तुति से की। इसके बाद बच्चों ने विभिन्न गीतों पर नृत्य कर दर्शकों की खूब सराहना बटोरी। लावण्या सोनी ने 'जय जोहार' गीत पर विशेष प्रस्तुति दी। बच्चों ने 'मल्हारी', 'ओ जाने जान', 'झूम ले संगवारी', 'हैप्पी दिवाली सुनो घरवाली' और 'मैं तो गया रे' जैसे गीतों पर नृत्य किया। श्रीवल्ली शर्मा, लावण्या सोनी, आर्यन यादव, आन्वी शर्मा, आन्या शर्मा, अनाइशा सिंघल, निविशा दुबे, आकाश सोनी, विष्णु शर्मा, चंद्रिका यादव, अंकुर पांडेय, शिखा शर्मा, एंजेल यादव, सुश्री कुमार, अलका सोनी एवं संगीता बिजौरा सहित 16 प्रतिभागियों ने अपनी प्रस्तुतियों से समारोह को यादगार बनाया।

गीत-संगीत और लोकनृत्य से सजी शाम, नई पीढ़ी ने भी अपनी माटी की संस्कृति से जुड़ाव का दिया संदेश



लोकप्रिय छत्तीसगढ़ी गीतों ने बांधा समां

छत्तीसगढ़ के लोकप्रिय गायक सुनील सोनी, कंचन जोशी और रैपर अंकित के गीत समारोह के प्रमुख आकर्षण रहे। 'झूम ले संगवारी' और 'मान झूम-झूम के खिल गया' जैसे गीतों पर बच्चे और अन्य प्रतिभागी उत्साह से झूमते नजर आए। कार्यक्रम की यादगार झलकियां सामाजिक माध्यमों पर भी साझा की गईं।

पदाधिकारियों और सदस्यों की रही सहभागिता

समूह तस्वीर में आशुतोष सोनी, योगेश साहू, निलेश कुमार, मंजुल बिजौरा, मनीष सिंघल, कमलेश सूर्यवंशी, गोविंद कटाकवार, गौरव चौड़ा, देवेंद्र यादव, अमित थवाइत, युवराज शर्मा, अभिनव पांडेय, आलोक शर्मा, विवेक दुबे (अध्यक्ष, नाचा-शार्लेट) तथा गणेश कर (अध्यक्ष, नाचा राष्ट्रीय संचालन मंडल) शामिल रहे। समारोह ने यह संदेश दिया कि भौगोलिक दूरियां अपनी मातृभूमि, भाषा और संस्कृति के प्रति प्रेम को कम नहीं कर सकतीं। प्रवासी छत्तीसगढ़ियों ने एकजुटता और सांस्कृतिक विरासत को सहेजने का संकल्प भी प्रदर्शित किया।

यह दिवाली खास है... बस्तर में कहीं चार दशक बाद खुशियों के पटाखे, कहीं पहली बार घरों में रोशनी

हर साल दीपावली आती है, घर सजते हैं, दीप जलते हैं और आसमान आतिशबाजी से जगमगाता है। लेकिन बस्तर के लिए इस बार की दिवाली कुछ खास है। यह उन गांवों की दिवाली है, जहां दशकों तक शाम ढलते ही सन्नाटा पसर जाता था। यह उन परिवारों की दिवाली है, जिन्होंने पहली बार अपने घरों में बिजली की रोशनी देखी है। यह उन बाजारों की दिवाली है, जहां वर्षों बाद फिर रौनक लौटी है। और यह अबूझमाड़ की उस धरती की दिवाली है, जहां कभी बारूद और गोलियों की आवाज सुनाई देती थी, वहां अब बच्चों की हंसी और पटाखों की गूंज है। नक्सलवाद के खात्मे की आधिकारिक घोषणा के बाद बस्तर पहली बार दीपावली मना रहा है। चार दशक तक हिंसा, भय और बंदिशों का सामना करने वाले इस अंचल में बदलाव की नई आहट सुनाई दे रही है। कहीं बंद पड़े हाट-बाजार फिर खुल गए हैं, कहीं इंद्रावती के जंगल पर्यटकों के स्वागत के लिए तैयार हैं और कहीं 186 गांवों के घर पहली बार बिजली से रोशन हुए हैं। इस बदलाव के बीच बस्तर का आदिवासी समाज अपनी विशिष्ट परंपरा दियारी तिहार भी पूरे उत्साह से मना रहा है। सचमुच, इस बार बस्तर में दीप केवल घरों में नहीं जले हैं, बल्कि उन उम्मीदों में भी रोशनी आई है, जिनका इंतजार यहां की पीढ़ियां करती रही हैं।

बस्तर संभाग के सातों जिले कभी नक्सलवाद से प्रभावित रहे हैं। दक्षिण बस्तर के तीनों जिलों से लेकर नारायणपुर के अबूझमाड़ तक नक्सलियों का प्रभाव था। अंदरूनी इलाकों में रहने वाले ग्रामीणों से लेकर सरकारी अमले, ठेकेदारों, व्यापारियों और पुलिस तक को खौफ के साये में काम करना पड़ता था। नक्सलियों के फरमान से कई हाट-बाजार बंद हो गए थे। सड़कों पर बारूदी सुरंगों का डर था और दिनदहाड़े हिंसक वारदातों ने सामान्य जनजीवन को प्रभावित कर रखा था।

जिन रास्तों पर था बारूदी सुरंगों का डर, वहां लौट आई बाजारों की रौनक

कोण्टा के सात हाट-बाजार फिर गुलजार, इंद्रावती टाइगर रिजर्व में भी पर्यटकों की दस्तक

सुरेश रावल ⏭ जगदलपुर

इस वर्ष 31 मार्च को केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने देश से नक्सलवाद के खात्मे की घोषणा की। इसके बाद बस्तर के अंदरूनी इलाकों में बदलाव की तस्वीर धीरे-धीरे सामने आने लगी है। लंबे समय तक बंद रहे बाजार फिर खुलने लगे हैं। जिन रास्तों पर कभी जाने से लोग डरते थे, वहां अब व्यापारी और ग्रामीण बिना पहले जैसी दहशत के आवाजाही कर रहे हैं। नक्सलवाद के साये से बाहर निकलते बस्तर में इस बार दीपावली की रौनक बाजारों तक भी पहुंची है। सुकमा जिले का कोण्टा क्षेत्र तीन राज्यों की सीमाओं से घिरा है। भौगोलिक स्थिति का लाभ उठाकर नक्सली एक राज्य में वारदात को अंजाम देने के बाद दूसरे राज्य में चले जाते थे। इस कारण यह इलाका लंबे समय तक बेहद संवेदनशील बना रहा। नक्सली फरमान के चलते अंदरूनी क्षेत्रों के कई हाट-बाजार बंद हो गए थे। अब यहां फिर से बाजारों की हलचल लौट रही है।

कोण्टा संवाददाता रफीक खान के अनुसार, इस संवेदनशील क्षेत्र के सात बाजार दोबारा शुरू हो गए हैं। इनमें डब्बाकोण्टा, बुर्कलंका, दुब्बामरका, पोटकपल्ली, मरईगुड़ा, येलमागुण्डा और मेहता गांव के बाजार शामिल हैं। बाजार शुरू होने से स्थानीय लोगों को रोजमर्रा की जरूरतों का सामान मिलने लगा है। व्यापारी भी अब इन इलाकों में आने-जाने लगे हैं। बाजारों की यह वापसी केवल कारोबार की बहाली नहीं, बल्कि ग्रामीण जीवन में लौटती सामान्य गतिविधियों का संकेत भी है।





इंद्रावती के जंगलों में पहली बार पर्यटकों की दस्तक

बस्तर में बदलाव का एक बड़ा संकेत बीजापुर जिले के इंद्रावती टाइगर रिजर्व से भी मिला है। 2,799 वर्ग किलोमीटर में फैले इस जंगल क्षेत्र में लंबे समय तक नक्सलियों का प्रभाव रहा। उनके फरमान के कारण वन विभाग के कर्मचारियों के लिए भी अंदरूनी इलाकों में जाना मुश्किल था। जंगल की प्राकृतिक संपदा और वन्यजीवों के बावजूद यह क्षेत्र आम लोगों और पर्यटकों की पहुंच से दूर रहा। इंद्रावती क्षेत्र वर्ष 1981 में राष्ट्रीय उद्यान बना और 1983 में यहां टाइगर प्रोजेक्ट शुरू हुआ। अब पहली बार आम लोग और पर्यटक खुली जिप्सी से इस जंगल क्षेत्र का भ्रमण कर सकेंगे। हाल ही में शुभारंभ के अवसर पर अधिकारी और जनप्रतिनिधि भी जंगल के भीतर पहुंचे और इसकी प्राकृतिक खूबसूरती को करीब से देखा। इस पहल से बस्तर के वन पर्यटन को नई पहचान मिलने की उम्मीद है। नक्सलवाद के कारण जिन जंगलों में वन अमले की पहुंच तक सीमित थी, वहां अब पर्यटकों के आने की राह खुलना बस्तर में बदलते माहौल की अहम तस्वीर है। इस बार यहां दीपावली की रोशनी घरों और बाजारों के साथ-साथ पर्यटन की नई संभावनाओं को भी रोशन कर रही है।

अबूझमाड़ की यह दिवाली सबसे खास

चार दशक बाद बारूद नहीं खुशियों के धमाके

शेख महीमुद्दीन ⏭ नारायणपुर

चार दशक तक नक्सलवाद के खौफ और बारूद की गंध के बीच जिंदगी गुजारने वाले अबूझमाड़ के गांवों में इस बार दीपावली का रंग कुछ अलग है। डोडरबेड़ा, कुंदला, आदेर, नेडनार, कच्चापाल, कोगे, जाटलुर, गुदाड़ी, गारपा, पोचावाड़ा, कुतुल, धुरबेड़ा, मुरनार, पांगुड़, पिडियाकोट, आदनार, मंडाली, कलमानार, कोडोली, पदमकोट, थुलथुली, हांदावाड़ा, रेकावाया, डूंगा, घमंडी, मुरूमवाड़ा, मेटानार, हिकुल, कोडोली उर्फ कस्तूरमेटा, गोमे, लंका और गोमागाल जैसे गांवों में इस बार खुशियों की रोशनी है।

कभी जिन गांवों में गोलियों और बम धमाकों की आवाज सुनाई देती थी, वहां अब दीपावली पर पटाखों, रॉकेट और आतिशबाजी की गूंज सुनाई दे रही है। नक्सलवाद के साये से बाहर निकलने के बाद ग्रामीणों में त्योहार को लेकर खासा उत्साह है। लंबे समय तक भय और बंदिशों के बीच रहने वाले लोगों के लिए यह मौका खुलकर खुशियां मनाने का है।जिस बारूद ने दशकों तक इस इलाके में दहशत का माहौल बनाए रखा, उसी



धरती पर अब पटाखों के धमाके खुशियों का संदेश दे रहे हैं। खूनी संघर्ष और विस्फोटों की जगह बच्चों की किलकारियां सुनाई दे रही हैं। घरों में दीप जल रहे हैं और गांवों में त्योहार की तैयारियां दिखाई दे रही हैं। अबूझमाड़ के लिए यह दीपावली महज रोशनी का त्योहार नहीं है। यह चार दशक के भय, बंदिशों और अनिश्चितताओं से निकलकर शांति और सामान्य जीवन की ओर बढ़ने का प्रतीक भी है। लंबे समय बाद ग्रामीणों को त्योहार खुलकर मनाने का अवसर मिल रहा है। इस बार अबूझमाड़ के आसमान में उठने वाले रॉकेट और आतिशबाजी की चमक केवल रात को रोशन नहीं करेगी, बल्कि उन उम्मीदों को भी उजाला देगी, जिनका इंतजार यहां की पीढ़ियां करती रही हैं।

बिनु सत्संग विवेक न होई। राम कृपा बिनु सुलभ न सोई।।
सठ सुधरहिं सत्संगति पाई।पारस परस कुघात सुहाई।।

बिना सत्संग के ज्ञान (विवेक) नहीं होता और वह सत्संग श्री रामजी की कृपा के बिना आसानी से नहीं मिलता। मूर्ख भी अच्छी संगति पाकर वैसे ही सुधर जाते हैं, जैसे पारस के स्पर्श से लोहा या कुघात सुधर जाता है।

कभी नक्सलवाद के साये में रहे बस्तर के अंदरूनी गांवों में अब विकास की रोशनी पहुंचने लगी है। दशकों से अंधेरे में जीवन गुजार रहे टोलावाड़ा और पुलचा गांव के घरों में पहली बार बिजली पहुंची है। इस बार यहां के ग्रामीण बिजली की रोशनी में दीपावली मनाएंगे। नक्सलमुक्त वातावरण बनने के बाद शासन-प्रशासन की विकास योजनाओं का असर अब इन दुर्गम इलाकों में भी दिखाई देने लगा है।

वर्षों से अंधेरे में जी रहे ग्रामीणों के घरों तक पहुंची बिजली, टोलावाड़ा और पुलचा के 98 घर पहली बार रोशन

रोशन हुआ घर-आंगन, 186 गांवों में इस बार असली दिवाली





महेन्द्र विश्वकर्मा ⏭ जगदलपुर

बस्तर संभाग में ऐसे 186 गांवों तक बिजली पहुंचने की जानकारी दी गई है, जहां पहले बिजली की सुविधा नहीं थी। इन गांवों के लिए बिजली केवल एक सुविधा नहीं, बल्कि लंबे समय से देखा जा रहा सपना था। टोलावाड़ा और पुलचा में बिजली पहुंचने के साथ इस बार ग्रामीणों के घर-आंगन में दीपावली का उजाला कुछ अलग होगा।

बस्तर जिले के सर्वाधिक नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में शामिल टोलावाड़ा और पुलचा गांवों में अब तक बिजली की सुविधा नहीं थी। भौगोलिक दुर्गमता और नक्सली गतिविधियों के कारण इन गांवों तक बुनियादी सुविधाएं पहुंचाना चुनौती बना हुआ था। विद्युत कंपनी की प्रोजेक्ट टीम ने गुरुवार को दोनों गांवों के 98 घरों तक बिजली पहुंचाई। इसके लिए करीब आठ किलोमीटर दूर से विद्युत लाइन बिछानी पड़ी। लंबी दूरी तक लाइन विस्तार और जरूरी कार्य पूरे करने के बाद घरों को बिजली कनेक्शन से जोड़ा गया। बिजली पहुंचने से ग्रामीणों में खुशी है। अब बच्चों को पढ़ाई के लिए अंधेरे पर निर्भर नहीं रहना पड़ेगा। घरेलू कामकाज और रोजमर्रा की जिंदगी भी आसान होगी। जिन घरों में अब तक रात का मतलब अंधेरा था, वहां अब बिजली के बल्ब रोशनी करेंगे। ग्रामीणों के लिए यह दीपावली सचमुच एक नए अनुभव के साथ आएगी।

बिजली से जीवन में नई उम्मीद

टोलावाड़ा और पुलचा में बिजली पहुंचने से ग्रामीणों के जीवन में नई उम्मीद जगी है। पुलचा निवासी महादेई नाग और सोनाधर ने बताया कि नक्सलवाद के कारण जिन गांवों तक विकास योजनाएं पहुंचने में बाधाएं आती थीं, वहां अब सड़क, बिजली और अन्य बुनियादी सुविधाओं का विस्तार संभव हो रहा है। आठ किलोमीटर लंबी विद्युत लाइन के जरिए 98 घरों में पहुंची रोशनी ने ग्रामीणों के जीवन में बदलाव की उम्मीद जगाई है।

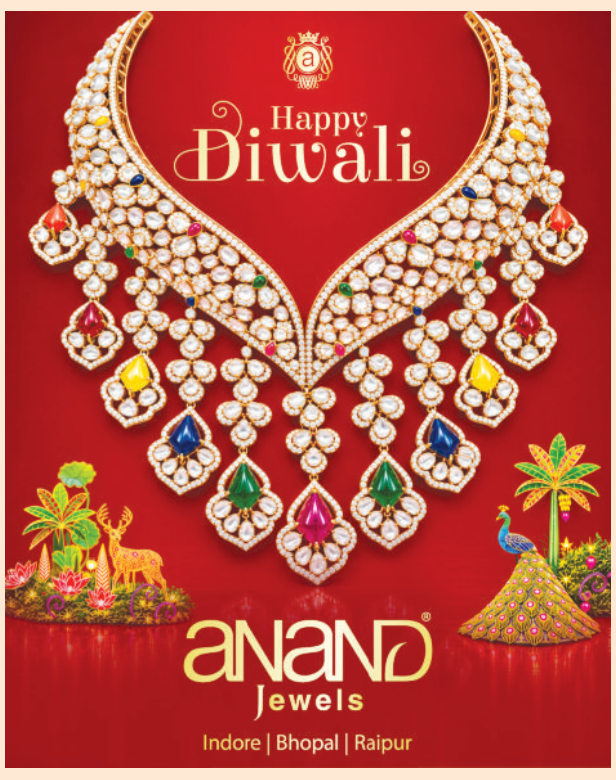



07- NOV- COR- MAIN- Pg- 5_page1.qxd 11/7/2026 10:50 PM Page 1

हरिभूमि

छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, हरियाणा व दिल्ली से एक साथ प्रकाशित

समाचार ही नहीं, विचार भी



सीता संग श्रीरामनगरी पहुंचे श्रीराम, उपराष्ट्रपति और योगी ने किया अभिषेक

सोने का सच्चा भाव

आनंद का सच्चा भाव

18 कैरेट रेट (75.00%) = ₹106433/-

22 कैरेट रेट (91.60%) = ₹129990/-

24 कैरेट रेट (99.99%) = ₹141897/-

Live Rate आनंद ज्वेल्स के मोबाइल ऐप पर चेक करें।

anand Jewels Pandri, Raipur



अयोध्या में दीपोत्सव : 30 लाख दीपों का बना नया रिकॉर्ड, हुआ श्रीराम का राज्याभिषेक

एजेंसी ▶▶| अयोध्या

रामनगरी शनिवार को एक बार फिर इतिहास की साक्षी बनी। अवसर था दीपोत्सव का, जब भक्ति, आस्था, संस्कृति और उल्लास के अद्भुत संगम ने पूरी अयोध्या को उत्सव के रंग में रंग दिया। सुबह साकेत महाविद्यालय से निकली श्रीराम राज्याभिषेक शोभायात्रा से शुरू हुआ उत्सव देर शाम तक 30 लाख दीपों की रोशनी, सरयू की महाआरती, ड्रोन शो और ▶▶|शेष पेज 4 पर



2100 ड्रोन से विशेष शो और महाआरती

2100 ड्रोन से विशेष शो किया गया। सरयू तट पर 2147 अर्चकों ने सरयू की महाआरती की। इसके पहले अयोध्या में करीब 3 घंटे तक शोभा यात्रा निकाली गई। इसमें 21 झांकियां शामिल रहीं। इनमें रामायण के सात कांडों को दर्शाया गया था।

पीएम मोदी बोले- जवानों के बीच मनाऊंगा त्योहार



प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को देशवासियों को दिवाली की शुभकामनाएं दीं और कहा कि पिछले वर्षों की तरह इस बार भी वह देश के बहादुर जवानों के साथ यह त्योहार मनाएंगे। सोशल मीडिया हैंडल पर साझा किए गए एक वीडियो संदेश में मोदी ने कहा कि वह यह त्योहार पूरे उत्साह के साथ मनाएंगे।

सीएम साय पहुंचे 'कृष्णायन'

हरिभूमि-आईएनएच के प्रधान संपादक डॉ. हिमांशु द्विवेदी के परिवार से आत्मीय मुलाकात





रायपुर। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय अपने पुत्र एवं पुत्री के साथ हरिभूमि-आईएनएच के प्रधान संपादक डॉ. हिमांशु द्विवेदी के निवास 'कृष्णायन' पहुंचे। इस आत्मीय मुलाकात के दौरान उन्होंने डॉ. द्विवेदी के परिवार के सभी सदस्यों को दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं दीं और सुख, समृद्धि एवं खुशहाली की कामना की। मुख्यमंत्री का अपने परिवार के साथ इस तरह स्नेहिल अवसर पर पहुंचना पारिवारिक आत्मीयता का सुंदर उदाहरण बना। उनकी सहजता, सरलता और अपनत्व भरे व्यवहार ने मुलाकात को और भी यादगार बना दिया। औपचारिकताओं से परे इस भेंट में आत्मीय रिश्तों की गर्माहट और दीपावली की खुशियों का विशेष रंग देखने को मिला।

अक्षर दीप... बिलासपुर में इस साल 13 हजार से अधिक बुजुर्गों ने सीखा पढ़ना-लिखना, किसी ने पोती से सीखे ककहरे तो किसी ने जीवनसाथी के साथ दिया साक्षरता का इम्तिहान

'जीवन की सांझ' में ज्ञान का आया उजाला, 85 की उम्र में थामी कलम

दीपावली पर घर-आंगन में दीप जलते हैं तो अंधेरा दूर होता है। लेकिन कुछ दीप ऐसे भी होते हैं, जिनकी रोशनी जीवन भर साथ चलती है। बिलासपुर जिले में बुजुर्गों ने अपने जीवन में ऐसे ही दीप जलाए हैं-अक्षर ज्ञान के दीप। किसी ने 80–85 साल की उम्र में पहली बार कलम थामी, किसी ने पोती से ककहरा सीखा तो किसी ने जीवनसाथी के साथ पढ़ना-लिखना शुरू किया। इस साल जिले में 13 हजार से अधिक बुजुर्गों ने साक्षरता की नई रोशनी से अपना जीवन रोशन किया है। इनकी कहानियां बताती हैं कि सीखने की कोई उम्र नहीं होती और नई शुरुआत के लिए कभी देर नहीं होती।

विकास चौबे ▶▶| बिलासपुर

पिछले महीने आयोजित साक्षरता परीक्षा में भी कई भावुक कर देने वाली तस्वीरें सामने आईं। कहीं पोता अपनी दादी को परीक्षा दिलाने पहुंचा तो कहीं पोती अपने दादा का हौसला बढ़ाने साथ आई। जिन हाथों ने पूरी उम्र खेती-किसानी, मजदूरी और घर-परिवार की जिम्मेदारियां संभालीं, उन्हीं हाथों ने इस उम्र में किताब, कॉपी और कलम थामी। बचपन में स्कूल जाने का मौका ▶▶|शेष पेज 4 पर

अलग खबर





पति-पत्नि एक साथ बने साक्षर

बिल्हा ब्लॉक के केकड़ार गांव के 74 वर्षीय सूखतराम मजदूरी करते हैं, जबकि उनकी 68 वर्षीय पत्नी रमकली घर संभालती हैं। दोनों अब तक पढ़ना-लिखना नहीं जानते थे। गांव के कुछ लोगों को साक्षरता अभियान से जुड़कर पढ़ते देखा तो उनके मन में भी सीखने की इच्छा जागी। दोनों ने साथ-साथ अक्षर ज्ञान हासिल करने का फैसला किया। साक्षरता अभियान से जुड़कर पढ़ाई शुरू की और फिर सरपंच के माध्यम से उल्लास परीक्षा में शामिल हुए। परीक्षा में जब दोनों ▶▶|शेष पेज 4 पर

पता नहीं पढ़ पाए तो 78 की उम्र में खुद बने साक्षर, गांव में खुलवाया पहला स्कूल

प्रतीक मिश्रा ▶▶| रायगढ़

एक कागज पर लिखा पता पढ़ न पाने की कसक ने 78 वर्षीय ठंडूराम राठिया की जिंदगी की दिशा बदल दी। जिस निरक्षरता ने कभी उन्हें दूसरे के सामने निरुत्तर कर दिया था, उसी पीड़ा को उन्होंने अपने परिवार और गांव की ताकत बनाने का संकल्प लिया। खुद की पढ़ाई भले ही पहली कक्षा से आगे नहीं बढ़ सकी, लेकिन गांव में स्कूल खुलवाने के लिए वे कलेक्टर तक पैदल पहुंच गए। वर्ष 1959 में जब देवगांव में पहला स्कूल खुला, तो भवन की नींव की पहली ईंट भी ठंडूराम ने ही रखी। आज उनके बच्चे शासकीय सेवा में हैं और नातिन अंतरराष्ट्रीय दौड़ प्रतियोगिता में दूसरा स्थान ▶▶|शेष पेज 4 पर



नातिन ने अंतरराष्ट्रीय मंच पर बढ़ाया परिवार का मान

ठंडूराम के शिक्षा के प्रति समर्पण का असर आज उनकी अगली पीढ़ी में भी दिखाई देता है। उनकी नातिन रागिनी राठिया ने पढ़ाई के साथ खेल में भी अपनी प्रतिभा साबित की है। आत्मानंद स्कूल में अध्ययन के दौरान वर्ष 2024-25 में रागिनी ने 800 मीटर दौड़ की अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता ▶▶|शेष पेज 4 पर

चाहे इस्तेमाल का हो इरादा
या निवेश का हो वादा...

सोना और चांदी*

ख़रीदते समय हॉलमार्क देखना न भूलें!



चांदी हॉलमार्क के 3 चिह्न

SILVER — भारतीय मानक ब्यूरो का मानक चिह्न 'SILVER' शब्द के साथ

990 — शुद्धता ग्रेड

AAAAAA — 6 अंकों का यूनिक अल्फान्यूमेरिक कोड (HUID)

स्वर्ण हॉलमार्क के 3 चिह्न

भारतीय मानक ब्यूरो का मानक चिन्ह

22K916 — सोने की शुद्धता कैरट और फाइननेस में

AAAAAA — 6 अंकों का यूनिक अल्फान्यूमेरिक कोड (HUID)

*चांदी पर हॉलमार्किंग स्वैच्छिक है

भारतीय मानक ब्यूरो
भारत का राष्ट्रीय मानक निकाय

अपने हॉलमार्क युक्त सोने और चांदी के आभूषणों की प्रामाणिकता जांचने या शिकायत दर्ज करने के लिए बीआईएस केयर ऐप डाउनलोड करें।

हमें फॉलो करें @Indianstandards

बीआईएस केयर ऐप डाउनलोड करने के लिए स्कैन करें

Google Play App Store

CBC 08103/13/0006/2627

दीपोत्सव की शुभकामनाएं

दीपोत्सव के पावन पर्व पर सुधि पाठकों, विज्ञापनदाताओं, एजेंसियों और हॉकर बंधुओं समेत सभी शुभचिंतकों को हार्दिक शुभकामनाएं।

अवकाश

इस अवसर पर 8 और 9 नवंबर को हरिभूमि कार्यालय में अवकाश रहेगा। 11 नवंबर बुधवार को आपका यह प्रिय अखबार आपके हाथों में होगा।

-प्रधान संपादक

व्यापार मार्जिन की सीमा तय

137 कैंसर रोधी दवाओं की नई कीमतें कल से

नई दिल्ली। सरकार के व्यापार मार्जिन पर सीमा तय करने के फैसले से नौ नवंबर से 137 कैंसर रोधी दवाओं की कीमतों में बड़ी कटौती होगी। इससे उपभोक्ताओं को सालाना अनुमानित 3,502.31 करोड़ रुपए की बचत होगी। रसायन एवं उर्वरक मंत्रालय की ओर से जारी एक आधिकारिक बयान के मुताबिक, राष्ट्रीय औषधि मूल्य निर्धारण प्राधिकरण (एनपीपीए) ने कैंसर रोधी 137 दवाओं पर व्यापार मार्जिन की सीमा तय की है। यह फैसला स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय (डीजीएचएस) के तहत गठित विशेषज्ञ समिति की 17 अक्टूबर को की गई सिफारिशों के बाद लिया गया। बयान के अनुसार, अब तक 76 दवा कंपनियों ने 121 दवाओं के 1,225 फॉर्मूलेशन के लिए संशोधित अधिकतम खुदरा मूल्य (एमआरपी) जमा किए हैं। इनमें से 1,031 फॉर्मूलेशन की कीमतों में कटौती दर्ज की गई है। करीब 600 ब्रांड की कीमतों में 50 प्रतिशत से अधिक की कमी आई है, जबकि सबसे अधिक ▶▶|शेष पेज 4 पर

दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं

from पान राज®

परिवार



दिल पे है उसी का राज,
जो आज खाए 'पान राज'

PREMIUM QUALITY PRODUCT

कामयाब लोगों की पसंद...



MFG. BY: SHIV SHAKTI ENTERPRISES, DELHI-110039.

STATUTORY WARNING:
CHEWING OF PAN MASALA & SUPARI IS INJURIOUS TO HEALTH. (NOT FOR MINORS)

आडवाणी : एक शताब्दी की ओर बढ़ती प्रेरणादायी यात्रा



व्यक्तित्व

नरेंद्र मोदी
प्रधानमंत्री

आज लालकृष्ण आडवाणी जी अपने जीवन के सौवें वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं। ये सुखद संयोग है कि आज ही दीपावली का पावन पर्व भी है। प्रभु श्रीराम और दीपों के इस उत्सव के साथ आडवाणी जी के जीवन का इतना महत्वपूर्ण पड़ाव जुड़ना, इस अवसर को और भी यादगार बनाता है। इस संयोग को एक और बात विशेष बनाती है। इसी वर्ष हम जनसंघ की स्थापना के 75 वर्ष, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के 100 वर्ष और डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की 125वीं जयंती भी मना रहे हैं। मैं स्वयं को सौभाग्यशाली मानता हूं कि मुझे हमेशा आडवाणी का स्नेह, सान्निध्य और मार्गदर्शन मिलता रहा है। आज उनके साथ बिताए हुए अनगिनत पल, उनसे जुड़ी कितनी ही स्मृतियां मन में उमड़ रही हैं। मैं ईश्वर से उनके उत्तम स्वास्थ्य की प्रार्थना करता हूं।

आज 8 नवंबर को लालकृष्ण आडवाणी जी अपने जीवन के सौवें वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं। ये कितना सुखद संयोग है कि आज ही दीपावली का पावन पर्व भी है। प्रभु श्रीराम और दीपों के इस उत्सव के साथ आडवाणी जी के जीवन का इतना महत्वपूर्ण पड़ाव जुड़ना, इस अवसर को और भी यादगार बनाता है। इस संयोग को एक और बात विशेष बनाती है। इसी वर्ष हम जनसंघ की स्थापना के 75 वर्ष, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के 100 वर्ष और डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की 125वीं जयंती भी मना रहे हैं।

आज का ये अवसर मेरे लिए व्यक्तिगत रूप से बहुत भावुक कर देने वाला है। मैं स्वयं को सौभाग्यशाली मानता हूं कि मुझे हमेशा आडवाणी का स्नेह, सान्निध्य और मार्गदर्शन मिलता रहा है। आज उनके साथ बिताए हुए अनगिनत पल, उनसे जुड़ी कितनी ही स्मृतियां मन में उमड़ रही हैं। सार्वजनिक जीवन में काम करते हुए कई दशक पहले मुझे उनके संपर्क में आने का अवसर मिला था। धीरे-धीरे हमारा ये संबंध इतना आत्मीय हो गया कि वे मेरे लिए अभिभावक की तरह बन गए। उन्होंने मेरा हाथ थामकर मुझे राजनीति की बारीकियां सिखाईं, कदम-कदम पर मेरा मार्गदर्शन किया। जीवन में जब भी कोई कठिन परिस्थिति आई, उनका अनुभव और उनकी सीख मेरे लिए संबल बने। उनकी वैचारिक स्पष्टता, उनका आत्मविश्वास और अपने सिद्धांतों के प्रति उनकी अटूट निष्ठा ने मुझे हमेशा प्रेरित किया। आज भी जब मैं उनसे मिलने जाता हूं, तो उनके साथ बिताया हुआ समय मुझे नई ऊर्जा और नई प्रेरणा से भर देता है। आज इस अवसर पर आडवाणी जी के लिए मन में एक ही भाव उमड़ रहा है..."जीवेत शरदः शतं, पश्येम शरदः शतं, शृणुयाम शरदः शतं।" ऐसे व्यक्तित्व बहुत कम हैं, जिनके जीवन में आधुनिक भारत के इतिहास के इतने सारे अध्याय समाए हों। आडवाणी का जन्म 8 नवंबर, 1927 को देव दीपावली के दिन हुआ था। 1947 में उन्हें विभाजन की पीड़ा सहनी पड़ी। सिंध में अपना घर, अपना परिवेश, अपनी जानी-पहचानी दुनिया छोड़कर उन्हें आना पड़ा। सब कुछ पीछे छूट गया और जीवन की नई शुरुआत शून्य से करनी पड़ी।





अयोध्या में राम मंदिर के निर्माण की शपथ

आडवाणी जी ने इस रथयात्रा में जिस जीवटता और संकल्प शक्ति का परिचय दिया, वो अपने आप में प्रेरणादायी है। इस यात्रा से जुड़ा एक प्रसंग आज भी मेरी स्मृतियों में ताजा है। बिहार में आडवाणी जी की गिरफ्तारी हम सभी के लिए बहुत दुखद क्षण था। उस समय गुजरात में भाजपा ने चिमनभाई पटेल की सरकार से अपना समर्थन वापस ले लिया। इसके पीछे संदेश बिल्कुल स्पष्ट था...अपनी विचारधारा और राम मंदिर के निर्माण के संकल्प पर कोई समझौता नहीं होगा। हमारे अनेक वरिष्ठ नेताओं और कार्यकर्ताओं ने शपथ ली कि चाहे कितनी भी बाधाएं आएं, अयोध्या में राम मंदिर का निर्माण होकर ही रहेगा। और फिर वर्षों बाद वो ऐतिहासिक अवसर भी आया, जब जनता-जनार्दन के आशीर्वाद से अयोध्या में प्रभु श्रीराम का भव्य मंदिर का सपना साकार हुआ। आडवाणी जी के व्यक्तित्व के ऐसे अनेक पहलू हैं, जो उन्हें और भी विशिष्ट बनाते हैं। उनकी सादगी और सरलता भी ऐसी ही एक विशेषता है। नवनिर्माण आंदोलन के बाद आडवाणी जी जूनागढ़ आए थे। वहां वे एक सामान्य कार्यकर्ता की तरह पूरे एक महीने तक रहे और विधानसभा चुनावों के लिए पार्टी को तैयार करने में जुटे रहे। इन चुनावों में जनता ने इंदिरा गांधी की कांग्रेस को नकार दिया था। आडवाणी जी ने अपने आचरण से हमेशा सार्वजनिक जीवन में ईमानदारी और शुचिता का उदाहरण प्रस्तुत किया है। उन्हें पढ़ने का बहुत शौक है। जो लोग उनके साथ रहे हैं, वे जानते हैं कि वे अखबारों को भी कितने ध्यान से और कितनी बारीकी से पढ़ते रहे हैं। सिनेमा और रंगमंच से भी उनका गहरा लगाव रहा है। वर्षों तक वे बड़े उत्साह से फिल्मों की समीक्षा भी करते रहे हैं।

2024 में 'भारत रत्न' से सम्मानित

इतिहास के प्रति उनकी गहरी समझ और उसे सहेजकर रखने की उनकी भावना भी उल्लेखनीय है। उनकी पुस्तक '**My Country My Life**' में इसकी सुंदर झलक मिलती है। आडवाणी जी का अपनी सिंधी संस्कृति से हमेशा गहरा जुड़ाव रहा है। लेह के पास सिंधु दर्शन पूजा को लोकप्रिय बनाने में भी उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। मुझे स्वयं भी एक बार आडवाणी जी और जॉर्ज फर्नांडिस जी के साथ सिंधु दर्शन पूजा में शामिल होने का सौभाग्य मिला था। आडवाणी जी की इस असाधारण जीवन यात्रा की बात हो और कमला आडवाणी जी का उल्लेख न हो, तो ये यात्रा अधूरी रह जाएगी। इतने लंबे सार्वजनिक जीवन में कमला जी हमेशा उनकी शक्ति और संबल बनी रहीं। हर कदम पर उनका साथ दिया। कराची में पले-बढ़े आडवाणी जी ने शायद ही कभी कल्पना की होगी कि जीवन उन्हें कितनी लंबी और असाधारण यात्रा पर ले जाएगा। देश के प्रति उनके योगदान के लिए कृतज्ञ राष्ट्र ने वर्ष 2024 में उन्हें भारत रत्न से सम्मानित किया। आज जब आडवाणी जी अपने जीवन के सौवें वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं, तो मैं ईश्वर से उनके उत्तम स्वास्थ्य की प्रार्थना करता हूं।

जनसंघ को मजबूत बनाया

इस कठिन अनुभव को लेकर उनके मन में कभी कोई कड़वाहट या पछतावा नहीं रहा। कितनी भी कठिन परिस्थितियां क्यों न हों, नए सिरे से कुछ खड़ा करने का उनका ये संकल्प जीवनभर उनके साथ रहा। जनसंघ को मजबूत बनाने और बाद में भारतीय जनता पार्टी के निर्माण में भी उनका यही गुण सामने आया। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में उनके कार्यकाल में देश की राजनीति ने बड़े बदलाव देखे। 1989 में कांग्रेस की सीटें 400 से घटकर 200 से भी नीचे आ गईं। 1996 में भाजपा पहली बार देश की सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी। आडवाणी ने कार्यकर्ताओं की अनेक पीढ़ियों को तैयार किया। उन्होंने राष्ट्र प्रथम के सिद्धांत पर पार्टी की मजबूत नींव रखी। यहां मैं उनके व्यक्तित्व की दो ऐसी विशेषताओं का उल्लेख करना चाहूंगा, जो एक नेता के रूप में उन्हें अलग पहचान देती हैं। पहली है, उनकी वैचारिक स्पष्टता और बौद्धिक प्रखरता। उनके भाषणों और लेखन में इसकी झलक साफ दिखाई देती थी। जनसंघ और भाजपा के लिए उन्होंने जो प्रस्ताव लिखे, वे आज भी पढ़ने और समझने योग्य हैं। उनके इंटरव्यू में भी विचारों की गहराई के साथ शब्दों की स्पष्टता और सटीकता दिखाई देती थी। दूसरी विशेषता थी, भारतीय राजनीति में लंबे समय तक हावी रही छद्म धर्मनिरपेक्षता को लेकर उनका स्पष्ट और निर्भीक रुख। उन्होंने देश के राजनीतिक विमर्श में इस प्रवृत्ति की वास्तविकता को उजागर किया। आडवाणी जी को जो भी जिम्मेदारी मिली, उन्होंने उसे पूरी निष्ठा और लगन से निभाया। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक के रूप में उन्होंने सबसे पहले राजस्थान के अलग-अलग क्षेत्रों में काम किया। इसके बाद वे दिल्ली आए, जहां उन्हें अटल जी के साथ मिलकर काम करने का अवसर मिला। दोनों ने दशकों तक कंधे से कंधा मिलाकर काम किया। आडवाणी जी के लिए अटल जी हमेशा उनके नेता और मार्गदर्शक रहे। राजनीति के इतिहास में ऐसे उदाहरण बहुत कम मिलते हैं, जब दो बड़े कद के नेता इतने लंबे समय तक एक-दूसरे के साथ खड़े रहे हों। अक्सर समय के साथ राजनीतिक परिस्थितियां बदलती हैं, महत्वाकांक्षाएं टकराती हैं। साथ चलने वाले नेता भी अलग-अलग रास्तों पर निकल जाते हैं, लेकिन अटल जी और आडवाणी जी का साथ अपने आप में एक अनूठी मिसाल है।

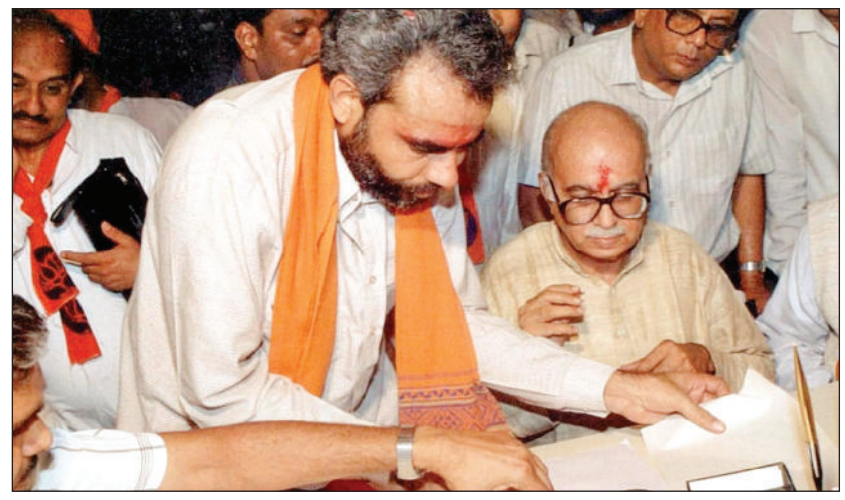



सोमनाथ से अयोध्या की रथयात्रा

आपातकाल आडवाणी जी के जीवन का एक महत्वपूर्ण मोड़ था। उस दौर में वे लोकतंत्र को बचाने और संविधान की रक्षा के संघर्ष में अग्रिम पंक्ति में खड़े रहे। इसमें उन्होंने जून 1975 से भारत में शुरू हुई घटनाओं और 1933 में हिटलर के शासन के दौरान जर्मनी में हुई घटनाओं के बीच आश्चर्यजनक समानताओं का बहुत प्रभावी ढंग से वर्णन किया है। आडवाणी जी विपक्ष में जितने प्रखर नेता रहे, प्रशासन में भी उतने ही कुशल साबित हुए। 1977 में जब जनता सरकार बनी, तो उन्हें सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय की जिम्मेदारी मिली। इस मंत्रालय में उनके कार्यकाल को आज भी विशेष रूप से प्रभावशाली माना जाता है। बाद में उप प्रधानमंत्री और देश में सबसे लंबे समय तक सेवा देने वाले गृह मंत्रियों में से एक के रूप में उन्होंने भारत की सुरक्षा व्यवस्था को मजबूत बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। हमारे सुरक्षा बलों के जीवन को बेहतर बनाने के लिए उन्होंने जो प्रयास किए, उन्हें आज भी बड़े आदर और आत्मीयता से याद किया जाता है। आतंकवाद के खिलाफ उनका रुख हमेशा स्पष्ट और दृढ़ रहा। उनके इसी संकल्प के कारण देश को आतंकवाद से निपटने के लिए एक सख्त कानून मिला। सोमनाथ से अयोध्या तक की रथयात्रा आडवाणी जी के जीवन का एक ऐतिहासिक अध्याय है। मैं स्वयं को सौभाग्यशाली मानता हूं कि मुझे इस ऐतिहासिक यात्रा से जुड़ने का अवसर मिला। यात्रा की परिकल्पना से लेकर उसकी तैयारियों और फिर उसे आगे बढ़ाने तक, मुझे हर चरण में योगदान देने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। रथयात्रा के शुभारंभ के समय सोमनाथ में उपस्थित रहना भी मेरे लिए एक अविस्मरणीय अनुभव था।

गुजरात से पुराना नाता रहा

इतिहास साक्षी है, पांच-छह दशकों की इस लंबी यात्रा में दोनों एक-दूसरे के सहयोगी बने रहे। भारतीय राजनीति में आपसी विश्वास, सहयोग और समर्पण की ये परंपरा आज भी एक बड़ी प्रेरणा है। आडवाणी जी जब दिल्ली आए थे, तब ये शहर विभाजन की विभीषिका से उबरने का प्रयास कर रहा था। ऐसे समय में उन्होंने जनसंघ को मजबूत बनाने के लिए खुद को पूरी तरह समर्पित कर दिया। 1967 में वे दिल्ली महानगर परिषद के अध्यक्ष बने। एक सांसद के रूप में आडवाणी की यात्रा 1970 के दशक से शुरू हुई। एक सांसद के रूप में, दोनों सदनों में विपक्ष के नेता के रूप में और सत्ता पक्ष में रहते हुए भी उन्होंने अपनी अलग पहचान बनाई। संसदीय जिम्मेदारियों में व्यस्त रहने के बावजूद वे लगातार देश के अलग-अलग हिस्सों में जाते रहे, लोगों से मिलते रहे और उनसे संवाद करते रहे। 1991 के लोकसभा चुनाव की स्मृतियां आज भी मेरे मन में ताजा हैं। उस समय तय हुआ था कि आडवाणी जी दो लोकसभा सीटों से चुनाव लड़ेंगे। इनमें से एक सीट गांधीनगर की थी। आडवाणी जी का गुजरात से बहुत पुराना नाता रहा है। विभाजन के बाद उनके पिताजी कच्छ में आकर बसे थे। 1976 में, जब देश में आपातकाल अपने चरम पर था, तब आडवाणी जी गुजरात से राज्यसभा सांसद भी बने थे। इस तरह 1991 में गांधीनगर से चुनाव लड़ना उनके लिए एक तरह से घर वापसी जैसा था। उस समय मैं भाजपा के संगठन में काम कर रहा था। मुझे आडवाणी जी के नामांकन पत्र तैयार करने से लेकर पूरे चुनाव अभियान में उनके साथ काम करने का सौभाग्य मिला।

अमेरिका के प्रति संतुलित रुख रखे भारत



मंथन

उमेश चतुर्वेदी
वरिष्ठ पत्रकार

यह पहला मौका नहीं है कि जब किसी अमेरिकी राष्ट्रपति की पार्टी को मध्यावधि चुनावों में करारी हार का सामना करना पड़ा हो। अमेरिकी इतिहास में 1934 से अब तक सिर्फ तीन ऐसे मौके आए हैं, जब मध्यावधि चुनावों में अमेरिकी राष्ट्रपति की पार्टी को जीत मिली। ट्रंप को अपने पहले कार्यकाल के दौरान भी मध्यावधि चुनाव में हार मिली थी। यह बात और है कि तब हार इतनी बड़ी नहीं थी।

लोकतांत्रिक समाज में हर चुनावी नतीजे का असर होता है। अगर नतीजे व्यापक हों तो उसका असर भी उतना ही व्यापक होता है। इस लिहाज से कह सकते हैं कि अमेरिका के इन चुनाव नतीजों का असर सिर्फ अमेरिका ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया पर पड़ेगा, जिसमें अपना देश भी शामिल है। चूंकि अमेरिकी संसद, कांग्रेस के दोनों सदनों हाउस ऑफ रिप्रजेंटिव और सीनेट में अब विपक्षी डेमोक्रेट का बहुमत हो गया है, इसलिए ट्रंप को अपनी नीतियों को लागू करना आसान नहीं होगा। डेमोक्रेट सांसद उनके प्रस्तावों को रोक सकते हैं या उनमें सुधार प्रस्तावित कर सकते हैं। लेकिन हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि अमेरिकी राष्ट्रपति के पास वीटो का ताकतवर हथियार है, जिसका वह इस्तेमाल करता रहा है। राष्ट्रपति ट्रंप की जैसी फितरत है, उसकी वजह से कह सकते हैं कि वे अपनी इस शक्ति का इस्तेमाल करने से नहीं रुकेंगे। अमेरिकी लोकतंत्र की एक खासियत है कि वहां की नीतियां जनमत के पैरामीटर के साथ गिरती और उठती रही हैं। अमेरिकी संविधान के अनुसार वहां का नागरिक इतना महत्वपूर्ण है कि उसकी सामूहिक राय से अमेरिकी राष्ट्रपति और उसकी नीतियां प्रभावित हुए बिना नहीं रहतीं। इसके बावजूद याद रखा जाना चाहिए कि ट्रंप अलग ही तरह की शख्सियत हैं। वे कब क्या बोल दें और कब अपनी ही कही हुई बात से पलट जाएं, कहना मुश्किल है। उन पर भरोसा करना मुश्किल है। जिस रूस से तेल खरीदने के लिए वे भारत पर टैरिफ लाद रहे थे, उसी रूस से खुद उन्होंने ही तेल खरीदना शुरू कर दिया। इसलिए मौजूदा मध्यावधि चुनाव नतीजों के बाद भारत को न तो ज्यादा उत्साहित होने की बात है और न ही ज्यादा निराश होने की। भारत को पहले की ही तरह संतुलित रुख अख्तियार किए रखना होगा। भारतीय नेतृत्व और कूटनीति के लिए अच्छी बात यह है कि उनका अमेरिका की दोनों प्रमुख पार्टियों रिपब्लिकन और डेमोक्रेट-से बेहतर संबंध रहा है। इसलिए रिपब्लिकन ट्रंप और डेमोक्रेट सांसदों के बीच भारत को संतुलन बनाए रखना होगा। अव्यवस्थित चित्त वाले ट्रंप और सधी हुई राजनीति करने वाले डेमोक्रेट सांसदों से भरी अमेरिकी संसद से भारत को संतुलित संबंध बनाए रखना होगा। फिर भी मोटे तौर पर कहा जा सकता है कि अमेरिकी चुनाव के मौजूदा नतीजे भारत के लिए बेहद महत्वपूर्ण हैं। इन परिणामों का भारत से अमेरिका को होने वाले निर्यात के साथ ही वहां काम कर रहे भारतीय पेशेवरों के भविष्य पर असर पड़ेगा। इसके साथ ही दोनों देशों के बीच जारी रक्षा और सामरिक सहयोग पर भी प्रभाव दिख सकता है। चूंकि अमेरिका आज के दौर में भारतीय उत्पादो का बड़ा बाजार है, इसलिए अमेरिकी टैरिफ नीति में छोटे से छोटे परिवर्तन का असर सीधे तौर पर भारतीय निर्यातकों पर पड़ता है। भारत और अमेरिका के बीच व्यापार समझौता अभी तक परवान नहीं चढ़ पाया है। पिछले महीने अमेरिकी विदेश मंत्री मार्को रुबियो ने अपनी भारत यात्रा के दौरान कहा था कि दोनों देशों के बीच व्यापार समझौता अपने आखिरी दौर में है। इन चुनाव नतीजों से उम्मीद की जा रही है कि अमेरिका में रह रहे और वहां जाने की इच्छा रखने वाले भारतीय पेशेवरों को थोड़ी आसानी होगी। चूंकि ट्रंप प्रशासन ने अमेरिका आने वाले लोगों की वीजा नीति और वर्क परमिट में खासा बदलाव किया है। अब हो सकता है कि डेमोक्रेट बहुमत वाली अमेरिकी संसद इस प्रस्ताव में कुछ छूट सुझाए। पूरी दुनिया में महंगाई की वजह ट्रंप प्रशासन द्वारा ईरान पर किया गया हमला और उससे उपजी परिस्थितियां रही हैं। अब संसद पर ट्रंप की पकड़ कमजोर हुई है, लिहाजा अब ज्यादा दिन तक ईरान युद्ध नहीं चल सकता। इससे जहां कच्चे तेल का उत्पादन बढ़ सकता है, वहीं वैश्विक रक्षा खर्च भी कम हो सकता है। चूंकि भारत अपनी ईंधन जरूरतों का बड़ा हिस्सा आयात करता है, इसलिए तेल की कीमतें घटने से घरेलू अर्थव्यवस्था को बड़ी राहत मिलेगी।



अमेरिकी संविधान के अनुसार वहां का नागरिक इतना महत्वपूर्ण है कि उसकी सामूहिक राय से अमेरिकी राष्ट्रपति और उसकी नीतियां प्रभावित हुए बिना नहीं रहतीं। इसके बावजूद याद रखा जाना चाहिए कि ट्रंप अलग ही तरह की शख्सियत हैं। वे कब क्या बोल दें और कब अपनी ही कही हुई बात से पलट जाएं, कहना मुश्किल है।

दीपोत्सव का बदलता स्वरूप



दीपोत्सव

डॉ. शंकरलाल शास्त्री

'तमसो मा ज्योतिर्गमय' यानी अज्ञान रूपी अंधेरे से ज्ञान रूपी उजाले की ओर ले जाने वाला पर्व है दीपावली। वर्षभर में मनाया जाने वाला यह न केवल एक त्योहार ही है बल्कि मानव जीवन के लिए अनेक उपदेशात्मक संदेशों को भी अपने में समेटे है।

जब हम छोटी कक्षाओं में पढ़ा करते थे तो थैले पटी छुपाकर रख देते और माँ के साथ दिवाली की सफाई के कार्यों में मां के साथ लग जाते। कच्चे घर को लीपने का आनन्द ही कुछ अलग होता था। आज वह बालपन कहाँ? बालमन तो स्वच्छ शीशे की तरह होता है जिसमें किसी प्रकार का छद्म रूपी मैल नहीं। आज यक्ष प्रश्न यह है कि हम अपने अन्तर्मन में समाए मैल को कैसे और कब धोयेंगें। सच्चे अर्थों में दिवाली जैसा पर्व ही अन्तर्मन के मैल को धो डालनें का सुनहरा अवसर है।

हम जब याद करते हैं अपने बालमन को और याद करते हैं उन दिवाली के उल्लास और आनन्द से भरे दिनों की तो पुनः बाल्यकाल की चौखट पर बालसभा करने को मन करता है। स्कूल आते समय ग्वाल-बाल हमें घास फूस से बनी चरखी थमा देते थे तो कोई दिवाली के लिए मोरों की पंख। हम पिताजी को देखा करते थे घर के आसपास चढ़-चढ़ कर पिताजी कब फूलझड़ी, अनार जमीनचक्री पटाखे, और साँपले लेकर आयेंगें पिताजी की गठरी और थैला देखते ही हमारी खुशी का कोई ठिकाना न रहता और ममतामयी माँ पटाखे हमारे हवाले कर देतीं। दोनों भाइयों और बड़ी बहिन को बराबर-बराबर का बंटवारा कर दिया जात। उस समय पटाखों से होने वाले प्रदूषण व बीमारियों का हमें ज्ञान न था। तो भी घर के बड़े बुजुर्ग अपनी देखरेख में ही बहुत सीमित और दूरी बनाकर पटाखे चलाने का आदेश दिया जाता। आज के दौर में बढ़ते प्रदूषण नियंत्रण को ध्यान में रखते हुए अब माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने भी इसे गंभीरता से लिया है। इसलिए ग्रीन पटाखे (प्रदूषण रहित) बहुत ही सीमित मात्रा में चलाएं इनके बजाए हमें घर के अन्य सदस्यों के साथ सांस्कृतिक पर्व मनाना चाहिए। वर्ष भर के इस

पर्व से एक अनोखी उमंग पाकर मन खिल उठता है। उस दौर में भी सांझ होते ही दीपों की पाँत रखने की परम्परा शुरू होती और दिवाली की खुशी में जल्दी से दादी माँ के आदेश का पालन किया जाता बाहर खेतों में जाकर दीपक जलाए जाते और हम कहते - देखो बस्ती में पटाखे चलने लग गये। चल न भाई। जय हो लक्ष्मी मां की, जय हो भगवान गणेश जी की, जय हो बजरंग बली की, जय हो पितृदेव की। हम साष्टांग प्रणाम कर फिर घर पर दौडे-दौड़े आया करते थे और फिर सभी प्रकार के व्यंजनों सहित चावल, मूंग और पकवानों का आनन्द लेने के बाद चौपाल पर बड़े बुजुर्गों का हुजूम लग जाता था।सबका चरण स्पर्श करना न भूलते। इस कथाप्रसंग को बयां करने के पीछे हमारा दृष्टिकोण यह है कि आज हमारे देश में एक बड़ा तबका मनोरोगी हो चला है, तनाव में हैं। इन सबके लिए ऐसे पर्व किसी वरदान से कम नहीं। यह दीपोत्सव पर्व, परम्परा और हमारी संस्कृति की अनूठा खुशियों भरा पर्व है। यदि हमारी इन परम्पराओं को अपनी पीड़ा की बहती धाराओं में दृष्टि डालें तो पायेंगें कि आज इन बीमारियों से बच निकलने का रहस्य आनन्द और उल्लास के साथ मनाए जाने वाले ये दीपोत्सव जैसे पर्व ही हैं।

आज ऐसे पर्वों पर दूसरों को आत्म परीक्षण करने, अहंकार और अनियंत्रित महत्वाकांक्षी न होने जैसे बड़े - बड़े संदेश दिए जाते हैं और मानवीय मूल्यों का ढिंढोरा पीटा जाता है पर सच पूछिए तो कुछ तथाकथित महाज्ञानी ही स्वयं को उजाले के प्रकाश स्तंभ और दूसरों को नीचा दिखाकर उन्हें अंधेरे का प्रतीक सिद्ध कर हांशिए पर डाल दिया जाता है और स्वयं महापंडित की श्रेणी में आ खड़े होते हैं। जबकि सच्चाई यह है कि दीपावली जैसे पर्व ही ऐसे विकारों से मुक्ति



दिलाकर सुकून और शांति का अहसास कराते हैं।

गोवर्धन पूजा में सामूहिक रूप से परिक्रमा जैसे सामाजिक संदर्भ हमें सुख -दुःख में भागीदार बने रहने का संदेश देते हैं।

आज हम पर्व मनाते हैं किन्तु इन पर्वों की बस परिपाटी निभाने में ही लगे हैं। अब घर में वो मां की मधुर और मन को सुकून देने वाली आवाज कहां जो सदा ऐसे उत्सवों के अवसर पर पूरे परिवार को अपने वात्सल्य रुपी ममताभरे आशीष के वचनों से असीम दुआएं देतीं और न आकाश रूपी पिता का साया ही रहा अब तो चांद और सूरज ही शायद मां और पिताजी की दुआओं के दाता बने हैं।

यह बात तो सौ टका सही है कि हमारे बड़े-बुजुर्गों की बातें, उनके रहन-सहन और पर्वों के प्रति उल्लास में स्वास्थ्य, शान्ति और राहत के रंग छुपे होते हैं। दिवाली इसी शान्ति, कान्ति, ज्योति और स्वास्थ्य का प्रतीक है।

-लेखक वरिष्ठ साहित्यकार एवं विद्वान हैं

बिलासपुर, रविवार 8 नवंबर 2026 | कार्तिक कृष्ण पक्ष पंचमी | वर्ष : 26, अंक : 229 | पृष्ठ : 12+12 = 24 मूल्य : 5.00*** | haribhoomi.com

हरिभूमि

छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, हरियाणा व दिल्ली से एक साथ प्रकाशित

समाचार ही नहीं, विचार भी







कठिन समस्याएं अब न होंगी

क्यूंकि सच्ची सहेली में हैं 67 खास आयुर्वेदिक जड़ी-बूटियां जो मुश्किल तकलीफों को अंदर से ठीक करने में मदद करे।

24x7 Helpline: 77106 44444 • www.sachisaheli.in



Clinically Tested*

67 दुर्लभ प्राकृतिक जड़ी-बूटियों से बना 'सच्ची सहेली' आयुर्वेदिक टॉनिक एवं टेबलेट्स

INDIA'S MOST TRUSTED BRAND

Helps in:

कठिन दर्द | चिड़चिड़ापन | थकान | कमजोरी | कमर कटना | इम्यूनिटी

सच्ची सहेली®

दुबई-कनाडा में भिलाइयंस का दिवाली सेलिब्रेशन

अतुल अग्रवाल ⏭ भिलाई

भिलाई सहित छत्तीसगढ़ से विदेशों में जाकर बसे लोगों का दीपावली सेलिब्रेशन शुरू हो गया है। जानकारी के मुताबिक विदेशों में अलग-अलग जगहों पर 100 से ज्यादा ऐसे भिलाइयंस हैं, जो इस दिवाली विदेश में रहकर दीपावली मना रहे हैं। कनाडा में दीपों का यह पर्व मनाया जा रहा है। धनतरेस, नरक चौदस और लक्ष्मी पूजा को लेकर अलग-अलग दिन कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। कनाडा में नॉर्थ अमेरिका छत्तीसगढ़ एसोसिएशन के बैनर तले पूरे छत्तीसगढ़ के 300 से ज्यादा परिवार एक साथ दिवाली मना रहे हैं।

हरिभूमि ने विदेश में रह रहे इन लोगों के परिवार के सदस्यों से बात की। उन्होंने बताया कि कनाडा में भी दिवाली पर अलग-अलग आयोजन हो रहे हैं। इस उत्सव के लिए बिल्डिंग बुक की गई है। जहां भव्य आयोजन किया जा रहा है। लोगों की भीड़ को देखते हुए 7 अलग-अलग स्पॉट्स में बांट दिया गया है। दुबई और कनाडा दोनों ही जगहों पर आतिशबाजी के बजाए फुलझड़ियां, अनार, चकरियां जलाई जा रही है। विशालकाय स्क्रीन लगाए गए हैं, जिन पर प्री-रिकॉर्डेड सांस्कृतिक कार्यक्रम दिखाए जा रहे हैं। लोगों के बीच घूमती हनुमान, रावण, लक्ष्मी व गणेश की विशालकाय कठपुतलियां खासतौर पर बच्चों को आकर्षित कर रही हैं। उत्सव स्थल के अलावा भी काउंटी में दीपावली के मौके पर अलग-अलग आयोजन हो रहे हैं।



कनाडा में नाचा एकजुटता का संदेश

नॉर्थ अमेरिका छत्तीसगढ़ एसोसिएशन कनाडा द्वारा ब्रैमप्टन, ओंटारियो में दिवाली और छत्तीसगढ़ राज्य के स्थापना दिवस पर विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस विशेष अवसर पर 30 से अधिक परिवारों ने एक ⏭शेष पेज 4 पर



दुबई में छत्तीसगढ़ियों की दिवाली में लोकनृत्य की छटा

भिलाई। नाचा-यूएई के तत्वावधान में नाचा-यूएई एनआरआई परिवार ने दुबई में दिवाली मनाई। अगले दो दिन तक दीपोत्सव का यह पर्व सैलिब्रेट किया जा रहा है। संयुक्त अरब अमीरात में बसे प्रवासी भिलाई और छत्तीसगढ़ के अलग-अलग हिस्सों के लोग एकजुट होकर अपनी जड़ों का सम्मान किया। राज्य के स्थापना दिवस का उत्सव मनाया। नाचा-यूएई के अध्यक्ष अमित उपाध्याय के नेतृत्व में यह ⏭शेष पेज 4 पर

इजराइल में नए प्रधानमंत्री का ऐलान आज

एजेंसी ⏭ तेल अवीव

इजराइल में अगला प्रधानमंत्री कौन होगा इसका ऐलान राष्ट्रपति इसाक हर्जोग रविवार को करेंगे। सरकार बनाने के लिए 61 सासंदों का समर्थन चाहिए। गादी आइजनकोट के गठबंधन को 6 पार्टियों के 67 सांसदों ने समर्थन दिया है। प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू के पास मात्र 46 सांसदों का समर्थन है। इस कारण माना जा रहा है कि राष्ट्रपति उन्हें सरकार बनाने का पहला मौका नहीं देंगे। इजराइल में अब तक किसी भी पार्टी को बहुमत नहीं मिला है।

सबसे कम कीमत पर

1.99%* Making Charges

ANAND Gold Pandri

अजन्ता® AJANTA

fssai | ISO 20022 | IS : 5346 CM/L-9405374



Food Color Preparation Baking Powder, Custard Powder, Drinking Chocolate & Flavours

www.ajantafoodproducts.com

शरीर को डिटॉक्स (Detox) करे इम्यूनिटी बढ़ाने में मददगार CLINICALLY TESTED

पेट गैस | ज़लन | बदहज़मी | गट हैल्थ | कब्ज़ | मुँह की दुर्गंध | कील मुहांसे | झड़ते बाल | ध्यान लगाने में परेशानी (ADHD)

गले में खराश | कफ खांसी | सांस रोग | एलर्जी | चर्म रोग | चक्कर आना | याददाश्त | छाईयां और झुर्रियां | हाथ पैर सुन्न होना | जोड़ों के दर्द में सहायक



JOLLY तुलसी 5I ड्रॉप्स

5-5 बूँदें सुबह शाम, स्वस्थ निरोगी जीवन में मददगार

अच्छे मैडिकल स्टोर पर उपलब्ध ✆ 98143-30500 JOLLYorganic.com

ट्रंप ने जलाया दीया, तोहफे में मिली 'हनुमान चालीसा'

एजेंसी ⏭ वॉशिंगटन डीसी



देशभर में इस समय दिवाली की धूम है। दीपों के इस त्योहार का उल्लास भारत के साथ-साथ विदेश में भी देखने को मिल रहा है। अमरीका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने भी दिवाली का पावन पर्व मनाया है। उन्होंने व्हाइट हाउस के ओवल ऑफिस में दीया जलाकर दिवाली का जश्न मनाया। ओवल ऑफिस में दिवाली का खास कार्यक्रम आयोजित किया गया था। इस दौरान अमरीका में भारत के राजदूत विनय मोहन क्वात्रा सहित कई प्रमुख भारतीय-अमेरिकी प्रशासनिक अधिकारी, बड़े बिजनेसमैन और दिग्गज कंपनियों के सीईओ मौजूद रहे। व्हाइट हाउस में ट्रंप ने ओवल ऑफिस में दीया जलाकर दिवाली का जश्न शुरू किया। गोक्वी टेक्नोलॉजीज के फाउंडर और सीईओ ⏭शेष पेज 4 पर

पीओके में पाक आर्मी की फायरिंग, 2 की मौत

श्रीनगर। पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर (पीओके) के रावलकोट में पाकिस्तानी सेना ने प्रदर्शनकारियों पर फायरिंग कर दी। इसमें 2 लोगों की मौत हो गई।

शुभम करोति कल्याणम, अरोग्यम धन संपदा,
शत्रु-बुद्धि विनाशाय:, दीप: ज्योति नमोस्तुते।।

शुभ दीपावली



इस दिवाली पर खुशियों का प्रकाश फैलाएं,
मिट्टी के दीप, मिट्टी की वस्तुएँ,
सजावट का छोटा-मोटा स्थानीय
सामान, स्थानीय मिठाइयाँ खरीदें...
चलिए, उनके साथ मिठास
बांटते हैं जिन्हें मदद
की सर्वाधिक
जरूरत है।

Sara Juneja
Sanjeev Juneja
Co-Founders
Divisa Group of Companies

sanjeevjunejasbs | imsanjeevjuneja

डा.ऑर्थो Ayurvedic Oil, Capsules, Spray & Ointment | Roop Mantra | पेट सफा | सच्ची सहेली | EYE Mantra Ayurvedic Eye Relief Drops | ACCUMASS Gain Weight. Gain Confidence.

MushroomAD

Mushroom Soup Powder

हेल्थी बॉडी, कॉन्फिडेंस रेडी

लाखो ग्राहकों का विश्वास



MADE IN INDIA

भारत में सबसे ज्यादा बिकने वाला मशरूम उत्पाद

मशरूम के प्राकृतिक गुणों से भरपूर

- भूख व वजन बढ़ाने में सहायक
- दुबलेपन को दुर करने में सहायक
- प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में सहायक
- गैस तथा एसिडीटी के लिए भी लाभदायक
- उर्जावान बनाने व कॉन्फिडेंस बढ़ाने में सहायक
- कमजोरी हटाने व नया खुन बनाने में सहायक



सभी मेडिकल्स में उपलब्ध. For More details Trade Enquiry 9373556677, 9823286830

SS - पंकज मेडीकोज, बिलासपुर -6261187686, नथानी एजेंसी, रायपुर - 7746032260, राजनांदगाव - महेश एजन्सी-7000616262, तासचंद चितलांगीया | कं. -8889669996

यमन में हवाई हमलों में 22 लोगों की मौत

काहिरा। यमन की राजधानी सना के पास एक कस्बे में शनिवार को हुए हवाई हमलों में 22 लोगों की मौत हो गई और 30 अन्य घायल हो गए। हूती विद्रोहियों के नियंत्रण वाले स्वास्थ्य मंत्रालय के एक प्रवक्ता ने यह जानकारी दी। प्रवक्ता अनीस अलासबाही ने समाचार एजेंसी 'एसोसिएटेड प्रेस' से बातचीत में सऊदी अरब पर अल-शरिया गांव में हवाई हमले करने का आरोप लगाया। इस संबंध में सऊदी अरब की ओर से तत्काल कोई प्रतिक्रिया नहीं आई। ये हमले दक्षिणी यमन के एक बाजार पर हुए हमलों में 30 लोगों के मारे जाने की हूती अधिकारियों की घोषणा के एक दिन बाद हुए। ईरान समर्थित हूती विद्रोहियों और सऊदी अरब समर्थित यमन की सेना ने उस हमले के लिए एक-दूसरे को जिम्मेदार ठहराया था।

एसआईआर : चौथे न्यायाधीश का इस्तीफा

कोलकाता। कलकत्ता उच्च न्यायालय के सेवानिवृत्त न्यायाधीश बिस्वजीत बसु ने व्यक्तिगत कारणों का हवाला देते हुए पश्चिम बंगाल के एसआईआर अधिकरणों से इस्तीफा दे दिया है। एक विश्वसनीय सूत्र ने शनिवार को यह जानकारी दी। मतदाता सूचियों के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) पैनल के प्रमुख के रूप में नियुक्त किए गए 19 सेवानिवृत्त न्यायाधीशों में से, इस्तीफा देने वाले वह चौथे न्यायाधीश हैं। बसु का इस्तीफा, कलकत्ता उच्च न्यायालय के पूर्व मुख्य न्यायाधीश टी एस शिवज्ञानम और सेवानिवृत्त न्यायाधीश रंजीत कुमार बाग तथा न्यायमूर्ति इंद्रजीत चटर्जी के इस्तीफों के बाद आया है।

लिक्विड फंड चुनने में रिटर्न नहीं पोर्टफोलियो का दम देखें

विश्लेषण में दिए गए आंकड़े डायरेक्ट ग्रोथ प्लान के हैं। तीनों फंडों के रिटर्न में अंतर बहुत कम है। उदाहरण के लिए, फ्रैंकलिन के 6.49 प्रतिशत और टाटा के 6.43 प्रतिशत रिटर्न के बीच एक लाख रुपये के निवेश पर एक साल में करीब 57 रुपये का अंतर बनता है। इसलिए केवल मामूली अधिक रिटर्न के आधार पर फंड चुनना उचित नहीं है। लिक्विड फंड में भी क्रेडिट जोखिम और ब्याज दर से जुड़ा जोखिम हो सकता है। इनका रिटर्न निश्चित नहीं होता और यह बैंक जमा की तरह गारंटीड नहीं है। निवेश से पहले अपनी जरूरत, निवेश की अवधि और जोखिम क्षमता का आकलन करें तथा जरूरत पड़ने पर वित्तीय सलाहकार से परामर्श लें।

- 36 फंडों के एक साल के रिटर्न में सिर्फ 0.80% अंक का अंतर
- फ्रैंकलिन, यूनियन और टाटा लिक्विड फंड ने बनाई अहम जगह
- एक साल में 6.42 से 6.52 प्रतिशत तक रहा रिटर्न
- तीन फंडों ने रिटर्न के साथ जोखिम प्रबंधन में भी दिखाया संतुलन

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

बचत खाते में पैसा रखने के बजाय बेहतर रिटर्न की तलाश करने वाले निवेशकों के लिए लिक्विड म्यूचुअल फंड एक विकल्प हो सकते हैं। ये फंड आमतौर पर 91 दिनों तक की परिपक्वता वाली ऋण प्रतिभूतियों में निवेश करते हैं। कम अवधि के कारण इनमें ब्याज दरों में बदलाव का असर अपेक्षाकृत जल्दी दिखाई दे सकता है।



हालांकि, इन्हें बैंक की सावधि जमा की तरह पूरी तरह जोखिम-मुक्त नहीं माना जाना चाहिए। ऐसे में लिक्विड फंड चुनते समय केवल पिछले रिटर्न के बजाय उसके पोर्टफोलियो, खर्च और जोखिम के पैमानों को समझना जरूरी है। फाइनेंशियल एक्सप्रेस में प्रकाशित इक्विटीमास्टर के विश्लेषण के अनुसार, पिछले एक साल में लिक्विड फंड श्रेणी का औसत मध्य रिटर्न 6.42 प्रतिशत रहा। कम से कम तीन साल का रिकॉर्ड रखने वाले 36 फंडों में सबसे बेहतर रिटर्न 6.52 प्रतिशत और सबसे कम 5.72 प्रतिशत रहा। यानी दोनों के बीच केवल 0.80 प्रतिशत अंक का अंतर था। ऐसे में निवेश का फैसला करते समय फंड के पोर्टफोलियो और जोखिम अनुपात की भूमिका अहम हो जाती है। विश्लेषण में एक साल के रिटर्न के साथ मानक विचलन, शार्प और सॉर्टिनो अनुपात को भी आधार बनाया गया। इसी आधार पर तीन लिक्विड फंड सामने आए।

1. फ्रैंकलिन इंडिया लिक्विड फंड

फ्रैंकलिन इंडिया लिक्विड फंड ने एक साल में 6.49% रिटर्न दिया। 36 फंडों में इसका स्थान तीसरा रहा। शार्प अनुपात 1.99 के साथ यह छठे स्थान पर रहा। छह महीने के प्रदर्शन में इसने 3.21% रिटर्न दिया, जो इन तीनों फंडों में सबसे अधिक था। इसके पोर्टफोलियो का करीब 81% हिस्सा ए1+ रेटिंग वाली प्रतिभूतियों में है। इसके अलावा 3.8 प्रतिशत एएए रेटिंग वाले निवेश और 0.5 प्रतिशत ट्रेजरी बिल में है। करीब 14.7% हिस्सा नकदी और कॉल मनी में रखा गया है। तीनों फंडों में इसका नकदी हिस्सा सबसे अधिक है। इसकी औसत परिपक्वता अवधि 35 दिन और पोर्टफोलियो यील्ड 6.34 प्रतिशत है। डायरेक्ट ग्रुपर इंस्टीट्यूशनल प्लान का आधार व्यय अनुपात 0.12% बताया गया है।

2. यूनियन लिक्विड फंड

यूनियन लिक्विड फंड ने एक साल में 6.44 प्रतिशत रिटर्न दिया और 36 फंडों में 14वां स्थान हासिल किया। हालांकि, इसका शार्प अनुपात 2.02 रहा, जो इन तीनों में सबसे बेहतर है। इसका मानक विचलन 0.22 प्रतिशत रहा, जो तीनों फंडों में सबसे कम है। फंड के पोर्टफोलियो का करीब 91 प्रतिशत हिस्सा ए1+ रेटिंग वाली प्रतिभूतियों में है। इसमें 15.2 प्रतिशत सरकारी प्रतिभूतियां और 5.4 प्रतिशत एएए रेटिंग वाले निवेश शामिल हैं। इसका पोर्टफोलियो यील्ड 6.58 प्रतिशत है, जो इन तीनों में सबसे अधिक है। डायरेक्ट प्लान का खर्च अनुपात 0.06 से 0.07 प्रतिशत के बीच है। इसकी औसत परिपक्वता अवधि करीब 58 दिन है।

3. टाटा लिक्विड फंड

टाटा लिक्विड फंड ने एक साल में 6.43 प्रतिशत रिटर्न दिया। शार्प अनुपात 1.95 रहा। इसका मानक विचलन 0.23 प्रतिशत है। पोर्टफोलियो का करीब 85 प्रतिशत हिस्सा ए1+ रेटिंग वाली प्रतिभूतियों में और 17 प्रतिशत सरकारी प्रतिभूतियों में है। इसकी औसत परिपक्वता अवधि 53 दिन और पोर्टफोलियो यील्ड 6.44 प्रतिशत है। तीनों फंडों में इसका आकार सबसे बड़ा है। यह सितंबर 2004 में शुरू हुआ था।

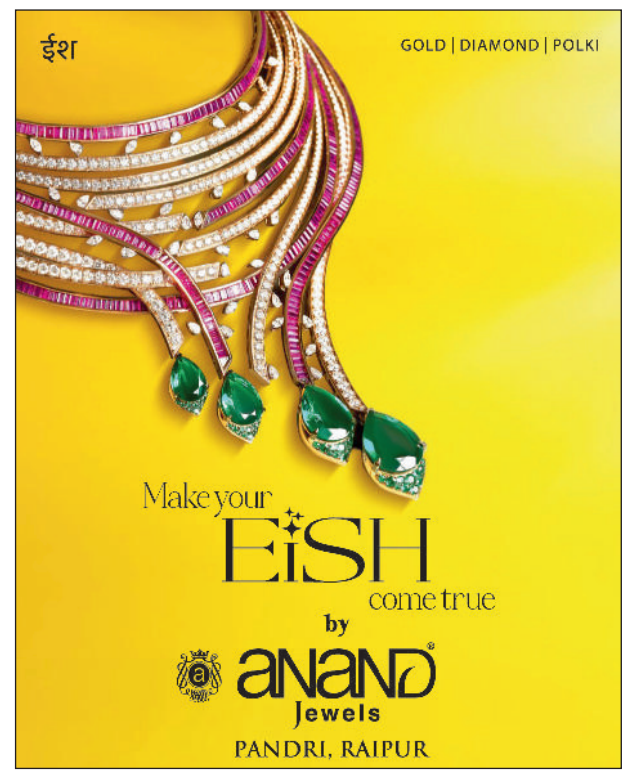

निवेश से पहले इन बातों का रखें ध्यान

लिक्विड फंड चुनते समय केवल एक साल के रिटर्न को आधार बनाना सही नहीं है। फंड की प्रतिभूतियों की रेटिंग, पोर्टफोलियो में सरकारी निवेश की हिस्सेदारी, औसत परिपक्वता अवधि और खर्च अनुपात को भी देखना चाहिए। शार्प और सॉर्टिनो अनुपात से जोखिम के मुकाबले मिले रिटर्न को समझने में मदद मिलती है। विश्लेषण में दिए गए आंकड़े डायरेक्ट ग्रोथ प्लान के हैं। तीनों फंडों के रिटर्न में अंतर बहुत कम है। उदाहरण के लिए, फ्रैंकलिन के 6.49 प्रतिशत और टाटा के 6.43 प्रतिशत रिटर्न के बीच एक लाख रुपये के निवेश पर एक साल में करीब 57 रुपये का अंतर बनता है। इसलिए केवल मामूली अधिक रिटर्न के आधार पर फंड चुनना उचित नहीं है।

कम कमाई में भी शुरू करें निवेश, वेतन बढ़ने पर बचत की रकम बढ़ाएं

जानकारी
बिजनेस डेस्क

करियर की शुरुआत में कम वेतन के कारण कई युवा बचत और निवेश को टालते रहते हैं। उन्हें लगता है कि अच्छी कमाई शुरू होने के बाद ही पैसा बचाया जा सकता है। लेकिन आर्थिक मजबूती के लिए बड़ी आय से ज्यादा जरूरी है बचत की आदत और समय पर निवेश की शुरुआत। एक 26 वर्षीय युवा की वित्तीय यात्रा बताती है कि कैसे 18 हजार रुपये महीने की कमाई से शुरुआत करके तीन साल में सालाना 50 लाख रुपये के कंपनी पैकेज तक पहुंचा जा सकता है और निवेश के जरिए अच्छी-खासी संपत्ति बनाई जा सकती है। वर्ष 2023 में इस युवा का मासिक वेतन करीब 18 हजार रुपये था। उन्होंने शुरुआत में ही पांच हजार रुपये की मासिक एसआईपी शुरू कर दी। तीन साल में उनका सालाना पैकेज बढ़कर 50 लाख रुपये हो गया और वित्तीय संपत्ति करीब 65 से 75 लाख रुपये तक पहुंच गई। इस दौरान मई 2026 में नौकरी भी चली गई, लेकिन आपातकालीन बचत ने आर्थिक मुश्किलों से निपटने में मदद की। इस अनुभव से युवा सात अहम सबक सीख सकते हैं।

युवा कैसे बचाएं पैसे, ये सात टिप्स निभाएंगे अहम भूमिका

आपातकालीन कोष बनाएं

अच्छी नौकरी और ऊंचा वेतन भी नौकरी जाने के जोखिम को खत्म नहीं करते। इसलिए कम से कम छह महीने के जरूरी खर्च के बराबर रकम अलग रखें। इसे बचत खाते, सावधि जमा या ऐसे सुरक्षित विकल्पों में रखें, जहां जरूरत पड़ने पर पैसा आसानी से मिल सके। इस रकम को शेयर बाजार जैसे जोखिम वाले निवेश में न लगाएं। संबंधित युवा के पास नौकरी जाने के समय छह लाख रुपये का आपातकालीन कोष था, जिसे बाद में बढ़ाकर सात से आठ लाख रुपये कर लिया गया।

5. सीटीसी और हाथ में आने वाले वेतन का अंतर समझें

कंपनी का सालाना पैकेज यानी सीटीसी बैंक खाते में आने वाली रकम नहीं होता। इसमें मूल वेतन के अलावा बोनस, भविष्य निधि, कंपनी के शेयर और दूसरी सुविधाएं शामिल हो सकती हैं। इसलिए नौकरी बदलते समय केवल बड़े पैकेज से प्रभावित न हों। कर और दूसरी कटौतियों के बाद हर महीने मिलने वाली वास्तविक रकम का हिसाब लगाएं। उसी के आधार पर खर्च, बचत और निवेश की योजना बनाएं।



वेतन बढ़ते ही जीवनशैली महंगी न करें

नौकरी में वेतन बढ़ने के साथ महंगे फोन, वाहन, कपड़े और बाहर खाने पर खर्च बढ़ाना आसान है। इसे जीवनशैली का विस्तार कहा जाता है। यदि हर वेतन वृद्धि के साथ खर्च भी उतनी ही तेजी से बढ़ेगा तो बचत सीमित रह जाएगी। वेतन बढ़ने पर पहले निवेश की रकम बढ़ाएं और फिर जरूरत के अनुसार खर्च तय करें।

पूरा पैसा एक ही निवेश विकल्प में न लगाएं

संपत्ति बनाने के लिए निवेश में विविधता जरूरी है। म्यूचुअल फंड, शेयर, सोना और सुरक्षित बचत विकल्पों में अपनी जोखिम क्षमता और लक्ष्य के अनुसार पैसा बांट सकते हैं। किसी एक शेयर या तेजी से मुनाफा देने वाले विकल्प के पीछे पूरी बचत न लगाएं। नियमित निवेश और लंबी अवधि का नजरिया अपनाएं। बाजार में उतार-चढ़ाव के कारण निवेश का मूल्य घट-बढ़ सकता है, इसलिए रिटर्न की गारंटी मानकर न चलें। आर्थिक योजना केवल अपनी जरूरतों और शौक तक सीमित नहीं होनी चाहिए।

दिवाली पर गोल्ड या सिल्वर ईटीएफ में कहां लगाएं पैसा?

तैयारी
बिजनेस डेस्क

दिवाली पर सोना खरीदना शुभ माना जाता है। इसी वजह से कई निवेशक त्योहार के मौके पर गोल्ड और सिल्वर में पैसा लगाने की योजना बनाते हैं। हालांकि, अब भौतिक सोने-चांदी के साथ एक्सचेंज ट्रेडेड फंड (ईटीएफ) भी निवेश का एक विकल्प बन गए हैं। इनके जरिये निवेशक बिना धातु को खरीदे और संभालकर रखे, उसकी कीमतों में होने वाले बदलाव का लाभ ले सकते हैं। लेकिन सवाल यह है कि इस दिवाली गोल्ड ईटीएफ

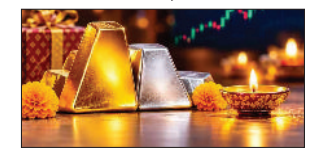

बेहतर रहेगा या सिल्वर ईटीएफ? इसका जवाब केवल पिछले रिटर्न में नहीं, बल्कि निवेश के उद्देश्य और जोखिम उठाने की क्षमता में छिपा है। सोना और चांदी दोनों कीमती धातुएं हैं, लेकिन इनके दाम तय होने के कारक अलग-अलग हैं। सोना आर्थिक अनिश्चितता और महंगाई के दौर में निवेशकों के लिए सुरक्षा का माध्यम माना जाता है। वहीं, चांदी का इस्तेमाल औद्योगिक गतिविधियों में भी होता है। इसलिए इसकी कीमत पर निवेश की मांग के साथ उद्योगों की जरूरत का भी असर पड़ता है। इसमें तेजी के साथ गिरावट की आशंका भी अधिक रहती है। निवेश से पहले इन पांच बातों को समझना जरूरी है।

सोने और चांदी की भूमिका को समझें

गोल्ड ईटीएफ और सिल्वर ईटीएफ को एक जैसा निवेश विकल्प नहीं मानना चाहिए। सोना आमतौर पर आर्थिक अनिश्चितता, महंगाई और बाजार में अस्थिरता के दौरान पोर्टफोलियो को संतुलन देने में मदद करता है।

अलर्ट 10 हजार की मासिक एसआईपी में 10 साल बाद 1.45 लाख का अंतर संभव

निवेश में अनुशासन और सही फंड का चयन भी जरूरी

समझदारी
बिजनेस डेस्क

म्यूचुअल फंड में निवेश करने वालों के लिए खर्च घटाने और लंबी अवधि में बेहतर कोष बनाने का एक नया अवसर सामने आया है। बाजार नियामक भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (सेबी) के फैसले के अनुसार, एक नवंबर से म्यूचुअल फंड कंपनियों की वेबसाइटों पर डायरेक्ट प्लान डिफॉल्ट विकल्प के रूप में उपलब्ध होंगे। इसका उद्देश्य निवेशकों को कम खर्च वाले विकल्प की ओर प्रोत्साहित करना है। हालांकि, जिन निवेशकों को फंड चुनने, पोर्टफोलियो की निगरानी और बाजार के उतार-चढ़ाव के दौरान मार्गदर्शन की जरूरत है, वे रेगुलर प्लान भी चुन सकेंगे। इस बदलाव से निवेशकों के सामने अब यह समझने का अवसर है कि उन्हें केवल कम खर्च वाला विकल्प चुनना है या विशेषज्ञ की सलाह के साथ निवेश को आगे बढ़ाना है।

कम खर्च में निवेश, लंबी अवधि में बड़ा फायदा

म्यूचुअल फंड वेबसाइटों पर एक नवंबर से डायरेक्ट प्लान डिफॉल्ट विकल्प

क्या है डायरेक्ट व रेगुलर प्लान का अंतर

म्यूचुअल फंड में निवेश के लिए मुख्य रूप से दो विकल्प होते हैं। डायरेक्ट प्लान में निवेशक सीधे म्यूचुअल फंड कंपनी के माध्यम से निवेश करता है। इसमें वितरक या एजेंट का कमीशन शामिल नहीं होता, इसलिए इसका व्यय अनुपात यानी एक्सपेंस रेशियो कम रहता है। दूसरी ओर, रेगुलर प्लान में निवेशक वितरक या एजेंट के माध्यम से निवेश करता है। इसके बदले फंड के खर्च में वितरक का कमीशन भी शामिल रहता है। दोनों प्लान में निवेश एक ही फंड और पोर्टफोलियो में होता है, लेकिन खर्च अलग होने के कारण लंबी अवधि में मिलने वाले रिटर्न में अंतर आ सकता है। डायरेक्ट प्लान की शुरुआत वर्ष 2013 में हुई थी।

फंड के अनुसार अलग है खर्च का अंतर

डायरेक्ट और रेगुलर प्लान के बीच एक्सपेंस रेशियो का अंतर फंड की श्रेणी के अनुसार बदलता है। लार्ज कैप फंड में यह अंतर करीब 0.7 से 0.8 प्रतिशत, मिड कैप फंड में 1 से 1.3 प्रतिशत और फ्लेक्सी कैप फंड में 0.8 से 1 प्रतिशत तक हो सकता है। लिक्विड फंड में यह अंतर अपेक्षाकृत कम, करीब 0.15 से 0.3 प्रतिशत रहता है। कम खर्च का फायदा शुरुआत में भले ही छोटा दिखाई दे, लेकिन लंबी अवधि में चक्रवृद्धि की वजह से इसका प्रभाव बड़ा हो सकता है। निवेशक को यह समझना चाहिए कि खर्च में कमी का अर्थ निश्चित रूप से अधिक रिटर्न नहीं है, क्योंकि फंड का प्रदर्शन बाजार की परिस्थितियों पर भी निर्भर करता है।



10 हजार की एसआईपी में 1.45 लाख रुपये का अंतर

डायरेक्ट और रेगुलर प्लान के बीच खर्च का प्रभाव एक उदाहरण से समझा जा सकता है। यदि कोई निवेशक मिड कैप फंड में हर महीने 10 हजार रुपये की एसआईपी करता है और 14 प्रतिशत सालाना अनुमानित रिटर्न मानकर 10 साल तक निवेश बनाए रखता है तो डायरेक्ट प्लान में करीब 24.66 लाख रुपये का कोष बन सकता है। वहीं, रेगुलर प्लान में यह राशि करीब 23.21 लाख रुपये रह सकती है। इस तरह दोनों विकल्पों के बीच लगभग 1.45 लाख रुपये का अंतर हो सकता है। यदि निवेश की अवधि 20 साल कर दी जाए तो खर्च में अंतर और उस पर मिलने वाले संभावित चक्रवृद्धि लाभ का प्रभाव भी बढ़ जाता है। हालांकि, यह केवल अनुमानित गणना है। वास्तविक रिटर्न बाजार के प्रदर्शन, फंड के खर्च और निवेश की अवधि के अनुसार अलग हो सकता है।

रेगुलर प्लान में मिलता है मार्गदर्शन का लाभ

कम एक्सपेंस रेशियो डायरेक्ट प्लान का बड़ा फायदा है, लेकिन निवेश में केवल लागत ही महत्वपूर्ण नहीं होती। बाजार में गिरावट, आर्थिक अनिश्चितता और फंड के प्रदर्शन में उतार-चढ़ाव के दौरान निवेशक कई बार घबराकर पैसा निकाल लेते हैं। ऐसे समय में वितरक निवेशकों को धैर्य बनाए रखने, पोर्टफोलियो की समीक्षा करने और जरूरत के अनुसार निवेश में बदलाव करने में मदद कर सकते हैं। आंकड़ों के अनुसार, मार्च 2026 में पांच साल से अधिक समय तक निवेश बनाए रखने वाले रेगुलर प्लान के निवेशकों की हिस्सेदारी 23.5 प्रतिशत थी, जबकि डायरेक्ट प्लान में यह 14 प्रतिशत रही। इससे निवेश के दौरान मार्गदर्शन और अनुशासन की अहमियत सामने आती है।

डायरेक्ट प्लान की ओर बढ़ रहा निवेशकों का रुझान

एम्फी-क्रिसिल फैक्टबुक 2026 के आंकड़ों के अनुसार, डायरेक्ट प्लान में खुदरा निवेशकों की हिस्सेदारी मार्च 2021 में 21.4 प्रतिशत थी, जो मार्च 2026 में बढ़कर 36.7 प्रतिशत हो गई। डिजिटल निवेश मंचों की उपलब्धता और वित्तीय जागरूकता बढ़ने से युवा निवेशक खुद फंड चुनने में अधिक रुचि दिखा रहे हैं। 18 से 34 वर्ष आयु वर्ग में डायरेक्ट प्लान का रुझान अधिक है। इसके विपरीत, 58 वर्ष से अधिक आयु के निवेशकों में रेगुलर प्लान की हिस्सेदारी मार्च 2021 के 18.5 प्रतिशत से बढ़कर मार्च 2026 में 22.4 प्रतिशत हो गई।

सलाह लेकर भी चुन सकते हैं डायरेक्ट प्लान

निवेशकों के पास एक तीसरा रास्ता भी है। वे सेबी में पंजीकृत निवेश सलाहकार से शुल्क देकर वित्तीय सलाह ले सकते हैं और इसके बाद डायरेक्ट प्लान में निवेश कर सकते हैं। इसमें सलाह का शुल्क फंड के खर्च से अलग रहता है। इस व्यवस्था में निवेशक को फंड चयन और वित्तीय योजना के लिए विशेषज्ञ की मदद मिल सकती है, जबकि वितरक के कमीशन का अतिरिक्त खर्च नहीं देना पड़ता। हालांकि, सलाहकार का चयन करते समय उसकी योग्यता, पंजीकरण और शुल्क व्यवस्था की जांच करना जरूरी है।

निवेश से पहले इन बातों का रखें ध्यान

- केवल कम एक्सपेंस रेशियो देखकर किसी फंड में निवेश न करें। उसके पिछले प्रदर्शन, निवेश रणनीति और जोखिम का आकलन करें।
- अपनी आय, वित्तीय लक्ष्य और जोखिम उठाने की क्षमता के अनुसार फंड की श्रेणी चुनें।
- बाजार में गिरावट आने पर जल्दबाजी में एसआईपी बंद करने या निवेश निकालने से बचें।
- समय-समय पर पोर्टफोलियो की समीक्षा करें और जरूरत के अनुसार संतुलन बनाए रखें।
- यदि फंड और बाजार की पर्याप्त समझ नहीं है तो विशेषज्ञ की सलाह लेने में संकोच न करें।

अनुशासन भी जरूरी

डायरेक्ट प्लान निवेश की लागत घटाने का अवसर जरूर देता है, लेकिन केवल इसी आधार पर निवेश का फैसला करना उचित नहीं है। सही फंड का चयन, निवेश की अवधि, जोखिम की समझ और नियमित निवेश बनाए रखना भी उतना ही जरूरी है। निवेशक को अपनी जानकारी और जरूरत के अनुसार डायरेक्ट या रेगुलर प्लान चुनना चाहिए। लंबी अवधि में बेहतर कोष बनाने का रास्ता केवल कम खर्च से नहीं, बल्कि सही रणनीति और अनुशासित निवेश से तैयार होता है।

तरकश

संजय के दीक्षित

36 सीटों पर नजर

राष्ट्रीय अध्यक्ष बनने के बाद नितिन नबीन पहली बार छत्तीसगढ़ आ रहे हैं। उनका फर्स्ट विजिट कांग्रेस के उस गढ़ में हो रहा, जहां 46 साल में बीजेपी सिर्फ दो बार जीत पाई है। 1980 में धर्मजयगढ़ विधानसभा सीट के बनने के बाद चनेशराम राठिया लगातार पांच बार विधायक बने और एमपी के समय वे पीडब्लूडी जैसे अहम विभाग के मिनिस्टर रहे। 2003 और 2008 में बीजेपी के ओमप्रकाश राठिया ने जरूर जीत दर्ज की। मगर उनके बाद 2013, 2018 और 2023 के चुनाव में कांग्रेस के लालजीत सिंह राठिया जीत की हैट्रिक बना चुके हैं। दरअसल, बीजेपी कांग्रेस के उस परंपरागत गढ़ में सेंध लगाने की तैयारी में है, जहां बरसों से उसे जीत नहीं मिली है। इसीलिए जनजातीय गौरव दिवस मनाने के लिए धर्मजयगढ़ को चुना गया। वैसे, प्रदेश प्रभारी स्मृति ईरानी ने भी छत्तीसगढ़ दौरे में कांग्रेस के उन अभेद्य गढ़ों के बारे में बात की थी। चर्चा में, ये बात आई थी कि कांग्रेस ने आखिर विपरीत हवा होने के बाद भी 36 सीटें कैसे जीत ली। बता दें, छत्तीसगढ़ में कई ऐसी सीटें हैं, जहां बीजेपी कभी नहीं जीती। मसलन, बिलासपुर जिले की कोटा विधानसभा सीट। बीजेपी संगठन की सबसे बड़ी नाकामी यह है कि राज्य बनने के बाद करीब 18 साल की सत्ता में वहां के लिए ढंग का एक प्रत्याशी तैयार नहीं कर पाई। पिछले विधानसभा चुनाव में 300 किलोमीटर दूर जशपुर से प्रबलप्रताप सिंह जूदेव को बुलाकर मैदान में उतारा गया था। कांग्रेस को लगातार मिल रही ऐसी सीटों पर बीजेपी का फोकस अब बढ़ेगा। क्योंकि, स्मृति ईरानी की बैठकों ये प्रश्न आया था कि आखिर, छत्तीसगढ़ कांग्रेस का सबसे मजबूत गढ़ कैसे बना हुआ है। जाहिर है, 2018 में बीजेपी 15 सीटों पर सिमट गई थी मगर कांग्रेस कभी भी 36 सीट से कम नहीं हुई।

47 की सुरक्षा समाप्त

मओवाद खतम होने के बाद राज्य सरकार ने 47 नेताओं की सुरक्षा समाप्त कर दी है। इनमें से 44 नेताओं के बारे में कहा गया है कि संबंधित जिलों के एसपी जरूरत की दुष्टि से फैसला लें। याने कहने का आशय यह है कि इन 44 की वीआईपी सिक्योरिटी अब गई। जुलाई में प्रोटेक्शन रिव्यू ग्रुप की बैठक हुई थी, उसके बाद भले ही आदेश निकलने में विलंब हुआ मगर डिसिजन ठीकठाक रहा। 116 नेताओं, अधिकारियों की सुरक्षा रिव्यू लिस्ट को देखकर कोई पक्षपात का आरोप नहीं लगा सकता। क्योंकि, बीजेपी के वर्तमान मंत्री से लेकर सत्ताधारी पार्टी के बड़े-बड़े लोगों की सुरक्षा में कटौती कई गई है। जिन नौ नेताओं की सिक्योरिटी जेड प्लस से जेड की गई है, उनमें मंत्री केदार कश्यप, पूर्व मंत्री महेश गागड़ा और पूर्व मंत्री कवासी लकमा भी शामिल हैं। यहां तक कि मुख्यमंत्री की पत्नी की सुरक्षा भी अब जेड से वाय प्लस कर दी गई है। पीसीसी चीफ दीपक बैज की सुरक्षा भी घटाई गई है। 116 की लिस्ट में 70 से अधिक बीजेपी के नेता हैं। बीजेपी नेताओं की संख्या इसलिए अधिक है क्योंकि जब नक्सलवाद चरम पर था, तब बीजेपी की सरकार थी और कई नेता नक्स्लियों के टारगेट पर थे। राज्य सभा के पूर्व सदस्य और सुप्रीम कोर्ट के वकील केटीएस तुलसी की सुरक्षा भी समाप्त की गई है। छत्तीसगढ़ से राज्यसभा में जाने की वजह से उन्हें सुरक्षा मिली थी।

ओबीसी से अध्यक्ष

दिवाली के बाद बीजेपी के प्रदेश अध्यक्ष का फैसला भी हो जाएगा। पार्टी का नया अध्यक्ष कौन होगा, इसके लिए कई नाम चर्चाओं में हैं, मगर यह निश्चित है कि ट्राईबल सीएम हैं तो अध्यक्ष अब सामान्य वर्ग से नहीं रहेगा। हालांकि, मंत्रिमंडल में ओबीसी का प्रतिनिधित्व जरूर तगड़ा है मगर संगठन का भी अपना महत्व होता है। अगर ऐसा नहीं होता तो कई ओबीसी मंत्री क्यों अध्यक्ष बनने की इच्छा रखते? अलबत्ता, सवाल यह है कि फिर बीजेपी अध्यक्ष किरण सिंहदेव को क्या जिम्मेदारी मिलेगी? सिंहदेव को मंत्री बनाए जाने की खबरें तैर रही हैं। मगर बस्तर से लता उसेंडी की दावेदारी भी प्रबल लग रही। ऐसे में, बस्तर से तीन मंत्री तो हो नही सकते। केदार कश्यप पहले से मंत्री हैं। बहरहाल, बीजेपी के स्टेट प्रेसिडेंट के लिए जिन नामों की चर्चा है, उनमें केंद्रीय राज्य मंत्री तोखन साहू, डिप्टी सीएम अरुण साव, मंत्री ओपी चौधरी और पूर्व विधायक नारायण चंदेल शामिल हैं। इनमें तोखन का पलड़ा जरा ज्यादा झुका हुआ है।

पोस्टिंग में सुरक्षा बाधा

छत्तीसगढ़ के एक डिप्टी कलेक्टर को जेड प्लस सिक्यूरिटी उनकी पोस्टिंग में बाधक बन गई है। कलेक्टर उन्हें एसडीएम बनाना चाहते हैं मगर सुरक्षा को देखते ऐसा कर नहीं पा रहे, क्योंकि डिप्टी कलेक्टर हमेशा दो दर्जन हथियारबंद जवानों के घेरे में रहते हैं। उनके आगे पुलिस की पायलट गाड़ी चलती है तो पीछे एके-47 से लैस जवानों की फॉलो गाड़ी। इतनी सुरक्षा किसी मंत्री को भी नहीं मिली है। दरअसल, उनके दिवंगत पिता बड़े प्रभावशाली कांग्रेस नेता रहे। नक्सलियों के खिलाफ लड़ने में उन्होंने पार्टी लाइन की भी परवाह नहीं की। अनुकंपा नियुक्ति के तहत उनके बेटे को डिप्टी कलेक्टर बनाया गया, मगर उनकी जेड प्लस सिक्योरिटी उनकी पोस्टिंग में रोड़ा बन गया है। अब शायद सरकार ने उनकी सुरक्षा जेड प्लस से कम कर जेड किया है। फिर भी जेड प्लस में इतनी सुरक्षा तो रहती ही है कि आम आदमी उनसे जल्दी मिल नहीं सकता। और अगर फील्ड की पोस्टिंग मिलती है तो आम लोगों से मिलना ही पड़ेगा, उनके बीच जाना होगा।

कोआर्डिनेशन की कमी?

धान खरीदी सिर्फ फूड और मार्कफेड का काम नहीं। कायदे से इसमें फूड के साथ रेवेन्य और एग्रीकल्चर का कोआर्डिनेशन बहुत जरूरी है। किसानों को बोनस कृषि विभाग देता है। इसके लिए सरकार बजट में प्रावधान करती है। तीनों विभागों के सचिवों की एक कमेटी बनाकर महीने भर पहले इस पर काम शुरू कर देना चाहिए था। जैसे मंत्रिमंडलीय उपसमिति बनाई जाती है, उस तरह किसी गंभीर और अनेक विभाग से जुड़े मसलों को लेकर एक हाई पावर कमेटी बनाई जानी चाहिए। फिर मंत्रियों और विधायकों को कंविस करना पड़ेगा कि राईस मिलरों और कोचियों की जेब में पैसा न जाने से आप चुनाव नहीं हारोगे। पिछले साल ऐसा ही तो हुआ था। सरकार ने जब सिस्टम को टाईट किया तो मंत्रियों और नेताओं में त्राहि माम मच गया था। बात पते की यह है कि राजनीतिक दलों को राज्य की चिंता भी जरूरी है। आखिर, पंजाब में देख ही रहे, क्या हो रहा। जीडीपी में देश में तीसरे नंबर पर आने वाला राज्य 16 वें नंबर पर है। और कर्मचारियों का बकाया 17 हजार करोड़ डीए न देने पर कोर्ट ने वहां के मुख्य सचिव को जुर्माना किया है।

अंत में दो सवाल आपसे?

1. क्या यह सही है कि केंद्रीय मंत्रिमंडल में होने वाले फेरबदल के बाद छत्तीसगढ़ में किसी बड़े नेता की पोस्टिंग होगी?

2. पीएससी चेयरमैन नियुक्ति की फाइल में पेंच कहां फंस गई है?

हीरो मना रहा है भारत की कला शैलियों का जश्न. पेश है तमिलनाडु के **रुबेशकुमार टी** की **तंजौर कला.**

Hero

Hero

भरोसा सोने सा खरा

दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएँ



HF Deluxe Pro

Splendor+ XTEC 2.0

हर दिन एक हीरो टू-व्हीलर® जीतने का मौका पाएं.

सोने का सिक्का और बहुत कुछ जीतने का मौका पाएं®

कैश डिस्काउंट ₹2500~ तक

इंस्टेंट कैशबैक ₹10000^ तक SBI card HDFC BANK pine labs

कम डाउन पेमेंट ₹6999^ से शुरू

कॉर्पोरेट ऑफर्स ₹2200~ तक

For bulk / institutional inquiries, please write to us at : institutionalsales@heromotocorp.com | Available in CSD

INDIA'S FIRST 5 YEAR WARRANTY* *Conditions apply

Hero GoodLife

Also Available on: Flipkart amazon.in

T&C Hero MotoCorp Ltd. Regd. Office: The Grand Plaza, Plot No.2, Nelson Mandela Road, Vasant Kunj Phase - II, New Delhi - 110070, India. I CIN: L35911DL1984PLC017354 I For further information, contact your nearest Hero MotoCorp authorized outlet or visit us on www.HeroMotoCorp.com. Accessories and features shown may not be a part of standard fitment. Always wear a helmet while riding a two-wheeler. ~Offer amount and combination of offer may vary for model/variant and states and it is applicable on select models only, for a limited time period or till stock lasts. Cash discount & Corporate offer are exclusive and can't be availed together ^Finance/Card offer are at the sole discretion of the financier/bank, Subject to their respective T&Cs, 100% finance applicable on Ex-showroom price, Offer available only on limited stores. ®Offer is only for New Goodlife members, Limited period offer-T&C apply.

TOLL FREE 1800 266 0018

अधिकृत डीलर: बिलासपुर: सत्या हीरो 9289922464, गैलेक्सी हीरो 9289922706, अंबिकापुर: आनंद हीरो 9289922359, सरगुजा हीरो 9289923110, कोरबा: शांति हीरो 9289922813, छत्तीसगढ़ हीरो 9289923057, रायगढ़: गोयल हीरो 9289922373, आदित्य हीरो 9289923091, जांजगीर: आनंद हीरो 9289922772, बैकुंठपुर: आर.के. हीरो 9289922812, जशपुर: आकाश हीरो 9289922909, **एसोशिएट डीलर:** खड़गांव: बंसल ऑटो एजेंसी 7000103415, चौरा: ओम ऑटो एजेंसी. 7000316070, सरिया: अग्रवाल ऑटो सेण्टर 9993121909, गौरेला: श्री माँ नर्मदा मोटर्स 7587796622 / 7587796611, सनावल: सोनी ऑटोमोबाइल्स 9479235816, रतनपुर: माँ महामाया मोटर्स 9754240437 / 8839972027, बलोदा: श्री कमला ऑटो 9926515216, मरवाही: राहुल ऑटोमोबाइल्स 8889467369 / 8719087320, मुंगेली: महावीर मोटर्स 9993855199, मनेन्द्रगढ़: विवेक ट्रेडर्स 6261178785, कटघोरा: श्री शारदा एंटरप्राइज 9809809925, शिवरीनारायण: सुल्तानिया ऑटा केयर 9407600319, सक्ती: गोयल ऑटो 9303571001, 7000490324, खरसिया: विजय ऑटो एजेंसी 9993093829, सीतापुर: श्रीराम हीरो, 7000043001, पत्थलगांव: ज्योति ऑटो 9406399000, सारंगढ़: गोपाल ऑटो सेंटर 9827893203, सूरजपुर: आशा ऑटोमोबाईल्स 9826440096, अकलतरा: श्री ऑटो 9424174274, कोटा: उर्मिला मोटर्स 9340252857, श्री पुष्कर मोटर्स 6268000180 / 8718888789, रामानुजगंज: प्रीति ऑटोमोबाईल 8827674000, बाराद्वार: दुर्गा ऑटो एजेंसी 8319982160, उदयपुर: बसंत ऑटोमोबाईल्स 9406022927, तपकरा: प्रीति ऑटोमोबाईल्स, 7354334545/7999851514, प्रतापपुर: तायल ऑटोमोबाईल्स 9617218005, पटना: आयुश ऑटोमोबाईल्स 8839141926, पाली: आनंद ऑटोमोबाईल 7089519999, राजपुर: महामाया एजेंसी, 9516209272 / 9340726288, मदनपुर: ओम ऑटो एजेंसी, 7000316070, सीपत: मेसर्स गणेश मोटर्स, 9993194005, महापाली: साहू ऑटोमोबाईल्स, 7746028455, लखनपुर: पीएन ऑटोमोबाइल्स, 8839193005, बटौली: इच्छा ऑटोमोबाइल्स, 8770232677, कुसमी: बोल्बम ऑटो, 8120191597, विश्रामपुर: खुशी ऑटोमोबाइल, 9826775718, झरगांव: ऐबानी मोटर्स, 7849000000, रामानुजनगर: जयसवाल ऑटो, 9926015773, बलंगी: नमो ऑटोमोबाइल्स, 9977876863, भेयाथान: आनंद ऑटोमोबाइल्स, 9977221111, प्रेमनगर: मानस ऑटोमोबाइल्स, 9131301594, लोरमी: महेश मोटर्स, 7974700929, खैरागढ़: पुष्पक बिक्री, 9425554343, भानपुरी: अपराशा ऑटोमोबाइल्स, 9981009491,**ऐडिशनल वर्कशॉप:** अम्बिकापुर: आनंद ऑटोमोबाईल्स, देवीगंज 7771008601/9289922359, **जेन्युइन स्पेअर पार्ट्स के लिए संपर्क करें: अधिकृत स्टॉकिस्ट:** ओरियन ऑटोव्हील्स 07752-252088, **अधिकृत सिटी वर्कस्:** उरगा: बालाजी सर्विस स्टेशन 279600, **डीलर एक्सटेंशन काउंटर:** बिलासपुर (सकरी) सत्या सर्विसेज़, 9111107951, गैलेक्सी हीरो (जगमल चौक) 8085152612, चम्पा: आनंद हीरो 7909901444, कोरबा: शांति हीरो, 7440299000 **Hero Sure (Buy, Sell, Exchange Any Used Two Wheeler)** बिलासपुर: सत्या हीरो 9289922464, खड़गांव: बंसल ऑटो एजेंसी 7000103415.

Cheil 33547/26

प्रथम पृष्ठ का शेष

अयोध्या में दीपोत्सव : 30...

आतिशबाजी के बीच अपने चरम पर पहुंचा। उपराष्ट्रपति सीपी राधाकृष्णन, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और राज्यपाल आनंदीबेन पटेल की मौजूदगी ने आयोजन को ऐतिहासिक बना दिया। अयोध्या दीपोत्सव के मौके पर सरयू तट के पास राम की पैड़ी पर दीयों को जलाए गए। इस दौरान पूरी अयोध्या दीपों की रोशनी से जगमग हो गई। दूसरे राज्यों से बड़ी संख्या में पहुंचे लोग 30 लाख दीयों को जलाया।

दीपोत्सव का शुभारंभ सुबह 10 बजे साकेत महाविद्यालय से श्रीराम राज्याभिषेक शोभायात्रा के साथ हुआ। करीब तीन किलोमीटर की दूरी तय कर शोभायात्रा रामकथा पार्क पहुंची। इसमें प्रदेश सरकार की उपलब्धियों को दर्शाती 14 झांकियों के साथ रामायण के सातों कांडों पर आधारित झांकियां आकर्षण का केंद्र रहीं। 14 राज्यों के 500 से अधिक कलाकारों ने अपनी-अपनी लोकसंस्कृतियों और परंपराओं की मनमोहक प्रस्तुतियां दीं।

शोभायात्रा जैसे ही साकेत महाविद्यालय से आगे बढ़ी, रामनगरी की सड़कें आस्था और उल्लास से भर उठीं। जगह-जगह खड़े अयोध्यावासियों ने पुष्पवर्षा कर कलाकारों का स्वागत किया। कहीं जय श्रीराम के जयघोष गूंज रहे थे तो कहीं लोग मोबाइल में इस ऐतिहासिक पल को कैद करने में जुटे थे। बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक में उत्साह देखते ही बन रहा था।

उपराष्ट्रपति, सीएम, राज्यपाल व संतों ने किया राजतिलक-

रामकथा पार्क में श्रीराम के राज्याभिषेक की प्रक्रिया शुरू हुई। रामचरितमानस की चौपाई 'प्रथम तिलक वशिष्ठ मुनि कीन्हा, पुनि सब बिप्रन्ह आयसु दीन्हा। सुत बिलोकि हरषीं महतारी, बार बार आरती उतारी...', मानो मंच पर साकार हो उठी। सबसे पहले उपराष्ट्रपति ने प्रभु श्रीराम का राजतिलक किया। इसके बाद मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और राज्यपाल आनंदीबेन पटेल ने तिलक कर आरती उतारी। उपमुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक सहित मंत्रिमंडल के अन्य सहयोगियों और रामनगरी के प्रमुख संतों ने भी बारी-बारी से राम दरबार की आरती की।

'जीवन की सांझ' में...

नहीं मिला, रोजी-रोटी की चिंता में

पढ़ाई छूट गई या पारिवारिक जिम्मेदारियों के चलते अक्षरों से रिश्ता नहीं जुड़ पाया। लेकिन मन में सीखने की इच्छा बनी रही।

अब उसी अधूरी इच्छा को पूरा करने का जज्बा इन बुजुर्गों को साक्षरता अभियान तक ले आया है। शिक्षा विभाग के मुताबिक इन बुजुर्गों में सीखने की इच्छाशक्ति के साथ सामाजिक बदलाव की आकांक्षा भी है। साक्षर भारत अभियान के कार्यक्रम अधिकारी जेके पाटले के अनुसार, कई बुजुर्ग अब भी पढ़ाई से जुड़ना चाहते हैं। उन्हें अभियान से जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है।

पोती ने जगाई सीखने की लौ, देवरानी-जेठानी ने थामी कलम-

कोटा ब्लॉक के अमने गांव की 68 वर्षीय पिलिया बाई और 64 वर्षीय हुलिसिया बाई रिश्ते में देवरानी-जेठानी हैं। बचपन में पढ़ाई छूट गई थी, लेकिन मन में कम से कम अपना नाम लिखने की इच्छा हमेशा रही। घर में जब पोती दसवीं पास हुई तो दोनों को बेहद खुशी हुई। पोती ने ही उन्हें पढ़ने-लिखने के लिए प्रेरित किया और साक्षरता अभियान से जोड़ा। फिर स्लेट पर क, ख, ग की पहली पाठशाला शुरू हुई। पोती उनकी गुरु बनी और दोनों ने सीखने की शुरुआत की। आज वे अपना नाम ही नहीं, पति और बच्चों के नाम भी लिख लेती हैं। उनके लिए यह सिर्फ अक्षर सीखना नहीं, बल्कि बरसों पुरानी इच्छा पूरी होने जैसा है।

दीपावली के दीप कुछ देर के लिए अंधेरा मिटाते हैं, लेकिन शिक्षा का उजाला उम्र भर रास्ता दिखाता है। बिलासपुर के इन बुजुर्गों ने साबित किया है कि जीवन की किसी भी उम्र में ज्ञान की नई शुरुआत की जा सकती है। इनके लिए इस साल की दीपावली केवल घरों में रोशनी का पर्व नहीं, बल्कि अपने भीतर अक्षरों का उजाला जगाने का उत्सव भी है।

पति-पत्नि एक...

ने अपना नाम, गांव का नाम और पूरा पता लिखा तो उनकी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। अब उनका अगला सपना कम से कम पांचवीं कक्षा पास करना है।

पता नहीं पढ़ पाए...

हासिल कर चुकी है। उम्र के

इस पड़ाव पर ठंडूराम ने उल्लास परीक्षा देकर अपना अधूरा सपना भी पूरा कर लिया।

तमनार विकासखंड के ग्राम देवगांव निवासी ठंडूराम राठिया का बचपन शिक्षा के बिना बीता। वे और उनके भाई पढ़-लिख नहीं सके। परिवार की आजीविका का प्रमुख साधन गाय-बैल चराना था। बचपन से ही इसी काम में जुटे ठंडूराम के मन में पढ़ाई की इच्छा थी, लेकिन गांव में स्कूल नहीं होने के कारण उनकी शिक्षा पहली कक्षा से आगे नहीं बढ़ सकी। जिंदगी के एक छोटे से घटनाक्रम ने उनके मन में शिक्षा का महत्व हमेशा के लिए बिठा दिया। ठंडूराम बताते हैं कि एक दिन वे रोज की तरह अपने बैलों को चराने निकले थे। रास्ते में एक व्यक्ति मिला, जिसने उन्हें कागज पर लिखे किसी स्थान का पता पूछा। वे पढ़े-लिखे नहीं थे, इसलिए उस व्यक्ति को पते के बारे में कुछ बता नहीं सके। यह छोटी-सी घटना उनके मन पर गहरा असर छोड़ गई। उन्हें महसूस हुआ कि पढ़ाई न होने के कारण इंसान सामान्य परिस्थितियों में भी असहाय हो जाता है

ठंडूराम की कहानी केवल अपने परिवार को शिक्षित करने तक

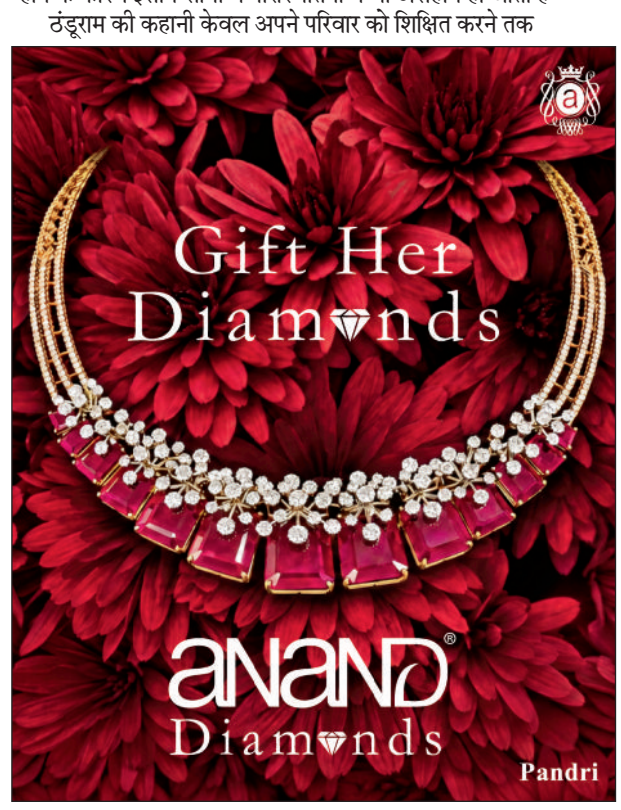

सीमित नहीं रही। उन्होंने गांव के दूसरे बच्चों के भविष्य की भी चिंता की। देवगांव शासकीय प्राथमिक शाला के प्रधान पाठक वेदव्यास महापात्र के मुताबिक, ठंडूराम पहली कक्षा तक ही पढ़ पाए थे। उस समय गांव में स्कूल नहीं होने के कारण उन्हें पढ़ाई छोड़नी पड़ी थी। शिक्षा का महत्व समझने के बाद उन्होंने गांव में स्कूल खुलवाने की पहल की।

इसके लिए ठंडूराम सहित करीब 15 युवक पैदल ही गांव से निकलकर तत्कालीन कलेक्टर से मिलने पहुंचे और देवगांव में स्कूल खोलने की मांग रखी। उनकी पहल रंग लाई और गांव में स्कूल भवन के निर्माण की शुरुआत हुई। ठंडूराम के लिए यह भावुक और गौरव का क्षण था। वर्ष 1959 में जब गांव में पहला स्कूल स्थापित हुआ, तब भवन की नींव की पहली ईंट उन्होंने ही रखी थी।

अकाल में गांव के लिए बनवाया कुआं, आज भी बुझा रहा प्यास -

ठंडूराम का योगदान केवल शिक्षा के क्षेत्र तक सीमित नहीं रहा। प्राथमिक शाला देवगांव के प्रधान पाठक वेदव्यास महापात्र बताते हैं कि एक समय क्षेत्र में भीषण अकाल पड़ा था। गांव में पानी की समस्या गंभीर हो गई थी। ऐसे कठिन समय में ठंडूराम ने ग्रामीणों को साथ लेकर कुएं का निर्माण कराया। खास बात यह है कि वर्षों पहले बनवाया गया यह कुआं आज भी उपयोग में है और ग्रामीणों की जरूरत पूरी कर रहा है।

जिस पढ़ाई को बचपन में परिस्थितियों के कारण छोड़ना पड़ा, उसका मलाल ठंडूराम के मन में हमेशा रहा। लेकिन उन्होंने उम्र को अपने सपने के आड़े नहीं आने दिया। इसी इच्छा के साथ उन्होंने उल्लास नवभारत साक्षरता कार्यक्रम के तहत परीक्षा दी और साक्षर बनने का अपना सपना पूरा किया।

नातिन ने अंतरराष्ट्रीय...

में हिस्सा लिया और दूसरा स्थान हासिल किया। आज भी ठंडूराम गांव के लोगों से लगातार अपने बच्चों को पढ़ाने की अपील करते हैं।

137 कैंसर रोधी...

कटौती 96.45 प्रतिशत रही है। भारत में अभी तक पेश नहीं की गईं करीब 10-15 चिह्नित दवाओं पर भी बाजार में आने के बाद व्यापार मार्जिन युक्तिकरण (टीएमआर) के तहत कीमतों की सीमा लागू होगी। इस फैसले से कैंसर के इलाज में इस्तेमाल होने वाली कई महत्वपूर्ण दवाओं की कीमतों में भारी कमी आई है। उदाहरण के लिए, आरपीजी लाइफ साइंसेज की स्तन कैंसर के इलाज में इस्तेमाल होने वाली कैप्सूल दवा 'पैल्बोप्रो' (पैल्बोसिक्लिब 125 मिलीग्राम) की कीमत 40,421.33 रुपये से घटकर 2,720 रुपये हो गई है। इसी तरह, अरविंदकेयर फार्मा की प्रोस्टेट कैंसर के इलाज में इस्तेमाल होने वाली गोली 'एबिरोन' (एबिराटेरोन एसीटेट 250 मिलीग्राम) की कीमत 41,250 रुपये से घटकर 3,218.23 रुपए रह गई है।

25 हजार से घटकर 3 हजार रुपए-

जाइडस लाइफसाइंसेज के फेफड़े और गर्भाशय ग्रीवा के कैंसर के इलाज में इस्तेमाल होने वाले इंजेक्शन 'ब्रिक्स्टा' (बेवासिजुमैब 100 मिलीग्राम) की कीमत 25,995 रुपए से घटकर 3,318रुपए हो गई है। वहीं, रिलायंस लाइफ साइंसेज की 'डेनऑस्टियोरेल' (डेनोसुमैब 60 मिलीग्राम) की कीमत 24,955 रुपए से घटकर 6,240रुपए रह गई है।

83 हजार की दवा 37 हजार में-

लुपिन लिमिटेड की स्तन कैंसर के इलाज में इस्तेमाल होने वाले इंजेक्शन 'लूपीहर 2' (पर्टुजुमैब 420 मिलीग्राम) की कीमत अब 83,520रुपए के मुकाबले 37,358.30 रुपए होगी। खुदरा विक्रेताओं, दवा वितरकों और अस्पतालों को अपने परिसरों और वेबसाइटों पर संशोधित मूल्य सूची प्रमुखता से प्रदर्शित करनी होगी। राज्य औषधि नियंत्रकों को इस आदेश के अनुपालन की निगरानी की जिम्मेदारी सौंपी गई है।

कनाडा में नाचा...

साथ एकत्र होकर सांस्कृतिक कार्यक्रमों, मनोरंजक गतिविधियों और आपसी मेल-मिलाप से भरी एक यादगार दोपहर का आनंद लिया। उत्सव के दौरान आयोजित विभिन्न सांस्कृतिक और मनोरंजक कार्यक्रमों ने सभी आयु वर्ग के लोगों को बांधे रखा। उपस्थित परिवारों ने बॉलीवुड अंताक्षरी और कराओके में उत्साहपूर्वक भाग लेकर पुराने और नए गीतों का आनंद लिया। वहीं बच्चों ने अपनी मनमोहक सांस्कृतिक प्रस्तुतियों से भारतीय परंपराओं की सुंदर झलक पेश की। इसके अलावा, कार्यक्रम में शामिल इंटरएक्टिव गेम्स और रफ़ल ड्रा ने माहौल में और अधिक रोमांच भर दिया। नाचा के प्रतिनिधि ने आपसी जुड़ाव और सामुदायिक भावना के महत्व पर बल दिया। उन्होंने कहा कि वास्तविक समुदाय का निर्माण केवल सोशल मीडिया या व्हाट्सएप ग्रुपों तक सीमित नहीं होता, बल्कि इसका असली उद्देश्य लोगों को प्रत्यक्ष रूप से एक साथ लाना, गहरे संबंध बनाना और अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को आने वाली पीढ़ी को सौंपना है। बता दें कि नाचा एक प्रमुख संगठन है, जो उत्तरी अमेरिका में छत्तीसगढ़िया मूल के लोगों को जोड़ने, सांस्कृतिक पहचान को सहेजने और सामाजिक सहभागिता को बढ़ावा देने के लिए लगातार प्रयासरत है।

दुबई में छत्तीसगढ़ियों...

कार्यक्रम हुआ। सांस्कृतिक कार्यक्रमों में छत्तीसगढ़ी लोकनृत्य की मनमोहक प्रस्तुतियां और कौन बनेगा छत्तीसगढ़ का बुद्धिमान शीर्षक से रोचक व संवादात्मक प्रश्नोत्तरी विशेष आकर्षण का केंद्र रहीं। इस दौरान मनीष, दिव्या त्रिपाठी, हनी थरवानी, सुमित साहनी और अली चिश्ती शामिल हुए। इस अवसर पर छत्तीसगढ़ की समृद्ध विरासत के प्रति गहरी रुचि जगाने वाली इस प्रतियोगिता-रहित प्रदर्शनी के सभी नन्हे कलाकारों को सहभागिता प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए। इस उत्सव में भिलाई, रायपुर, बिलासपुर, कोरबा सहित प्रदेश के अलग-अलग क्षेत्रों से अमित उपाध्याय, सिजो थॉमस, तोमन साहू, अमृता मिश्रा, विशाल शर्मा, खुशी टांक, श्रेया तिवारी, सुशील केशकर, वैभव क्षत्रिय, आरती अग्रवाल, पल्लवी उपाध्याय एवं प्रमोद गायकवाड़ शामिल हो रहे हैं।

ट्रंप ने जलाया दीया,...

विशाल गोंडल ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' पर इस कार्यक्रम की तस्वीरें शेयर कीं. उन्होंने ट्रंप को 'हनुमान चालीसा' भी तोहफे में दी।

ट्रंप को गिफ्ट में मिला 'हनुमान चालीसा'-

गोंडल ने लिखा, 'ओवल ऑफिस में रोशनी बांटने का एक ऐतिहासिक पल। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के साथ दिवाली मनाना मेरे लिए बेहद सम्मान की बात है। मुझे उन्हें हनुमान चालीसा की एक प्रति भेंट करने पर गर्व महसूस हो रहा है। गोस्वामी तुलसीदास का रचित ये पाठ हममें से लाखों लोग साहस, भक्ति और शक्ति के लिए पढ़ते हैं।' इस खास कार्यक्रम में अमेरिकी विदेश मंत्री मार्को रुबियो और सोशल सिक्योरिटी एडमिनिस्ट्रेशन के डिप्टी कमिश्नर अर्जुन मोदी भी शामिल हुए। इस दिवाली समारोह में भारत के राजदूत विनय मोहन क्वात्रा के अलावा जाने-माने शेफ विकास खन्ना, उद्यमी विशाल गोंडल, आईबीएम के सीईओ अरविंद कृष्णा, एफबीआई निदेशक काश पटेल और यूएस नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ हेल्थ के निदेशक जय भट्टाचार्य भी मौजूद रहे। इसके साथ ही माइक्रोन टेक्नोलॉजी के संजय मेहरोत्रा, ढाला ग्रुप ऑफ कंपनीज की अध्यक्ष और सीईओ रूबी ढाला, नैक सिस्टम्स के संस्थापक और सीईओ राजीव शर्मा, के शवम डीसी के अध्यक्ष विश्वजीत मल्लामपति, राष्ट्रपति के अतिथि हेतलकुमार पटेल और व्हाइट हाउस इवेंट्स अशर अरविंद चड्ढा भी दिवाली सेलिब्रेशन का हिस्सा बने।

व्हाइट हाउस में दिवाली उत्सव का 23 साल पुराना इतिहास-

व्हाइट हाउस में दिवाली मनाने की इस परंपरा की शुरुआत साल 2003 में तत्कालीन अमेरिकी राष्ट्रपति जॉर्ज डब्ल्यू बुश ने की थी। शुरुआती सालों में ये कार्यक्रम ज्यादातर आइजनहावर एग्जीक्यूटिव ऑफिस बिल्डिंग में भारतीय-अमेरिकी समुदाय के सदस्यों और भारतीय राजनयिकों की मौजूदगी में आयोजित किया जाता था। इसके बाद साल 2009 में राष्ट्रपति बराक ओबामा व्हाइट हाउस के ईस्ट रूम में आयोजित समारोह के दौरान खुद दीया जलाने वाले पहले अमेरिकी राष्ट्रपति बने थे। तब से लेकर आज तक व्हाइट हाउस के अलग-अलग हिस्सों जैसे ओवल ऑफिस और रूजवेल्ट रूम में दीया जलाने की ये परंपरा लगातार निभाई जा रही है।

सात समंदर पार भी नहीं भूली अपनी माटी की खुशबू



गोरेलाल सिन्हा ▶▶| गरियाबंद

दीपावली सिर्फ दीप जलाने और खुशियां मनाने का त्योहार नहीं बल्कि अपनी संस्कृति परंपराओं और अपनों से जुड़ने का भी पर्व है। इसकी रोशनी सरहदों की मोहताज नहीं होती। भारत से हजारों मील दूर अमेरिका में भी भारतीय मूल के लोग दीपावली उ सी उत्साह औ र उल्लास के साथ मनाते हैं, जैसे अपने देश की मिट्टी में रहकर मनाते हैं। इसकी एक खूबसूरत मिसाल गरियाबंद जिले के कोपरा गांव की बेटी उपासना पांडेय हैं, जो अमेरिका के सिएटल शहर में रहते हुए भी अपनी छत्तीसगढ़ी संस्कृति और परंपराओं को सहेजकर रखे हुए हैं।

- घर से दूर रहकर भी छत्तीसगढ़ी पकवानों और परंपराओं में तलाशती हैं अपनेपन का अहसास

खास खबर

कोपरा की गलियों में बचपन बिताने वाली उपासना आज अपने पति आशीष पांडेय के साथ अमेरिका में रहती हैं। वर्ष 2017 में पति के साथ अमेरिका पहुंचीं उपासना ने विदेश की चमक-दमक के बीच अपनी जड़ों को कभी नहीं भुलाया। वहां रहने वाले छत्तीसगढ़ मूल के परिवारों के साथ मिलकर वे हर वर्ष दीपावली का पर्व मनाती हैं। खास बात यह है कि इस आयोजन में सिर्फ दीप और सजावट ही नहीं बल्कि छत्तीसगढ़ी खानपान, आपसी मेल-मिलाप और अपनी माटी की संस्कृति की खुशबू भी घुली रहती है। उपासना बताती हैं कि उनका मायका कोपरा गांव में है। उनके पिता स्वर्गीय चिदानंद शुक्ला (प्रकाश) शिक्षक रहे हैं। उनकी प्राथमिक शिक्षा भी कोपरा में ही हुई। उनके भाई मेघानंद शुक्ला (उपकार) चोलामंडलम में अधिकारी हैं। उनका विवाह धमतरी जिले के चारामा निवासी आशीष पांडेय से हुआ, जो पेशे से सॉफ्टवेयर इंजीनियर हैं। जनवरी 2017 में वे पति के साथ अमेरिका चली गईं और वर्तमान में वाशिंगटन राज्य के सिएटल में रह रही हैं।

नाचा संगठन बना परदेस में अपनों का परिवार

अमेरिका में रहने वाले छत्तीसगढ़ियों को एक सूत्र में जोड़ने का काम नॉर्थ अमेरिकन छत्तीसगढ़ एसोसिएशन (नाचा) कर रहा है। इस संगठन से अमेरिका के अलग-अलग राज्यों में बसे छत्तीसगढ़ी परिवार जुड़े हुए हैं। उपासना भी इस संगठन के माध्यम से छत्तीसगढ़ी परिवारों के साथ मिलकर विभिन्न सांस्कृतिक आयोजनों और दीपावली उत्सव में भाग लेती हैं। वे बताती हैं कि हर वर्ष नाचा के साथ मिलकर दीपावली मनाने की परंपरा उनके लिए बेहद खास है। सभी छत्तीसगढ़ी परिवार अपने-अपने घरों से पारंपरिक छत्तीसगढ़ी व्यंजन बनाकर लाते हैं। फिर सब मिलकर खाते हैं एक-दूसरे से मिलते हैं और त्योहार की खुशियां साझा करते हैं।

अमेरिका में भी छत्तीसगढ़ का अहसास

उपासना पांडेय कहती हैं कि अमेरिका में रहकर भी छत्तीसगढ़ के लोगों के साथ दीपावली मनाने से हमेशा ऐसा महसूस हुआ, मानो वे अपने घर और आसपास के लोगों के बीच ही हों। यही इस आयोजन की सबसे बड़ी खूबी है। दरअसल उपासना पांडेय की यह कहानी सिर्फ विदेश में दीपावली मनाने की कहानी नहीं है बल्कि अपनी जन्मभूमि, संस्कार और सांस्कृतिक विरासत से जुड़े रहने की मिसाल भी है। कोपरा से अमेरिका के सिएटल तक का सफर तय करने के बाद भी उनके दिल में अपनी माटी के प्रति वही अपनापन है। हजारों मील दूर जलने वाले दीपों की रोशनी में उन्हें आज भी अपने गांव अपने परिवार और छत्तीसगढ़ की खुशियां दिखाई देती हैं।

तहसील न्यायालयों में बदहाल व्यवस्था सवा लाख राजस्व प्रकरण लंबित

रायपुर। प्रदेश के तहसील न्यायालयों में राजस्व प्रकरणों के निराकरण की व्यवस्था पटरी पर नहीं लौट पा रही है। यहां लंबित मामलों की संख्या लगातार बढ़ रही है। स्थिति यह है कि प्रदेश की तहसीलों में करीब सवा लाख राजस्व प्रकरण लंबित हैं। हर दिन तीन से चार हजार प्रकरणों में सुनवाई की तारीख निर्धारित की जाती है, लेकिन इनमें से 30 प्रतिशत मामलों में भी वास्तविक सुनवाई नहीं हो पाती। अधिकतर मामलों में पक्षकार और उनके वकील निर्धारित तारीख पर तहसील न्यायालय पहुंचते हैं, लेकिन किसी न किसी कारण से सुनवाई टल जाती है। इसके कारण उन्हें अगली पेशी की तारीख देकर लौटा दिया जाता है। तहसील न्यायालयों की कार्यप्रणाली का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि धनतेरस के दिन 61 राजस्व प्रकरणों में सुनवाई होनी थी।

अहलूवालिया हॉस्पिटल
81031 28515, 0771-4050006
नेमीचंद गली, रामसागर पारा, स्टेशन रोड रायपुर
• कान, नाक, गला रोग • Hearing Aids • दंत रोग • मुख के कैंसर/प्लास्टिक सर्जरी • चक्कर, खर्राटे

अष्टविनायक हॉस्पिटल
बच्चों एवं महिलाओं का अस्पताल
• प्रसूति • नवजात • शिशु रोग • सभी प्रकार के ऑपरेशन • सोनोग्राफी • आयुष्मान कार्ड • बच्चो के ऑपरेशन • अनुभवी डॉक्टर्स प्रतिदिन
आमा सिवनी, विधानसभा रोड, रायपुर (छ.ग.), 9826182221 9301744425

डायबिटिज मधुमेह का सर्वोत्तम इलाज - अब दिल्ली, मुंबई, चेन्नई क्यू जाना
मधुमीत डायबिटिज हॉस्पिटल
डॉ राका शिवहरे MBBS, MD FNIC FIPA
भर्ती सुविधा उपलब्ध
Ecg, Echo, Tmt, Doppler, Carotid, Doppler, Insulin, Pump, Cgms, Homa IR
शिव मंदिर चौक, अवंति विहार, रायपुर, फोन : 0771- 4060929, मो. 7389485756

JHAIGO Cream तो फिर क्या.. बस इस बार झाईगो क्रीम उपयोग कर देखें।
चेहरे को दागों से मुक्त कर सुंदरता बढ़ाये...
क्या आपके... चेहरे पर झाईयां है? आंखो पर काले घेरे हैं?
चेहरे पर मुहाँसे के काले निशान हैं? या जले या चोट के निशान हैं?
वैदेही तुलसी कफ सीरप
नई एवं पुरानी खांसी, एलर्जी खांसी, श्वास, निमोनिया, कुकुरखांसी, टान्सिल, ब्रानकाटिस, सर्दी आदि में तेज असर कारक
2 वर्ष से बड़े बच्चों के लिए हानिरहित कफ सिरप
HMS देखकर खरीदें एक बार उपयोग कर देखें 94060-21769

epaper- www.haribhoomi.com
हरिभूमि
Email- hbclassified375@gmail.com
Classified
आवश्यकता आपकी सुविधा हमारी
Contact For Advertisement Booking
Ring Road No.-2, Gourav Path, Bilaspur
Mo.- 9826782100

आवश्यकता है

आवश्यकता है- वृंदावन परिसर बिलासपुर में कॉस्मेटिक ज्वेलरी दुकान में काम करने हेतु स्टाफ की आवश्यकता है। अनुभवी को प्राथमिकता वेतन योग्यता अनुसार। सम्पर्क करें- महामाया कॉस्मेटिक एंड ज्वेलरी बिलासपुर 91116 11116 (42244)

आवश्यकता है- दुकान में काम करने के लिए लड़कों की आवश्यकता है वेतन योग्यता अनुसार सम्पर्क करें- अरोरा बेकरी, बृहस्पति बाजार के पास, बिलासपुर 9827164721 (42240)

बेचना है

बेचना है- नया मकान देवरीखुर्द विजय नगर बिलासपुर में 3 कमरों का डुप्लेक्स मकान हॉल, 3 बाथरूम किचन, पार्किंग सहित सर्व सुविधा युक्त मकान अतिशीघ्र बेचना है सम्पर्क करें- 9098251177, 85178 72392 (42245)

बेचना है-नगर निगम सीमा से मात्र 8 किलो मीटर दूर गनियारी, बिलासपुर में डायवर्टेड प्लॉट 400 रुपए प्रति वर्गफुट पहले आएं, पहले पाएं। सम्पर्क करें- 7000773172, 7898333307, 78058 03607 (42243)

बेचना है- सरकंडा अशोक नगर में रघु विहार के पास 2566 वर्गफिट में 2BHK का मकान नवनिर्मित शीघ्र बेचना है दीपावली ऑफर रजिस्ट्री फ्री। सम्पर्क करें- 8770336700 (42246)

बेचना है-भारत माला प्रोजेक्ट के पास नेशनल हाईवे 130A रोड से लगा 150 फ्रंट बाऊंड्री वाल से घिरा लिमतरा खैरा रोड पर स्थित (एक एकड़) जमीन शीघ्र बेचना सम्पर्क करें- 8349054531 (42185)

बेचना है- ग्राम पंचायत गनियारी गांव में स्थित सर्व सुविधा युक्त सवा तीन एकड़ का फार्म हाउस अतिशीघ्र बेचना है खरीददार ही सम्पर्क करें- 7000773172 (42242)

बेचना है- बुधिया काम्प्लेक्स सरकंडा मेन रोड फेसिंग 10×24 (240 वर्ग फिट) स्टेट बैंक सरकंडा से लगी दुकान बेचना है सम्पर्क करें- 93400 94419 (42241)



सूचना

पाठकों से अनुरोध है कि वे समाचार पत्र में प्रकाशित किसी भी विज्ञापन के संबंध में किसी भी प्रकार का कदम उठाने (पैसे भेजने, कोई भी खर्च उठाने, चिकित्सकीय सलाह, विवाह संबंधित) या किसी भी वादे-दावे पर अमल करने से पहले अच्छी तरह से जांच पड़ताल कर लें। पाठक पूर्ण जानकारी लेवें व स्वविवेक से निर्णय लेकर ही लेनदेन करें। किसी भी उत्पाद या सेवाओं के संबंध में किए किसी भी विज्ञापनदाता के किसी प्रकार के दावों की हरिभूमि (प्रेस प्रबंधक व कर्मचारी) की कोई जिम्मेदारी नहीं होगी। प्रकाशक, संपादक कर्मचारी और हरिभूमि के स्वामी किसी विज्ञापन के संबंध में उठाए किसी कदम के नतीजे और विज्ञापनदाताओं के अपने वायदों पर खरा न उतरने के लिए जिम्मेदार नहीं होंगे।

हरिभूमि में लघु विज्ञापन देने हेतु सम्पर्क करें

- जिला कार्यालय कोरबा:- बी.ब्लॉक, कॉमर्शियल कामप्लेक्स, ट्रांसपोर्ट नगर, जिला कोरबा (छ.ग.) मो. 9644018888, 7581808267
- जिला कार्यालय मुंगेली:- थाना के सामने गली, गोल बाजार, जिला-मुंगेली (छ.ग.) मो. 9303508230

- शिवम एड एजेंसी & पब्लिसिटी:-मो. 9993567380, 8770837744
- एड प्रयास:-मो. 9826701269, 9926003943
- श्यामनानी एडवरटाईजर्स:-मो. 9827168452, 9300625174
- रिद्धीसिद्धी एडवरटाइजर्स & पब्लिसिटी:-मो.9826129386, 8319503386
- जे.जे. एडवरटाइजर्स:-मो. 9300659628
- रौनक पब्लिसिटी:-मो. 9300328290, 9981658490
- भार्गव एडवरटाइजर्स:-मो. 9827167997
- श्रीसिद्धि विनायक एडवरटाइजर्स:-मो. 9826705603
- एम.जी.आर. एडवरटाइजर्स:-मो. 9827180896, 9131155033
- श्री श्याम पब्लिसिटी:-मो. 9425540759
- अमित पब्लिकेशन:-मो. 9826304304, 9827124304
- विप्रा विज्ञापन सेवा:-मो. 9302462506
- माधवास & कम्पनी:-मो. 9977185123, 9893115084
- बालाजी एडवरटाइजर्स:-मो. 9827466133, 9907047586
- हिबिस्कस मार्केटिंग एण्ड एडवर्टाइजमेंट:-मो. 8109229025

पेरिस मास्टर्स

अल्कारास के वार से फ्रिट्ज का टूटा सपना

जोडार को मिला एटीपी फाइनल्स का टिकट



एजेंसी ▶▶| पेरिस

कार्लोस अल्काराज ने टेलर फ्रिट्ज को 6-7 (10), 7-5, 6-3 से हराकर पेरिस मास्टर्स के सेमीफाइनल में जगह बना ली। अल्काराज की जीत ने फ्रिट्ज की एटीपी फाइनल्स के लिए क्वालीफाई करने की उम्मीदों को खत्म कर दिया और इसके बजाय यह पक्का कर दिया कि उनके देश के राफेल जोडार साल के आखिर में होने वाले टूर्नामेंट के लिए आखिरी जगह पक्की कर लें।

कार्लोस ने फ्रिट्ज के खिलाफ की जबरदस्त वापसी

अल्काराज ने फ्रिट्ज के खिलाफ मैच में जबरदस्त वापसी करते हुए सीजन के अपने तीसरे एटीपी मास्टर्स 1000 सेमीफाइनल में पहुंच गए। वह मैच में 36-7 (10) और 3-5 से पीछे थे और अपनी सर्व पर एक मैच पॉइंट का सामना कर रहे थे, इससे पहले कि उन्होंने एक शानदार पॉइंट जीतकर स्कोर 4-5 कर दिया। इसके बाद अल्काराज को अगले गेम में फ्रिट्ज की सर्व पर एक मैच पॉइंट बचाना पड़ा, इससे पहले कि वह उन्हें 5-5 से बराबर कर पाते। अल्काराज ने तब अपना गेम बेहतर किया जब यह सबसे ज्यादा जरूरी था, क्योंकि उन्होंने अगले दो गेम जीतकर डिसाइडर में चीजें अपने नाम कीं।

डकवर्थ लुईस प्रणाली से भारत ने न्यूजीलैंड को 4 रन से हराया, सीरीज में 2-0 की बढ़त

बारिश में भी नहीं धुला भारत का जीत का रंग

एजेंसी ▶▶| वेलिंगटन

सितारों से सजे भारतीय बल्लेबाजी क्रम की शुरुआती नाकामी के बाद केएल राहुल की संयमित पारी के दम पर भारत ने वर्षाबाधित दूसरे वनडे में शनिवार को न्यूजीलैंड को डकवर्थ लुईस प्रणाली के आधार पर 4 रन से हरा दिया। अब भारत 5 मैचों की श्रृंखला में 2-0 से आगे है। तीसरा मैच मंगलवार को हैमिल्टन में खेला जाएगा। जीत के लिए 47 ओवर में 135 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए भारत ने 26 ओवर में 7 विकेट 113 रन पर गंवा दिए थे, जब बारिश शुरू



हो गई। उस समय डकवर्थ लुईस प्रणाली के आधार पर भारत को 109 रन की जरुरत थी। भारत ने अपने तेज गेंदबाजों के शानदार प्रदर्शन की मदद से न्यूजीलैंड को 41 ओवर में 134 रन पर समेट दिया।

भारतीय गेंदबाजों ने फेंकी 176 डॉट गेंदें

आकिब नबी ने 7 ओवर में 31 रन देकर 2 विकेट लिए जबकि अंशुल कम्बोज ने 8 ओवर में 25 रन देकर 2 विकेट चटकाए । वहीं बराड़ ने 10 ओवर में 30 रन देकर 4 विकेट लिए, जो उनके कैरियर का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन है।

राहुल की संयमित पारी और तेज गेंदबाजों ने दिखाया दम



रोहित ने तोड़ा अफरीदी का वर्ल्ड रिकॉर्ड



रोहित शर्मा ने कीवी टीम के खिलाफ दूसरे वनडे मैच में 2 छक्के लगाए और वो वनडे में इस टीम के खिलाफ सबसे ज्यादा छक्के जड़ने वाले बल्लेबाज बन गए और शाहिद अफरीदी का वर्ल्ड रिकॉर्ड तोड़ दिया। शाहिद अफरीदी ने न्यूजीलैंड के खिलाफ वनडे में कुल 50 छक्के अपने करियर के दौरान लगाए थे, लेकिन रोहित ने 51 छक्के लगाते हुए उन्हें पीछे छोड़ दिया और लिस्ट में टॉप पर पहुंच गए जबकि शाहिद अफरीदी अब दूसरे नंबर पर आ गए। इससे पहले गिल ने टॉस जीतकर गेंदबाजी का सही फैसला लिया। बारिश और मौसम को देखते हुए मैच प्रति टीम 47 ओवर का कर दिया गया था। नबी ने सबसे पहले टिम सीफर्ट (0) का विकेट लिया। मिडविकेट पर खड़े कम्बोज ने सामने की ओर डाइव लगाकर कैच पकड़ा और नबी को उनका पहला अंतरराष्ट्रीय विकेट दिलाया।

जीरो पर आउट हुए गिल

जवाब में कप्तान शुभमन गिल पहली ही गेंद पर जैकब डफी का शिकार हुए और खाता खोले बिना स्लिप में कैच दे बैठे। डफी ने विराट कोहली (7) को भी पवेलियन भेजा। रोहित शर्मा ने 28 गेंद में 23 रन बनाए लेकिन सीम का सामना करने में सहज नहीं दिखे। अक्षर पटेल (7) और श्रेयस अय्यर (30) शॉर्ट गेंदों पर विकेट गंवा बैठे।

दूसरा टेस्ट : तौहीद हिरदॉय ने इतिहास रचा वेस्टइंडीज के खिलाफ जड़ा 'दोहरा शतक'



सिलहट। तौहीद हिरदॉय के नाबाद 'दोहरे शतक' की मदद से बांग्लादेश ने वेस्टइंडीज के खिलाफ पहली पारी में बढ़त हासिल की। सिलहट इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम में तौहीद 242 रन बनाकर नाबाद रहे। यह टेस्ट फॉर्मेट में किसी बांग्लादेशी बल्लेबाज की सबसे बड़ी पारी है। तौहीद ने 359 गेंदों में 11 छक्के और 22 चौके जड़ते हुए मुशफिकुर रहीम के 219* रन के पिछले रिकॉर्ड को तोड़ दिया, जो उन्होंने 2018 में जिम्बाब्वे के खिलाफ मीरपुर में बनाया था। सीरीज के दूसरे मुकाबले में टॉस जीतकर बल्लेबाजी के लिए उतरी वेस्टइंडीज की टीम ने पहली पारी में 356 रन बनाए। कैरेबियन टीम ने महज 27 रन तक 3 विकेट गंवा दिए थे, जिसके बाद आमिर जंगू ने केविन विकहम के साथ चौथे विकेट के लिए 131 रन, जबकि जस्टिन ग्रीव्स के साथ 106 रन की साझेदारी करते हुए टीम को मजबूत स्थिति में पहुंचाया। इसके जवाब में लड़खड़ाती शुरुआत के बावजूद बांग्लादेशी टीम ने पहली पारी में 386 रन बनाकर 30 रन की बढ़त हासिल कर ली। मेजबान टीम ने 51 रन तक अपने 3 विकेट गंवा दिए थे, जिसके बाद तौहीद हिरदॉय ने मोर्चा संभाला। उन्होंने मुशफिकुर रहीम के साथ चौथे विकेट के लिए 73 रन जुटाकर टीम को 124 के स्कोर तक पहुंचाया, लेकिन मुशफिकुर (34) के आउट होने के बाद टीम फिर से लड़खड़ा गई। आलम ये रहा कि 184 के स्कोर तक 7 विकेट गिर गए।

बड़ोदा की कमान कृणाल को, हार्दिक बाहर



बडोदरा। सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी 2026-27 के लिए बड़ोदा की टीम का ऐलान कर दिया गया। 14 नवंबर से शुरू होने वाले इस टी20 घरेलू टूर्नामेंट के लिए बड़ोदा टीम का कप्तान कृणाल पंड्या को बनाया गया है जबकि स्टार ऑलराउंडर हार्दिक पंड्या की मैदान पर वापसी इस टूर्नामेंट के लिए जरिए कम से कम नहीं हो पाएगी। हार्दिक पंड्या अभी पूरी तरह से फिट नहीं हैं और इसकी वजह से ही उन्हें इस टीम का हिस्सा नहीं बनाया गया है। 32 साल के हार्दिक पंड्या ने 24 मई के बाद से कोई मैच नहीं खेला है।

लंदन ओपन : क्वार्टर फाइनल में हारे सेंथिल

लंदन। भारतीय स्क्वाश खिलाड़ी वेलावन सेंथिलकुमार को लंदन ओपन के पुरुष क्वार्टरफाइनल में फ्रांस के आमिर खालिद जोयूसेलिन से उलटफेर का सामना करना पड़ा। दुनिया के 42वें नंबर के खिलाड़ी और दूसरे वरीय सेंथिलकुमार को 18000 अमेरिकी डॉलर की पुरस्कार राशि के पीएसए चैलेंजर टूर्नामेंट में दुनिया के 99वें नंबर के आमिर से 11-13, 6-11, 7-11 से हार मिली। फॉर्म में चल रहे सेंथिलकुमार ने इस हफ्त चेक ओपन में अपना दूसरा पीएसए कॉपर स्तर का खिताब जीता था।

दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे

ई–निविदा सूचना क्रमांक क्र.– एन आई टी/11/26/31, दिनांक–02.11.2026

भारत के राष्ट्रपति की ओर से वरिष्ठ मंडल सामाग्री प्रबंधक/दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे बिलासपुर संभाग निम्नलिखित सामाग्रियों हेतु ई–निविदा आमंत्रित करता है।

क्रमांक	निविदा संख्या	निविदा खुलने की तिथि	निविदा खुलने का समय	निविदा पत्र लागत (रु.)	अर्नेस्ट मनी डिपोजिट (रु.)
1	11265672	02/12/2026	10:30	00	188800.00

1) विवरण:–BOXNHL वैगनों के लिए CASNUB-22 HS कास्ट स्टील बोगी की आपूर्ति, जिसमें फ्रिक्शन डैम्पिंग व्यवस्था और फ्लैट सेंटर पिवट व्यवस्था शामिल हो। यह RDSO STR नंबर WD-17-CASNUB-22-HS-BOGIE-92 (संशोधन 4)–जिसमें जुलाई 2020 का संशोधन 6 या नवीनतम संशोधन शामिल है – और RDSO ड्राइंग नंबर WD-04078-S-01 (संशोधन 4 या नवीनतम) के अनुरुप होनी चाहिए। इसमें आइटम नंबर 1 से 18 तक (आइटम नंबर 4 और 7 को छोड़कर) असेंबल की गई स्थिति में शामिल हैं। [वारंटी अवधि: डिलीवरी की तारीख से 72 महीने]]

''निविदाकर्ता कृपया हमारी वेबसाइट https://www.ireps.gov.in पर जाएं।''

नोट:– विवरण से संबन्धित विवादास्पद मामले में मूल अंग्रेजी पाठ प्रमाणिक मानी जाएगी।

सीपीआर/10/480 वरिष्ठ मंडल सामग्री प्रबंधक, द.पू.म. रेलवे, बिलासपुर

South East Central Railway @secrail

HDFC BANK एचडीएफसी बैंक लि.

पंजीकृत कार्यालय, एचडीएफसी बैंक हाउस, सेनापति बापट मार्ग, लोअर परेल (पश्चिम), मुंबई - 400013
सक्ति शाखा : एचडीएफसी बैंक लिमिटेड, तल मंजिल, प्लॉट नं. 15, वार्ड नं. 15, गरिमा मार्बल्स के पास, स्टेशन रोड, सक्ती, छत्तीसगढ़-495689

आधिपत्य सूचना

अधिनियम की धारा 13 (4) के साथ प्रतिभूति हित प्रवर्तन नियम, 2002 के नियम 8 के अंतर्गत

जबकि, अधोहस्ताक्षरकर्ता ने एचडीएफसी बैंक लि. रुरल बैंकिंग ग्रुप, द्वितीय मंजिल, जेनिथ हाउस, केशवराव खाशडे मार्ग, महालक्ष्मी, मुम्बई-400034, का प्राधिकृत अधिकारी होते हुए वित्तीय आस्तियों का प्रतिभूतिकरण एवं पुर्नगठन और प्रतिभूति हित प्रवर्तन अधिनियम 2002 और प्रतिभूति हित प्रवर्तन नियम 2002 का सपठित नियम 13 (2) के नियम 9 के तहत प्रदत्त शक्तियों के अनुप्रयोग में ऋणी(यों) **लक्ष्मण कुमार सोनी** (ऋण खाता नंबर **50200103083844, 50200092209109, 50200092204235** को मंगनी करते हुए मांग सूचना पत्र दिनांक **21/08/2026** उक्त सूचना पत्र की प्राप्ति दिनांक से **60 दिनों** के भीतर **रुपये 4341304/- (रुपये तिरयालीस लाख इकतालीस हजार तीन सौ चार मात्र)** भावी ब्याज एवं पेनल ब्याज, अन्य चार्जेस लागत एवं अन्य के साथ सूचना पत्र में उल्लेखित राशि को लौटाने के लिए निर्गमित किया।

ऋणी(यों) के यह राशि लौटाने में विफल होने पर ऋणी(यों) और सर्वसाधारण को एतद् द्वारा सूचना-पत्र दिया जाता है कि अधोहस्ताक्षरकर्ता ने उक्त अधिनियम की धारा 13(4) सपठित उक्त नियम के नियम 8 के तहत उसको प्रदत्त शक्तियों के अनुप्रयोग में एतस्मिन नीचे वर्णित सम्पत्ति का **सांकेतिक आधिपत्य** दिनांक **04/11/2026** को ग्रहण कर लिया है।

ऋणी को विशेषत: एवं सर्वसाधारण को सामान्यत: एतद् द्वारा सम्पत्ति के साथ व्यवहार नहीं करने की चेतावनी दी जाती है और सम्पत्ति के साथ कोई व्यवहार **रुपये 4341304/- (रुपये तिरयालीस लाख इकतालीस हजार तीन सौ चार मात्र)** तक एवं उस पर ब्याज, व्यय एवं खर्चो सहित राशि के लिए एचडीएफसी बैंक लि. के प्रभार के अधीन होगा।

अचल संपत्ति का विवरण

प्रतिभूति: श्री लक्ष्मण सोनी, आत्मज श्री चंद राम सोनी के स्वामित्व वाली नगरीय संपत्ति के स्वत्व विलेख (टाइटल्डीड) जमा करके बंधक रखे जाने के संबंध में सूचना पत्र

समस्त वह अचल संपत्ति, खसरा (सर्वे) कमांक 978/3, आवासीय सह व्यावसायिक, स्थित ग्राम – कुरदा (91), तहसील – मालखरौदा, जिला – सक्ती, संपत्ति का कुल क्षेत्रफल 1291.67 वर्गफीट, **चतुर्:सीमाएं :** पूर्व: उदय राम की भूमि, पश्चिम: चुना राम का मकान, उत्तर: कांति राम की भूमि, दक्षिण: सड़क (रास्ता)

स. क्र.	मालिक का नाम	प्रकार/ प्रकृति	संपत्ति का पता
1.	श्री लक्ष्मण सोनी पिता चांदराम सोनी	आवासीय सह वाणिज्यिक	खसरा नं. 978/3, पटवारी हल्का नं. 15, राजस्व निरीक्षक मंडल (रा.नि.मं.) छपोरा, ग्राम कुरदा (91), तहसील–मालखरौदा, जिला–सक्ती, –495691

दिनांक : 04/11/2026
स्थान : छत्तीसगढ़

एचडीएफसी बैंक लि.
लक्ष्मीचंद देवांगन, प्राधिकृत अधिकारी

दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे
विविध कार्य हेतु निविदा सूचना

निविदा सूचना संख्या: सीनियर डी.ई.ई. (आर. एस. & जी.)बी.एस.पी./ओ.टी.पी./26-27-19, दिनांक 02.11.2026. कार्य का नाम: एक वर्ष की अवधि के लिए स्पेयर पार्ट्स की आपूर्ति के साथ सबमर्सिबल/ एचएससीएफ पंप और स्टार्टर की रिवाइंडिंग, मरम्मत और ओवरहालिंग। निविदा मूल्य (लगभग): ₹ 49,50,250/-. अमानत राशि: ₹ 99,000/-.

निविदा बंद होने की तिथि व समय: 30.11.2026, 15:00 बजे।

विस्तृत जानकारी/निविदा दस्तावेज का विक्रय, पात्रता का मापदंड तथा अन्य विस्तृत विवरण, निविदा दस्तावेज जो हमारी वेबसाइट www.ireps.gov.in पर उपलब्ध है, उससे देख सकते है।

वरि. मंडल विद्युत इंजी.(आर.एस.एवं सीपीआर/10/पीएल/476 सामान्य)/बिलासपुर

South East Central Railway @secrail

खबर संक्षेप



चेन्नई ओपन : वैष्णवी रुतुजा ने रचा इतिहास

चेन्नई। वैष्णवी अडकर और रुतुजा भोसले ने डब्ल्यूटीए टूर स्तर के किसी टूर्नामेंट के युगल फाइनल में पहुंचने वाली पहली भारतीय जोड़ी बनकर इतिहास रच दिया। उन्होंने चेन्नई ओपन टेनिस टूर्नामेंट के रोमांचक सेमीफाइनल में पोलैंड की वेरोनिका फाल्कोव्स्का और अमेरिका की अलाना स्मिथ की दूसरी वरीयता प्राप्त जोड़ी को 6-2 2-6 10-8 से हराया। भारतीय जोड़ी पहला सेट आसानी से जीतने के बाद दूसरे सेट में लड़खड़ा गई लेकिन उन्होंने निर्णायक सुपर टाई-ब्रेक में संयम बनाए रखा और जीत हासिल की।

श्रीलंका के खिलाफ टेस्ट खेलेंगे जमाल

रावलपिंडी। ऑलराउंडर आमिर जमाल को श्रीलंका के खिलाफ 9 नवंबर से होने वाले पहले टेस्ट मैच के लिए पाकिस्तान की टीम में शामिल किया गया है। बाएं हाथ के स्पिनर अली उस्मान और सलामी बल्लेबाज अब्दुल्ला फजल को टीम से बाहर कर दिया गया है। पाकिस्तान ने अपनी टीम में काफी बदलाव किए हैं तथा कई ऐसे खिलाड़ी टीम में शामिल किए हैं, जिन्होंने अभी तक अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट नहीं खेला है। इन खिलाड़ियों में बल्लेबाज मोहम्मद तैयब आरिफ, समीर मिन्हास, मोहम्मद सलमान, मोहम्मद ताहा और तेज गेंदबाज साकिब खान और अली शब्बीर शामिल हैं।



homefirst We'll take you home

Home First Finance Company India Limited
CIN: L65990MH2010PLC240703, Website: homefirstindia.com
Phone No.: 180030008425 Email ID: loanfirst@homefirstindia.com

परिशिष्ट-IV-A [नियम 8 (6) के परंतुक देखें]
अचल संपत्तियों की
बिक्री के लिए बिक्री सूचना

वित्तीय परिसंपत्तियों के प्रतिभूतिकरण और पुनर्निर्माण तथा सुरक्षा हित प्रवर्तन अधिनियम, 2002 के नियम 8 (6) के परंतुक के अधीन अचल परिसंपत्तियों की बिक्री हेतु ई-नीलामी बिक्री सूचना।

एतद्द्वारा आम जनता और विशेष रूप से कॉलम (ii) में वर्णित ऋणधारक(ओं) और सह-ऋणधारक(ओं) को सूचित किया जाता है कि कॉलम (iii) में वर्णित नीचे वर्णित अचल संपत्तियां सुरक्षित लेनदार के पास गिरवी/बंधक हैं, जिनका भौतिक कब्जा होम फर्स्ट फाइनेंस कंपनी इंडिया लिमिटेड के अधिकृत अधिकारी द्वारा नीचे दिए गए विवरण के अनुसार देय राशि और ब्याज की वसूली के लिए ले लिया गया है, और चूंकि देय राशि का भुगतान करने में विफल रहने के परिणामस्वरूप, उक्त अधिनियम की धारा 13(2) के तहत प्रदत्त शक्ति का प्रयोग करते हुए अधोहस्ताक्षरी उक्त संपत्ति/संपत्तियों की बिक्री द्वारा देय राशि की वसूली का प्रस्ताव करता है और इसे ''जैसा है जहां है'', ''जैसा है वैसा ही'' और ''जो कुछ भी है'' के आधार पर बेचा जाएगा, जैसा कि वर्णित है। इसके अंतर्गत, होम फर्स्ट फाइनेंस कंपनी इंडिया लिमिटेड को कॉलम (i) के अनुसार उधारकर्ता (ओं) और सह-उधारकर्ता (ओं) से देय राशि की वसूली के लिए नीलामी ''ऑनलाइन'' आयोजित की जाएगी।

क्र. सं.	ऋणधारक(ओं) एवं सह-ऋणधारक(ओं) के नाम	संपत्ति का पता	मांग सूचना की तिथि	मांग सूचना राशि	कब्जे की तिथि	आरक्षित मूल्य	ईएमडी राशि	नीलामी की तिथि और समय	ईएमडी और दस्तावेज़ जमा करने की अंतिम तिथि और समय	अधिकृत अधिकारी का नंबर
1.	नितेश कुमार यादव, कृष्णा यादव, पार्वती बाई यादव	प्लॉट-ख.नं. 102/7, ब्लॉक/बिल्डिंग नं. प.ह.नं. 37, नितेश-पी+सी, ख.नं. 102/7, मौजा छतौना, पिन नं. 495222, प.ह.नं. 37, रा.नि.मं. अमसेना, तह. सकरी, जिला बिलासपुर, बिलासपुर, छत्तीसगढ़-495001, चौहद्दी: पूर्व-विक्रेता का प्लॉट, पश्चिम-रोड, उत्तर-विक्रेता का प्लॉट, दक्षिण-विक्रेता का प्लॉट।	03-09-2026	9,92,095	04-11-2026	3,75,000	37,500	08-12-2026 (11am-6pm)	06-12-2026 (upto 5pm)	9022198002
2.	जय कुमार साहू, शकुंतला देवी साहू	प्लॉट- ख.नं. 457/1[भाग], ब्लॉक/भवन नंबर- प.ह.नं.13, ब्लॉक/भवन का नाम-मौजा चतरखार-जय पी+सी, मौजा चतरखार, मुंगेली, छत्तीसगढ़-495001, चौहद्दी: पूर्व-विक्रेता का प्लॉट, पश्चिम-विक्रेता का प्लॉट, उत्तर-विक्रेता का प्लॉट, उत्तर-विक्रेता का प्लॉट, दक्षिण-विक्रेता का प्लॉट।	03-09-2026	13,06,617	04-11-2026	1,65,000	16,500	08-12-2026 (11am-6pm)	06-12-2026 (upto 5pm)	9022198002
3.	मनीष विश्वहार, नंदरानी विश्वहार	प्लॉट-102/7 [भाग], ब्लॉक/भवन नंबर - प.ह.नं..37, ब्लॉक/भवन का नाम-मौजा छतौना, मनीष पी+सी, मौजा छतौना, प.ह.नं. 37, रा.नि.मं. सकरी, तहसील-सकरी, जिला. बिलासपुर, बिलासपुर, छत्तीसगढ़-495001, चौहद्दी: पूर्व - नहर, पश्चिम - निस्तारी रास्ता, उत्तर-विक्रेता का प्लॉट, दक्षिण-विक्रेता का प्लॉट।	03-09-2026	17,18,431	04-11-2026	3,33,900	33,390	08-12-2026 (11am-6pm)	06-12-2026 (upto 5pm)	9022198002
4.	सनत कुमार यादव, शैल बाई यादव	प्लॉट-ख.नं. 126/54, ब्लॉक/भवन नं.- प.ह.नं.30, ब्लॉक/भवन का नाम-मौजा पत्थरखान-सनत-पी+सी, ख.नं. 126/84, मौजा पत्थरखान, प.ह.नं. 30, रा.नि.मं. बिल्हा, विकासखंड व तहसील बिल्हा, जिला बिलासपुर, बिलासपुर, छत्तीसगढ़-495001, चौहद्दी: पूर्व-विक्रेता का प्लॉट, पश्चिम-निस्तारी रास्ता, उत्तर-विक्रेता का प्लॉट, दक्षिण-विक्रेता का प्लॉट।	03-09-2026	12,48,887	04-11-2026	78,000	7,800	08-12-2026 (11am-6pm)	06-12-2026 (upto 5pm)	9022198002
5.	सुरेश केवट, चंदा केवट	प्लॉट-126/7/क/5, ब्लॉक/भवन नंबर- प.ह.नं. 30, ब्लॉक/भवन का नाम-मौजा पत्थरखान सुरेश-पी+सी, ख.नं. 126/7/क/5, मौजा - पत्थरखान, प.ह.नं.30, रा.नि.मं.- बिल्हा, तह. बिल्हा, जिला-बिलासपुर (छ.ग.), बिलासपुर, छत्तीसगढ़-495001, चौहद्दी: पूर्व-विक्रेता की भूमि, पश्चिम-निस्तारी सड़क, उत्तर-निस्तारी सड़क, दक्षिण-विक्रेता की भूमि।	03-09-2026	10,33,760	04-11-2026	65,760	6,576	08-12-2026 (11am-6pm)	06-12-2026 (upto 5pm)	9022198002
6.	हेमन्त कुमार साहू, जागेश्वरी साहू, प्रियांशु साहू	प्लॉट- ख.नं. 250/13, ब्लॉक/भवन नंबर- प.ह.नं. 41, ब्लॉक/भवन का नाम-मौजा सैदा, हेमंत कुमार साहू, ख.नं.250/13, प.ह.नं. 41 रा.नि.मं. सकरी मौजा सैदा, तहसील सकरी एवं जिला बिलासपुर, बिलासपुर, छत्तीसगढ़-495001, चौहद्दी: पूर्व-सुरेश निर्मलकर की भूमि, पश्चिम-विक्रेता की भूमि, उत्तर-20 फीट निस्तारी सड़क, दक्षिण-बिमला बाई राजपूत की भूमि।	03-09-2026	7,71,391	04-11-2026	60,000	6,000	08-12-2026 (11am-6pm)	06-12-2026 (upto 5pm)	9022198002
7.	मोहन नामदेव, गंगा नामदेव	मकान-126/69, मौजा पत्थरखान, प.ह.नं. 30, रा.नि.मं. बिल्हा विकास खंड, तह.बिल्हा व जिला-बिलासपुर, बिलासपुर, छत्तीसगढ़-495001., चौहद्दी: पूर्व-निस्तारी रास्ता, पश्चिम-नगमा परवीन का प्लॉट, उत्तर-विक्रेता का प्लॉट, दक्षिण-अश्विनी त्रिलोक का प्लॉट।	03-08-2026	8,30,654	04-11-2026	57,240	5,724	08-12-2026 (11am-6pm)	06-12-2026 (upto 5pm)	9022198002
8.	मनीष कुमार बघेल, सरिता बघेल	प्लॉट- ख.नं. 365/2, मौजा मुढ़ीपार, प.ह.नं.09, रा.नि.मं. व तहसील बिल्हा, जिला बिलासपुर, बिलासपुर, छत्तीसगढ़-495001., चौहद्दी: पूर्व-विक्रेता की भूमि, पश्चिम-20 फीट निस्तारी रास्ता, उत्तर-विक्रेता की भूमि, दक्षिण-विक्रेता की भूमि।	03-08-2026	9,59,166	04-11-2026	50,000	5,000	08-12-2026 (11am-6pm)	06-12-2026 (upto 5pm)	9022198002

ई-नीलामी सेवा प्रदाता	ई-नीलामी वेबसाइट/विवरण और अन्य नियम एवं शर्तें	ईएमडी/अन्य राशि जमा करने हेतु खाता नंबर	शाखा का IFSC कोड	लाभार्थी का नाम
कंपनी का नाम : ई-प्रोक्योरमेंट टेक्नोलॉजीज लिमिटेड (ऑक्शन टाइगर) हेल्पलाइन नंबर : 079-35022160/149/182 संपर्क व्यक्ति: राम शर्मा - 8000023297 ईमेल आईडी : ramprasad@auctiontiger.net और support@auctiontiger.net	http://www.homefirstindia.com https://homefirst.auctiontiger.net	9117020005824- होम फर्स्ट फाइनेंस कंपनी इंडिया लिमिटेड - एक्सिस बैंक लिमिटेड, बैंगलोर-केटी	UTIB0000009	अधिकृत अधिकारी, होम फर्स्ट फाइनेंस कंपनी इंडिया लिमिटेड

बोली वृद्धि राशि 10,000/- रुपये है। यह बिक्री अधोहस्ताक्षरी द्वारा वेब पोर्टल (https://homefirst.auctiontiger.net) पर उपलब्ध कराए गए ई-नीलामी प्लेटफॉर्म के माध्यम से की जाएगी। ऑनलाइन ई-नीलामी बोली प्रपत्र, घोषणापत्र और ऑनलाइन नीलामी बिक्री के सामान्य नियम एवं शर्तें युक्त ई-नीलामी निविदा दस्तावेज पोर्टल साइट पर उपलब्ध हैं। अधिकृत अधिकारी के सर्वोत्तम ज्ञान और जानकारी के अनुसार, संपत्तियों पर कोई भार नहीं है। हालांकि, इच्छुक बोलीदाताओं को अपनी बोली जमा करने से पहले, संपत्ति पर भार, नीलामी के लिए रखी गई संपत्ति/संपत्तियों के स्वामित्व और संपत्ति को प्रभावित करने वाले दावों/अधिकारों/देयताओं के संबंध में स्वयं स्वतंत्र जांच कर लेनी चाहिए। ई-नीलामी विज्ञापन होम फर्स्ट की ओर से कोई प्रतिबद्धता या प्रतिनिधित्व नहीं है और न ही इसे ऐसा माना जाएगा। संपत्ति होम फर्स्ट को ज्ञात या अज्ञात सभी मौजूदा और भविष्य के भारों के साथ बेची जा रही है। अधिकृत अधिकारी/सुरक्षित लेनदार किसी भी तृतीय-पक्ष के दावों/अधिकारों/देयताओं के लिए किसी भी तरह से जिम्मेदार नहीं होंगे। यह बिक्री प्रतिभूतिकरण एवं वित्तीय परिसंपत्तियों के पुनर्निर्माण एवं सुरक्षा हित प्रवर्तन अधिनियम, 2002 के अंतर्गत निर्धारित नियमों/शर्तों के अधीन होगी।

किसी भी विसंगति की स्थिति में, सूचना का अंग्रेजी संस्करण प्रामाणिक माना जाएगा।

सरफेसी अधिनियम, 2002 के अंतर्गत वैधानिक 30 दिन की बिक्री सूचना

ऋणधारक/जमानतदारों को सूचित किया जाता है कि वे मांग नोटिस में उल्लिखित राशि का भुगतान, अद्यतन ब्याज और अन्य संबंधित खर्चों सहित, ई-नीलामी की तिथि से पहले कर दें। ऐसा न करने पर संपत्ति की नीलामी/बिक्री कर दी जाएगी और यदि कोई बकाया राशि हो तो उसे ब्याज और लागत सहित वसूल किया जाएगा।

दिनांक : 08-11-2026 स्थान : बिलासपुर

हस्ताक्षरकर्ता /- अधिकृत अधिकारी, होम फर्स्ट फाइनेंस कंपनी इंडिया लिमिटेड

MARUTI SUZUKI

NEXA

THIS DIWALI,
BRING HOME YOUR e VITARA.

Limited Period Offers Await.



NOW WITH FREE HOME CHARGER

e VITARA
India goes electric

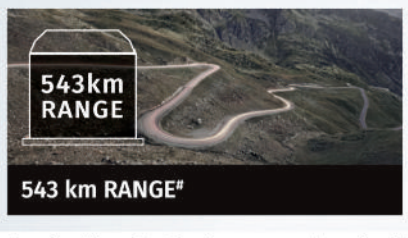

BaaS price
₹10.99 LAKH**
Battery EMI @ ₹3.99/km

₹80 000*
WORTH OF BENEFITS
₹30 000 Exchange Bonus
+ Free Home Charger Worth ₹50 000

NEXA edge
60% ASSURED BUYBACK AFTER 3 YEARS
8 YEARS WARRANTY
• BATTERY: 8 YEARS
• VEHICLE: 3+5(PAID) YEARS

SCAN TO CONNECT TO A SHOWROOM NEAR YOU

E-BOOK TODAY @ WWW.NEXAEXPERIENCE.COM

Creative Visualisation. Images used are for illustration purposes only. Applicable T&C available at the nearest dealership. #543 km range: Certified range; actual results may vary by driving conditions and usage. Assured buyback plan is available on payment basis with the option of 3 years/45 000 km or 4 years/60 000 km ownership plans (whichever is earlier). The program is offered through an insurance company. e VITARA comes with standard warranty of 3 years or 1 00 000 km (whichever is earlier) with an option of extending the same on payment basis to 5 years or 1 40 000 km (whichever is earlier), and service activated coverage for 6th to 8th year for EV related components. *Offers and their related terms may vary, are subject to availability of stock, and are valid for a limited period. Maruti Suzuki reserves the right to modify, withdraw or discontinue any offer at any time without prior notice. **₹10.99 lakh (ex-showroom) price for e VITARA Delta. Battery EMI: ₹3.99/km (subject to applicable financier terms). Taxes and other applicable statutory charges are extra.

हरिभूमि कम्यूनिकेशन्स प्राईवेट लिमिटेड के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक प्रियंक सिंह परिहार द्वारा हरिभूमि पब्लिकेशन्स, रिंग रोड नं. 2, गौरवपथ, बिलासपुर (छत्तीसगढ़)-495001 से मुद्रित एवं हरिभूमि कार्यालय, रिंग रोड नं. 2, गौरव पथ, बिलासपुर (छत्तीसगढ़)-495001 से प्रकाशित। प्रधान संपादक : डॉ. हिमांशु द्विवेदी, : RNI No. CHHHIN/2001/03764, फोन : 07752-401050, फैक्स : 07752-401052. e-mail :